महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर MAHAYOGI GORAKHNATH UNIVERSITY GORAKHPUR स्वस्ति पन्थामनुचरेम् 2021

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

वर्ष-4, अंक-01 जनवरी, 2025

महाकुंभ 2025

एक विराट सांस्कृतिक उत्सव

महाकुम्भ एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध हिंदू धार्मिक उत्सव है, जो हर 12 वर्ष में प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित होता है। यह एक धार्मिक मेला है जिसमें करोड़ों श्रद्धालु गंगा, यमुना, और सरस्वती नदियों के संगम (प्रयागराज) या अन्य पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए आते हैं। इसे विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक माना जाता है। महाकुम्भ का महत्व मुख्य रूप से पवित्र स्नान, धार्मिक अनुष्ठान, योग, साधना, भजन-कीर्तन और वेद पाठ के साथ जुड़ा हुआ है। इसमें भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया भर से लोग आकर धार्मिक क्रियाओं में भाग लेते हैं। यह अवसर एकता, शांति और आत्मिक उन्नति की भावना को प्रोत्साहित करता है। कुम्भ मेले के दौरान, विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। यह न केवल एक धार्मिक घटना है, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का भी जीवंत उत्सव है। कुंभ शब्द का उल्लेख विभिन्न सनातन धर्म के ग्रंथों और पुराणों में विभिन्न संदर्भों में होता है, जैसे जलपात्र, धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किए जाने वाले घड़े, योगिक क्रियाओं में श्वसन अभ्यास और पवित्र स्नान स्थलों के संदर्भ में वैसे ही यह जीवन, ज्ञान और आध्यात्मिकता का प्रतीक माना गया है। कुंभ शब्द वैदिक साहित्य, उपनिषदों, पुराणों और महाकाव्यों में गहन अर्थों के साथ प्रयुक्त हुआ है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ अमृत और ज्ञान का भंडार भी होता है। यथा ऋग्वेद : 'कुम्भं समारुह्य सुधां पिबेम'' (ऋग्वेद 1.28. 4)। अर्थ : 'हम उस कुंभ (घड़े) में रखे अमृत को पीकर आत्मा को आनंदित करें।' यहाँ कुंभ का अर्थ अमृत से भरे घड़े से है, जो जीवन के अमरत्व का प्रतीक है। अथर्ववेद : 'एषा गंगा या कुंभेषु (अथर्ववेद 19.53.3)। अर्थः 'यह गंगा का जल कुंभ (घड़े) में संचित है।' इसमें कुंभ को एक पात्र के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें पवित्र गंगा जल रखा गया है। महाभारत : 'कुम्भयोनि'। महाभारत में कुम्भयोनि शब्द का प्रयोग ऋषि अगस्त्य के लिए किया गया है, क्योंकि उनकी उत्पत्ति कुंभ (घड़े) से हुई थी। यह उनका एक विशेषण बन गया। भागवत पुराणः 'कुंभ मेले स्नात्वा पुण्यं प्राप्नोति मानुषः'। यहाँ कुंभ का संदर्भकुंभ मेले से है, जो चार तीर्थ स्थलों पर आयोजित होता है और इसमें स्नान करने से पापों का क्षय होता है। योग और आयुर्वेद में 'कुंभक' शब्द का प्रयोग प्राणायाम में होता है, जिसका अर्थ है श्वास को रोकना। 'पूरकं रेचकं कुंभकं च'। इसमें कुंभक का अर्थ है श्वास को भीतर रोककर रखना, जो योगिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण है। महाकुंभ का इतिहास पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में विस्तार से वर्णित है। इसका उल्लेख 'समुद्र मंथन' की पौराणिक कथा में मिलता है, जिसमें अमृत कुंभ (कलश) की प्राप्ति के लिए देवता और असुरों ने संघर्ष किया था। मान्यता है कि अमृत कलश से अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी पर चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरी थीं। यही कारण है कि इन स्थानों पर महाकुंभ का आयोजन होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी महाकुंभ के आयोजन का संदर्भ हजारों वर्षों से मिलता है, जहाँ संत और विद्वानों के बीच धार्मिक, दार्शनिक और सामाजिक संवाद का आदान-प्रदान होता रहा है। महाकुंभ धार्मिक अनुष्ठानों और ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर शुरू हुआ। कुंभ की शुरूआत का प्रामाणिक विवरण गुप्त वंश (चौथी छठी शताब्दी) के समय से मिलता है। कहा जाता है कि हर्षवर्धन (7वीं शताब्दी) ने प्रयागराज में कुंभ को व्यवस्थित रूप दिया। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपनी यात्रा में कुंभ का उल्लेख किया है। महाकुंभ धार्मिक अनुष्ठानों और परंपराओं का एक महापर्व है। अखाड़ों के साधु-संतों की शोभायात्रा, धार्मिक प्रवचन, यज्ञ, ध्यान और साधना आदि इस आयोजन के महत्वपूर्ण अंग हैं। कुम्भ के समय विभिन्न संत समाज और संप्रदाय यहाँ एकत्र होते हैं और अपने आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करते हैं। इस दौरान होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक आयोजन, लोकगीत और नृत्य इसे एक उत्सवमय स्वरूप प्रदान करते हैं।

महाकुंभ को न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना गया है। यह आस्था, संस्कृति और आध्यात्मिकता के संगम का प्रतीक है, जो न केवल भारत के लिए बल्कि समस्त विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह सामाजिक एकता, सांप्रदायिक सौहार्द्र और आध्यात्मिक उत्थान का प्रतीक भी है। महाकुम्भ में लाखों लोग एक ही उद्देश्य से एकत्र होकर मानवता की भावना को मजबूत करते हैं, यह आयोजन समाज में भाईचारे, सहिष्णुता और धार्मिकता की भावना को बढ़ाने के साथ ही भारत की जीवंत सांस्कृतिक धरोहर का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रकाशक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

माह विशेष

गणतंत्र दिवस : स्वर्णिम भारत की विरासत और विकास यात्रा

गणतंत्र दिवस 2025 की थीम स्वर्णिम भारत-विरासत और विकास है जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आधुनिक प्रगति को एक साथ जोड़ती है। यह विषय 75 वर्षों की यात्रा को दर्शाते हुए, भविष्य की दिशा में एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस विषय के अंतर्गत, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और स्वच्छ भारत जैसे अभियानों को भी गणतंत्र दिवस परेड में शामिल किया गया। यह युवा पीढ़ी को प्रेरित करने का भी एक प्रयास है, ताकि वे अपने देश की विरासत को समझें और उसके विकास में योगदान दें। स्वर्णिम भारत-विरासत और विकास का यह विषय न केवल भारत की ऐतिहासिक गाथा को दर्शाता है, बल्कि यह भविष्य की संभावनाओं को भी उजागर करेगा। यह एक ऐसा मंच था जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संगम देखने को मिला वहीं भारत की विविधता और एकता को भी दर्शाया। यह कहा जा सकता है कि किसी राष्ट्र के इतिहास में 75 साल का समय, पलक झपकने जैसा होता है। लेकिन मेरे विचार से, भारत के पिछले 75 वर्षों के संदर्भ में, ऐसा बिलकुल नहीं कहा जा सकता है। यह वह कालखंड है जिसमें, लंबे समय से सोई हुई भारत की आत्मा फिर से जागी है और हमारा देश विश्व-समुदाय में अपना समुचित स्थान प्राप्त करने के लिए अग्रसर हुआ है। आज के दिन, सबसे पहले, हम उन शूर-वीरों को याद करते हैं जिन्होंने मातृभूमि को विदेशी शासन की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानियां दीं। उनमें से कुछ स्वाधीनता सेनानियों के बारे में लोग जानते हैं, लेकिन बहुतों के बारे में उन्हें जानकारी नहीं थी। इस वर्ष, हम भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मना रहे हैं। वे ऐसे अग्रणी स्वाधीनता सेनानियों में शामिल हैं जिनकी भूमिका को राष्ट्रीय इतिहास के संदर्भ में अब समुचित महत्व दिया जा रहा है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहां जनता को अपने नेता चुनने का अधिकार प्राप्त है। भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ और इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। यह दिन भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान की सर्वोच्चता का प्रतीक है। संविधान लागू होने के बाद के ये 75 वर्ष हमारे युवा गणतंत्र की सर्वांगीण प्रगति के साक्षी हैं। स्वाधीनता के समय और उसके बाद भी देश के बड़े हिस्से में घोर गरीबी और भुखमरी की स्थिति बनी हुई थी। लेकिन, हमारा आत्म-विश्वास कभी डिगा नहीं। हमने ऐसी परिस्थितियों के निर्माण का संकल्प लिया जिनमें सभी को विकास करने का अवसर मिल सके। हमारे किसान भाई-बहनों ने कड़ी मेहनत की और हमारे देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। भारतियों ने अथक परिश्रम करके हमारे इंस्फ्रास्टैक्चर एवं मेनुफेकचरिंग सेक्टर का कायाकल्प कर दिया। उनके शानदार प्रदर्शन के बल पर आज भारतीय अर्थ-व्यवस्था विश्व के आर्थिक परिदृश्य को प्रभावित कर रही है। आज का भारत, अंतर-राष्ट्रीय मंचों पर नेतृत्व की स्थिति हासिल कर रहा है। संविधान में निर्धारित रूपरेखा के बिना यह व्यापक परिवर्तन संभव नहीं हो सकता था। हाल के वर्षों में, आर्थिक विकास की दर लगातार ऊंची रही है, जिससे हमारे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं, किसानों और मजदूरों के हाथों में अधिक पैसा आया है तथा बड़ी संख्या में लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया है। पिछले एक दशक में सड़कों और रेल मार्गों, बंदरगाहों और लॉजिस्टिक हब सहित फिजिकल इंफ्रास्टैक्चर के विकास पर बल दिया गया है। इससे एक ऐसा मजबूत आधार विकसित हो गया है जो आने वाले दशकों में विकास को संबल प्रदान करेगा। बापू ने कहा था।

यदि स्वराज्य का अभिप्राय हमें सभ्य बनाना और हमारी सभ्यता को शुद्ध और स्थायी बनाना नहीं है, तो इसकी कोई कीमत नहीं है। हमारी सभ्यता का सार यह है कि अपने सभी मामलों में, चाहे वे राजनीतिक हों या निजी, नैतिकता को सर्वोत्तम स्थान दिया जाए। गणतंत्र दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि यह हमें हमारी आजादी, मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों की याद दिलाता है। यह हमें संविधान के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का बोध कराता है और देश की एकता, अखंडता और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

हमारी विरासत

महर्षि जैमिनी

आचार्य जैमिनी महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास के शिष्य थे। सामवेद और महाभारत की शिक्षा जैमिनी ने वेदव्यास से ही पायी थी। ये ही प्रसिद्ध पूर्व मीमांसा दर्शन के रचयिता हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने भारतसंहिता की भी रचना की थी। जैमिनि मीमांसा सूत्र के रचयिता हैं। भागवत पुराण में वर्णन मिलता है कि जैमिनि ने व्यास से सामवेद का अध्ययन किया था तथा अपने शिष्य सुमन्तु को सामवेद पढ़ाया था। जैमिनि द्वारा रचित मीमांसा सूत्र बारह अध्यायों में विभक्त है। ये बारह अध्याय बारह विषयों पर आधारित हैं। इसीलिए इसे 'द्वादश लक्षणी' भी कहा जाता है। यह भी एक मान्यता है कि उक्त बारह अध्यायों के अतिरिक्त चार अन्य अध्यायों की भी रचना जैमिनि ने की थी, जिन्हें संकर्षण काण्ड या देवता काण्ड के नाम से जाना जाता है। जैमिनि के सूत्रों का मुख्य प्रतिपाद्य धर्म के स्वरूप की खोज, मानव के कर्तव्य और अकर्तव्य का विवेचन तथा इनसे साक्षात् या परम्परया सम्बन्ध रखने वाले अन्य विषय हैं। धर्म की परिभाषा देते हुए जैमिनि ने कहा है कि धर्म वे अर्थ या कर्म हैं, जिनको करने के लिए वेदों ने आदेश दिया है तथा जिनके करने से अभिप्रेत फल की प्राप्ति होती है। इस प्रसंग में यह भली-भांति समझ लेना चाहिए कि मीमांसा में धर्म शब्द का प्रयोग न तो किसी सम्प्रदाय के अर्थ में हुआ है, न पुण्य-पाप के अर्थ में, जो साधारणतया धर्म शब्द समझे जाते हैं। यहाँ धर्म शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में वेद प्रतिपादित कर्तव्यों के लिए किया गया है। वेद के द्वारा आदिष्ट कर्म ही कर्म है। जैमिनि के दर्शन में यह प्रश्न उठाया गया है कि यज्ञ आदि कर्मक्रिया रूप है, जो अपनी पूर्णता के साथ समाप्त हो जाते हैं और अपनी समाप्ति के तुरन्त बाद उन फलों को नहीं देते, जिनके लिए इनका विधान किया गया है। उदाहरण के लिए कहा जा सकता है कि जब कोई स्वर्ग की प्राप्ति की इच्छा से यज्ञ करता है, तब यज्ञ की समाप्ति के साथ ही उसे स्वर्ग नहीं मिल जाता। अतः मृत्यु के बाद प्राप्त होने वाले स्वर्ग का कारण वह नहीं हो सकता, क्योंकि कारण को कार्य की उत्पत्ति के तुरन्त पूर्व में रहना चाहिए। इस प्रकार की समस्या के समाधान के लिए जैमिनि ने अपूर्व माना है। प्रत्येक कर्म अपनी समाप्ति के साथ-साथ एक अपूर्व उत्पन्न करता है और यह अपूर्व अपने फल देने तक रहता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अपूर्व कर्म तथा फल के बीच की अवस्था का नाम है। अपूर्व की यह मान्यता मीमांसा दर्शन की एक मौलिक विशेषता है। इसलिए कर्म के स्वरूप निर्धारण तथा कर्म का वर्गीकरण जैमिनि के दर्शन का मुख्य विषय हैं। सर्वप्रथम कर्म के दो भेद किए जाते हैं। लौकिक कर्म जो कर्म लोक के आदेश से किए जाते हैं, वे लौकिक कर्म हैं। वैदिक कर्म जो कर्म वेद के आदेश से किए जाते हैं, वे वैदिक कर्म हैं। इन्हीं वैदिक कर्मों को धार्मिक कर्म कहा जाता है। यज्ञकर्म करने वाला यजमान कहलाता है। जो अर्थवाद वचनों में निर्दिष्ट फल की आकांक्षा रखता हो, मानव हो तथा यज्ञ करने के लिए आवश्यक सामग्री का संग्रह करने में समर्थ हो एवं शारीरिक दृष्टि से उस कार्य के सम्पादन की क्षमता रखता हो, वह यजमान हो सकता है। यज्ञों के अन्तिम फल के रूप में स्वर्ग का विधान है और जहाँ यज्ञों के फल का निर्देश नहीं है, वहाँ यह मान लेने को कहा गया है कि उनका फल स्वर्ग है। अतः यह प्रश्न विचारणीय हो जाता है कि स्वर्ग क्या है। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन के पश्चात् यह निर्धारित किया गया है कि स्वर्ग एक गुण है, जो सुख या आनन्द के रूप में उपलब्ध होता है। जहाँ कहीं वस्तुओं या पदार्थों को स्वर्ग कहा गया है, उसका तात्पर्य केवल यही है कि वे पदार्थ आनन्द उत्पादक हैं।

प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

उपलब्धि

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

माननीय योगी आदित्यनाथ जी महाराज से भारतीय संविधान की मूल प्रति प्राप्त करते हुए माननीय कुलपति एवं कुलसचिव

दिनांकः 02 जनवरी, 2025। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को गोरखनाथ विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी को भारतीय संविधान की मूल प्रति भेंट की। गोरखनाथ मंदिर के आवासीय परिसर के हाल में उन्होंने अपने हाथों से यह प्रति गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिन्दर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव को सौंपी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव ने बताया कि भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखा जाएगा। गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पास हजारों विश्वस्तरीय पुस्तकों से युक्त अत्यंत समृद्ध लाइब्रेरी है।

गोरखनाथ विश्वविद्यालय एलोपैथी, नर्सिंग और आयुर्वेद की उत्कृष्ट शिक्षा देने के साथ ही विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र के सरोकारों से भी जोड़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय ने पिछले साल लोकसभा चुनाव से पहले 18 वर्ष के हो चुके युवाओं को मतदाता बनाने का विशेष अभियान चलाया था। इसके तहत विश्वविद्यालय के सभी छात्र–छात्राओं ने मतदाता के रूप में स्वयं को पंजीकृत कराया और चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग भी किया।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद से संचालित गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में पिछले साल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की भी पढ़ाई हो रही है। पिछले साल ही मेडिकल कौंसिल ऑफ इंडिया ने गोरखनाथ विश्वविद्यायल को एमबीबीएस की सौ सीटें की मान्यता दी है। पिछले साल के अंतिम महीने यानी दिसम्बर 2024 में गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज ने एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर से साझेदारी के आधार पर लाइव आइसीयू सेवाएं प्रदान करने का समझौता किया है।

28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कई अन्य स्थानीय राजनेताओं की मौजूदगी में गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। तबसे यह विश्वविद्यालय निरंतर अभिनव प्रयोगों और राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए वैश्विक मानकों पर नित्य नई उपलब्धियां अर्जित कर रहा है।

गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों भारतीय संविधान की मूल प्रति प्राप्त करने के समय महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य राम जन्म सिंह, दिग्विजयनाथ डिग्री कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. शैलेंद्र प्रताप सिंह सहित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारी उपस्थित रहें।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

'छात्र पुलिस अनुभवात्मक अधिगम कार्यक्रम' महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

मुख्य अतिथि श्री गौरव त्रिपाठी जी को स्मृति चिन्ह् भेंट करते हुए माननीय कुलपति एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री गौरव त्रिपाठी

दिनांकः 02 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आज 'छात्र पुलिस अनुभवात्मक अधिगम कार्यक्रम' का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम छात्रों को पुलिस विभाग के कार्यप्रणाली से अवगत कराने तथा उनके बीच पुलिस के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। समारोह की अध्यक्षता महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने की।

मुख्य अतिथि श्री गौरव त्रिपाठी क्षेत्राधिकारी कैम्पियरगंज जनपद गोरखपुर, उत्तर प्रदेश पुलिस विशिष्ट अतिथि डॉ. जीएन सिंह पूर्व औषधि महानियंत्रक भारत सरकार, श्री अतुल श्रीवास्तव, एसएचओ, चिलुवाताल जनपद गोरखपुर उपस्थित रहें।

समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इसके बाद अतिथियों का स्वागत किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना का गीत भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि यह कार्यक्रम छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। छात्रों को पुलिस विभाग के कार्यप्रणाली को समझने का मौका मिलेगा और वे पुलिस के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे और समाज को एक नयी दिशा देने में सहयोग करेंगे। निश्चित ही विद्यार्थियों को जोड़कर पुलिस विभाग के कार्यो का प्रशिक्षण प्राप्त कर समाज को जागरूक करेंगे। क्षेत्राधिकारी श्री गौरव त्रिपाठी ने कहा कि पुलिस विभाग छात्रों के लिए हमेशा सहयोगी रहा है। उन्होंने कहा कि छात्रों को पुलिस के प्रति कोई भ्रांति नहीं रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग छात्रों के लिए हमेशा मददगार साबित होगा। वहीं विशिष्ठ अतिथि डॉ. जीएन सिंह ने कहा की उत्तर प्रदेश की जनता निश्चल भाव के है।

साइबर क्राइम तेजी से समाज में अपनी जड़ें जमा रहा है। सजग और सतर्क रहकर साइबर अपराधों से बचाने में युवा वर्ग महती भूमिका निभा सकता हैं। युवाओं को सजग प्रहरी की तरह समाज के प्रति समर्पित रहना होगा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय शिक्षा के साथ विद्यार्थी को सामाजिक दायित्व को समझाने एवं उसका पालन करने के लिए सिखा रहा है।

कार्यक्रम की रुपरेखा और सभी अतिथि का स्वागत राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश दुबे ने कहा कि कार्यक्रम में पुलिस की कार्यवाही को सीखकर विद्यार्थी अपना सवेगात्मक विकास करेंगे।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम अधिकारी श्री साध्वीनन्दन पाण्डेय ने किया इस अवसर पर डॉ. शशिकांत सिंह प्राचार्य फार्मेसी संकाय, डॉ. विमल दुबे अधिष्ठाता कृषि संकाय, लेफ्टिनेंट डॉ. संदीप श्रीवास्तव, श्री आंनद मिश्र, रवि कुमार, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. आयुष पाठक, श्री धनन्जय पाण्डेय कविता साहनी, सुमन यादव, गरिमा पाण्डेय के साथ समस्त विद्यार्थी अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहें।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

मिशन शक्ति चरण-5

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को संबोधित करती डॉ. प्रेरणा अदिति

दिनांकः 03 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में मिशन शक्ति चरण–5 के अंतर्गत चल रहे कार्यक्रम को संचालित करते हुए आज दिनांक 03 जनवरी 2025 को संबद्ध विज्ञान संकाय में सहायक प्राध्यापक पद पर कार्यरत डॉक्टर प्रेरणा अदिति ने 'सेक्सुअल हैरेसमेंट प्रिवेंशनः अकॉर्डिंग टू सुप्रीम कोर्ट विशाखा गाइडलाइन' विषय पर व्याख्यान दिया।

उन्होंने सेक्सुअल हैरेसमेंट को परिभाषित करते हुए अपने इस व्याख्यान को आरंभ किया। कामकाजी महिलाएं के साथ कार्य स्थल पर होने वाले अभद्र व्यवहार, यौन अपराध, धमकाना, अश्लील टिप्पणी, गंदे इशारे, उत्पीड़न और प्रताड़ना को सेक्सुअल हैरेसमेंट कहा जाता है। इस मामले में कामकाजी महिलाओं को यौन अपराध, उत्पीड़न और प्रताड़ना से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने साल 2013 में विशाखा दिशा निर्देश को जारी किया था। हालांकि आज भी कई महिलाएं इस गाइडलाइंस से अनजान है और इसकी वजह से इसका लाभ नहीं उठा पाती है।

विशाखा गाइडलाइन के तहत महिलाएं तुरंत शिकायत दर्ज करवा सकती हैं। इस गाइडलाइन को विशाखा और अन्य बनाम राजस्थान और भारत सरकार मामले के तौर पर भी जाना जाता है।

राजस्थान के जयपुर में भंवरी देवी राज्य सरकार की महिला विकास कार्यक्रम के तहत कार्य करती थी जो इस पूरी गाइडलाइंस की केंद्र बिंदु है। 1992 में उनके साथ हुए दुष्कर्म के खिलाफ न्याय दिलाने के लिए कुछ गैर सरकारी संस्थाओं ने साथ मिलकर कर 1997 में विशाखा नाम से सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की। इस याचिका के तहत सुप्रीम कोर्ट ने यौन उत्पीड़न को परिभाषित करते हुए दिशा–निर्देश जारी किया जिसे विशाखा गाइडलाइन के नाम से जाना जाता है। साल 2012 में वर्कप्लेस बिल लाया गया जिसमें लिंग समानता, जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को लेकर बड़े कानून बनाए गए।

साल 2013 में सेक्सुअल हैरेसमेंट आफ वूमेन एट वर्कप्लेस एक्ट 2013 कानून पारित हुआ जिसे प्रिवेंशनए प्रोविजन और रिड्रेसल एक्ट भी कहा जाता है।

इस गाइडलाइन के अनुसार 10 या 10 से अधिक कर्मचारी वाली कंपनी में इंटरनल कंपलेक्स कमेटी बनाना अनिवार्य है एवं कमेटी की अध्यक्षता महिला करेंगी तथा आधे से ज्यादा सदस्य महिला होगी जिसमें से एक सदस्य यौन शोषण एनजीओ में कार्यरत महिला होंगी। यौन उत्पीड़न के मामले में कोई दोषी पाया जाए तो उस पर आईपीसी की धाराएं के तहत कार्यवाही होगी। संस्थान किसी भी महिला पर कोई दबाव नहीं बना सकता चाहे वह उत्पीड़ित महिला हो या कमेटी की कोई अन्य सदस्य। अगर कोई महिला कमेटी के फैसले से संतुष्ट नहीं है तो पुलिस में शिकायत दर्ज कर सकती हैं इत्यादि।

इस कार्यक्रम के दौरान डॉ.सुनील कुमार, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दुबे, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवैद्यनाथ, डॉ. किरण, डॉ. कीर्ति, रश्मि झा, सृष्टि यदुवंशी, प्रज्ञा पांडे, आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय आदि मौजूद थे।

मिशन शक्ति चरण- 5 : व्याख्यान

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य कर्नल (रि.) डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा

दिनांक: 07 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में मिशन शक्ति योजना के पांचवे चरण द्वारा आयोजित व्याख्यान विषय सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका विषय पर व्याख्यान देते हुए प्राचार्य कर्नल (रि.) डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर ने कहा कि भारतीय सेना में महिलाओं की भर्ती भारत सरकार की सकारात्मक पहल रहा है। महिलाओं में रचनात्मक सृजन और नवाचार, निर्णय लेने और परिणाम के प्रति समर्पण भाव अर्पण किया है। देश में महिलाओं ने सेना क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करके समाज के लिए रोल मॉडल और प्रेरणा दिया है। वर्तमान आंकड़ों में भारतीय सेना, वायु और नौ सेना में कुल नौ हजार चौरासी महिला कार्मिक सेवारत है। जो अपने अदम्य साहस और कर्तव्य निष्ठा से रक्षा क्षेत्र में स्वर्णिम इतिहास लिख रही है।

शिव और शक्ति के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती है। महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा प्रकृति के रूप में श्रेष्ठ है। लक्ष्मीबाई से कैप्टन लक्ष्मी सहगल की परंपरा में नारी ने युद्ध के मैदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, चंद्रयान के लैंडिंग स्थल भी शिवशक्ति थी। महिलाएं कभी भी नकारात्मक या हीन भावना से ग्रसित न हो, चूल्हे से लेकर सशस्त्र सेवा में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

व्याख्यान विषय पर एन.सी.सी. अधिकारी लेफ्टिनेंट (डॉ.) संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि रक्षा क्षेत्र में महिलाओं के लिए अनंत स्वर्णिम द्वार खुले हुए हैं। आत्मस्वयं शक्ति, कुशल नेतृत्व और देश सेवा का संकल्प रक्षा क्षेत्र का मूल है। महिलाओं ने घर की चार दिवारी को लांघ कर अब रक्षा क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर देश सेवा में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

सैन्य सेवा में रोजगार की संभावना पर प्रोत्साहित करते हुए डॉ. संदीप श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में महिलाओं की भूमिका एक समय तक सीमित थी, लेकिन पिछले कुछ दशकों में महिलाओं के लिए विभिन्न सैन्य सेवाओं में प्रवेश के अवसर बढ़े हैं। आज, महिलाएं भारतीय सैन्य बलों में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं और उनकी भूमिका न केवल युद्धक गतिविधियों तक सीमित है, बल्कि वे रणनीतिक निर्णय लेने में भी शामिल हैं। भारतीय सेना में पहले महिलाओं की नियुक्त चिकित्सा सेवाएं प्रशासनिक और सहायक कार्यों में होती थी। भारत सरकार ने महिलाओं को स्थायी कमीशन देकर अनंत स्वर्णिम अवसरों के द्वार खोल दिया है। आज भारतीय सेना में महिलाएं न केवल प्रशासनिक कार्यों में बल्कि युद्धक भूमिकाओं में भी कार्यरत हैं। भारतीय सेना में महिलाएं अब सेना, वायुसेना और नौसेना के अलावा भी विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। महिलाएं अब भारतीय सेना के प्रमुख अभियानों, युद्धों और संकटों में भी भाग ले रही हैं। सैन्य सेवाओं से महिलाओं को न केवल एक पेशेवर वातावरण देकर आत्मनिर्भर बनने के लिए भी प्रेरित करता हैं। भारतीय सेना में प्रतिष्ठित महिला अधिकारियों और सैनिकों ने सैन्य अभियानों में सम्मिलित होकर अपने शौर्य, अदम्य साहस से देश को गौरांवित किया है। रक्षा क्षेत्र में मेडिकल विंग्स, लॉ, प्रशासनिक, इंजीनियरिंग, आर्म्स और सर्विसेज, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, वायु सेना में लड़ाकू पायलट, नेवी पायलट के लिए स्वयं को तैयार कर सकती हैं।

कार्यक्रम का संचालन अंडर आफिसर अंशिका सिंह ने किया। व्याख्यान में प्रमुख रूप से अंडर आफिसर अंशिका सिंह, कैडेट आशुतोष मणि त्रिपाठी और अस्मिता सिंह ने सशस्त्र सेना में महिलाओं की भूमिका पर सभी को जागरूक किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से फार्मेशी संकाय के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, सहायक आचार्य डॉ. अभिषेक सिंह, श्रीमती जूही तिवारी सहित राष्ट्रीय सेवा योजना के माता शबरी इकाई के स्वयं सेवकों सहित राष्ट्रीय कैडेट कोर के कॉरपोरल अभिषेक चौरसिया, खुशी यादव, शालनी चौहान, संजना शर्मा, अमृता कन्नौजिया, अनुभव पांडेय, नीलेश यादव, अभिषेक मिश्रा, शिखर पाण्डेय, उजाला सिंह, पार्वती साहनी, अनुराधा विश्वकर्मा सहित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के सभी शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहें।

एआई एवं मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च इन फार्मेसी : बैठक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर

बैठक में उपस्थित निदेशक, प्राचार्य एवं प्राध्यापकगण

दिनांकः 09 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय और महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर एआई के बीच एक बैठक हुई जिसमें एआई ऐंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च इन फार्मेसी पर सहभागिता में शोध कार्य करने का प्रस्ताव हुआ है।

इस सहभागिता से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर्स को एक नया प्लेटफॉर्म मिला है जिससे उनके शोधकार्य को भविष्य में एक विशेष महत्व मिलेगा। इस सहभागिता के शुरूआत में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर श्री पीयूष आनन्द, श्री दिलीप मिश्रा, सुश्री श्रेया मद्धेशिया और बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के श्री अंकित पाण्डेय, श्री करुणाकर प्रसाद द्विवेदी, सुश्री अंकिता मालवीय और श्रीमती श्वेता यादव एवं औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह जी के साथ महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में इस विशेष बैठक में सम्मिलित हुए।

इस बैठक का आयोजन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह जी के द्वारा किया गया जो की महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के डॉयरेक्टर डॉ. सुधीर अग्रवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस बैठक में महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की डॉ. तृप्ति त्रिपाठी जी ने एआई ऐंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च पर एक प्रेजेंटेशन देते हुए इसके विभिन्न प्रारूप व अवसरों पर प्रकाश डाला जिससे महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के पीएचडी रिसर्च स्कॉलर एआई ऐंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च के तथ्यों से लाभान्वित हुए।

बैठक के बाद औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पूर्व सूचना

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर

दिनांकः 10 जनवरी, 2025। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतर्संबंधों को समझने के लिए गोरखपुर में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयोजित हो रही इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को और समापन 14 जनवरी को होगा। खास बात यह भी कि कई देशों के डेलीगेट्स की सहभागिता वाली अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि (आयुर्वेद–योग–नाथपंथ) विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का पंचकर्म ऑडिटोरियम में पूर्वाह्न

11:30 बजे से होगा।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी. एन. सिंह करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डॉ. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे।

संगोष्ठी का समापन समारोह 14 जनवरी को अपराह्न 2 बजे से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डॉ. वी.एन. जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी होंगे।

डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि दिन तीन की इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश और दुनिया से आए डेलीगेट्स, आयुर्वेद कॉलेज के विद्यार्थियों को दूसरे दिन 13 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे। संगोष्ठी में कुल पांच वैज्ञानिक सत्र भी आयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों में देश और दुनिया के विद्वान आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा करते हुए आरोग्यता के विविध आयामों पर विशद मंथन करेंगे।

अलग–अलग वैज्ञानिक सत्रों में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों के अलावा बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल के निदेशक एवं प्रख्यात कैंसर सर्जन डॉ. संजय माहेश्वरी, इंटरनेशनल राइस रिसर्च सेंटर (ईरी) के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, एम्स भोपाल के निदेशक और एम्स गोरखपुर के कार्यकारी निदेशक डॉ. अजय सिंह, यू.एस. ए. में 'आपना' संस्था के अध्यक्ष डॉ. शेखर ए., विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. तोमर, बीएचयू वाराणसी के प्रो. बी. एम. सिंह, एम्स गोरखपुर के डॉ. चेतन साहनी, आईआईटी दिल्ली के प्रो. के.के. दीपक, बीएचयू के डॉ. अमित कुमार नायक, आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज मैंगलोर के डॉ. प्रह्लाद डी.एस., बीएचयू वाराणसी के प्रो. के.के. पांडेय, ऐमिल के निदेशक डॉ. संचित शर्मा, बीएचयू वाराणसी की प्रो. नम्रता जोशी, मंदसौर वि.वविद्यालय मध्य प्रदेश के एम.ए. नायडू एवं इसी विश्वविद्यालय के प्रो. सुनील कुमार पांडेय, गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. हिमांशु दीक्षित, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. रामकुमार जायसवाल, गुरु गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा आदि की विशेष सहभागिता रहेगी।

अयोध्या राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. सुनील कुमार सिंह

दिनांकः 11 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में अयोध्या राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ पर छात्र–छात्राओं ने मंगलाचरण कर भाव अर्पण किया।

प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों ने 'श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भव भय दारुण। नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुण'। सस्वर गाकर भक्ति रस से सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया।

प्रार्थना सभा में सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि प्रभु राम आस्था भाव समर्पण के प्रतीक है उनका जीवन पथ मानव जीवन का अमृत पथ प्रदर्शक है जिसे अंगीकार कर रिश्तों की राग अनुराग विराग जिया जा सकता है।

राम स्तुति को बायोटेक्नोलॉजी द्वितीय वर्ष की छात्रा नंदिनी गुप्ता, सुनिधि श्रीवास्तव, नंदिनी तिवारी, रचना सिंह, विजय लक्ष्मी गुप्ता, प्रगति पाल ने सस्वर गाकर सभी में भक्ति भाव जागृत किया।

मंगलाचरण में प्रमुख रूप से डॉ. अमित दुबे, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कीर्ति कुमार, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, श्री धनंजय पांडे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अवैद्यनाथ सिंह, डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, अनिल कुमार शर्मा, डॉ. रश्मि झा, जन्मेजय सिंह सहित सभी विभागों के छात्र–छात्राओं ने भाव अर्पण किया।

आयुर्वेद योग नाथपंथ–2025 पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

उद्घाटन सत्र

गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान

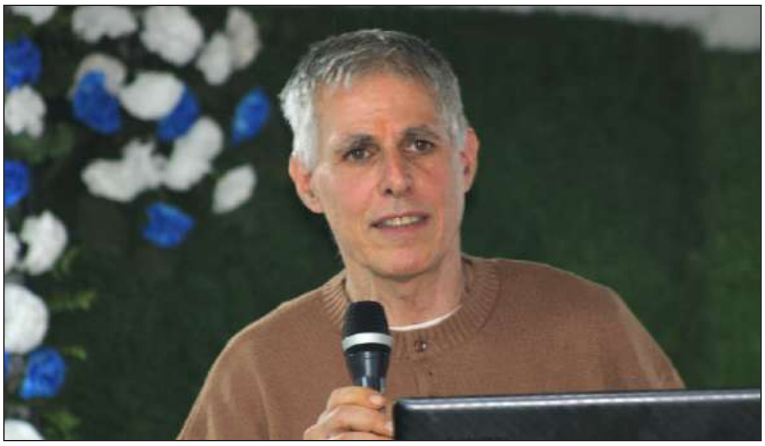

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी.एन. सिंह एवं श्री गॉय लेविन

शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्रो. के.आर.सी. रेड्डी

शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. मायाराम उनियाल,

दिनांकः 12 जनवरी, 2025। आयुर्वेद योग नाथपंथ–2025 पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा 12–14 जनवरी 2025 तक विश्वविद्यालय परिसर, आरोग्यधाम, बालापार, सोनबरसा में परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलाधिपति के आशीर्वाद से किया जा रहा है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर के साथ–साथ श्रीलंका, इजराइल, यूके, यूएसए और अन्य देशों से गणमान्य लोगों ने भाग लिया। आज दिनांक 12 जनवरी 2025 को उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. जी.एन. सिंह, मुख्यमंत्री के सलाहकार, उत्तर प्रदेश सरकार। उद्घाटन सत्र का स्वागत सम्मेलन के आयोजन सचिव एवं गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया।

उन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज के आशीर्वाद से इस ज्ञानवर्धक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन संभव हो पाया है। उन्होंने देश–विदेश से आए सभी गणमान्यों का स्वागत किया।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में करीब 300 पंजीकरण हुए। उन्होंने बताया कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय 52 संस्थानों में से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की एक घटक इकाई है। सम्मेलन के संयोजक और बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो. के.आर.सी. रेड्डी ने नाथ संप्रदाय और आयुर्वेद व योग में गोरक्षनाथ के योगदान पर अपने विचार रखे। उन्होंने इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन, वेब ऑफ साइंस इंडेक्स्ड जर्नल में प्रकाशित 45 शोध लेखों को शामिल करते हुए कार्यवाही की सराहना की।

उन्होंने कहा कि यह पहला मौका है जब वैज्ञानिक प्रकाशनों के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया है। मुख्य अतिथि डॉ. मायाराम उनियाल, वनोषधि विद्यापति (श्रीलंका) ने गोरक्षनाथ और गोरखपुर के बीच समानता को समझाया। वेद वाणी और नाथपंथ संप्रदाय एक

सम्मेलन के दौरान विशिष्ट अतिथि डॉ. अनुला कुमारी

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए डॉ. गिरीधर वेदान्तम

दूसरे से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि गोरक्षनाथ जी ने पारे के उपयोग से संबंधित कई संदर्भ दिए हैं। पारे का उपयोग निम्न धातुओं को बहुमूल्य स्वर्ण धातु में बदलने के लिए किया जाता है और पारद वटी खेचरी (रस बंधन) के रूप में काम किया जाता है। आयुर्वेद और योग में गोरक्षनाथ जी का योगदान अद्वितीय है। उन्होंने मत्स्येंद्रनाथ, नागार्जुन, गोरक्षनाथ जी महाराज की परंपरा को संबोधित किया है।

मुख्य अतिथि, इज़राइल से श्री गाय लेविन ने संबोधित किया कि उन्होंने आयुर्वेद में अपना घर पाया है, उन्होंने समय–समय पर आयुर्वेद बिरादरी का समर्थन किया है और इज़राइल में अपने ज्ञान को बढ़ाया है। वह योगयुक्त शिलाजीत विकसित करते हैं। वह योगाभ्यास और जोंक चिकित्सा का अभ्यास कर रहे हैं। रोगी स्ट्रोक से पीड़ित था, उन्होंने इज़राइल में बस्ती चिकित्सा का उपयोग करने की सलाह दी।

विशिष्ट अतिथि, डॉ. अनुला कुमारी, श्रीलंका श्रीलंका में एक आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं। आयुर्वेद जीवन शैली और चिकित्सा की एक आदर्श प्रणाली है। आयुर्वेद–योग–नाथपंथ पूरे विश्व में फल–फूल रहा है। उन्होंने आयुष के क्षेत्र में भारत और उत्तर प्रदेश सरकार की पहल को प्रस्तुत किया और शेयर धारकों को अपने निवेश के लिए आमंत्रित किया।

इस सत्र में डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलपति, एमजीयूजी, डॉ. प्रदीप कुमार राव, रजिस्ट्रार, एमजीयूजी, प्रो. के.आर.सी. रेड्डी, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक और आयुर्वेद संकाय, आईएमएस बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर और डॉ. गिरिधर वेदांतम, प्रिंसिपल और संगठन सचिव, जीजीआईएमएस मौजूद रहे।

इस अवसर पर डॉ. अरविंद कुशवाहा, प्राचार्य, एमबीबीएस कॉलेज, डॉ. शशिकांत सिंह, प्राचार्य, फार्मास्यूटिकल साइंसेज संकाय, डॉ. विमल कुमार दुबे, डीन, कृषि संकाय, डॉ. सुनील कुमार सिंह, डीन, स्वास्थ्य और संबद्ध विज्ञान और विश्वविद्यालय के सभी संकाय मौजूद रहें।

आयुर्वेद योग नाथपंथ–2025 पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

प्रथम सत्र

गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान

सम्मेलन में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. टी. वीररत्ना, एवं डॉ. वी.एन. जोशी

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए प्रो. बी.एम. सिंह

आभासीय माध्यम से शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी.एस. तोमर

दिनांकः 12 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अन्तर्गत गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान (आयुर्वेद संकाय), महायोगी गोरखानाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा 'आयुर्वेद–योग –नाथपंथ' पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन–2025 का आयोजन 12–14 जनवरी 2025 तक विश्वविद्यालय परिसर, आरोग्यधाम, बालापार, सोनबरसा में किया जा रहा है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर से और श्रीलंका, इज़राइल, इंग्लैंड, अमेरिका और अन्य देशों के गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मेलन में भाग लिया। पहले विज्ञान सत्र की अध्यक्षता विशिष्ट अतिथि डॉ. टी. वीररत्ना, श्रीलंका और सह–अध्यक्ष डॉ. वी. एन. जोशी, निदेशक, एसोसिएशन आयुर्वेद अकादमी, इंग्लैंड ने की।

डॉ. शेखर अन्नाम्बोतला, अध्यक्ष, एसोसिएशन ऑफ आयुर्वेदिक प्रोफेशनल्स ऑफ नॉर्थ अमेरिका (एएपीएनए), यूएसए संयुक्त राज्य अमेरिका से ऑनलाइन शामिल हुए और 'आयुर्वेद के वैश्विक परिदृश्य' पर सभा को प्रबुद्ध किया। उन्होंने भारत के बाहर आयुर्वेद के दायरेए अवसर और चुनौतियों पर बात की है। उन्होंने स्थानीय आयुष चिकित्सकों के साथ नियमित बैठकों के संबंध में भारत के विभिन्न देशों में आयुष अध्यक्षों का उल्लेख किया है।

उन्होंने यह भी बताया कि 31,772 आयुर्वेदिक सलाहकार विदेशों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं और आयुर्वेद और योग क्षेत्र में आगामी स्नातकों के लिए एक बड़ा अवसर दिखाया है। उसके बादए विश्व आयुर्वेद मिशन, प्रयागराज के अध्यक्ष प्रोफेसर जी.एस. तोमर ने 'स्वास्थ्य देखभाल चुनौतियां और आयुर्वेद (ऑनलाइन)' पर संबोधित किया और कहा कि आयुर्वेद जीवन का एक आदर्श तरीका और चिकित्सा प्रणाली है, आयुर्वेद रोकथाम, संवर्धन और इलाज के लिए है।

प्रो. बी.एम. सिंह, विभागाध्यक्ष, कौमार्यभृत विभाग, आयुर्वेद संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी ने 'बच्चों की प्रतिरक्षा बढ़ाने में स्वर्णप्राशन की भूमिका' पर बात की, उन्होंने बताया कि स्वर्ण प्राशन का उपयोग अधिक वैज्ञानिक है और पूरे भारत में लोकप्रिय है। 0.16

वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को स्वर्ण प्राशन ड्रॉप के रूप में दिया जाता है। स्वर्ण प्राशन में 90: स्वर्ण भस्म होती है।

डॉ. चेतन साहनी, एसोसिएट प्रोफेसर, एनाटॉमी विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर ने पुरुष बांझपन निवारण विज्ञान और समग्र उपचार के लिए योग पर संबोधित किया और विभिन्न रोग संस्थाओं में योग के वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किए। उन्होंने हाल के शोधों का हवाला दिया है 'भारत ने 83 जनसंख्या समूहों से 10,000 मानव जीनोम का संकलन जारी किया है। जिसे पीएम मोदी जी ने मील का पत्थर कहा है। पीएम श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अभी हाल ही में 10 हजार भारतीयों के जीनोम अनुक्रमण डेटा का अनावरण किया।'
भृगु योग ट्रस्ट, वाराणसी के डॉ. जयंत कुमार भादुड़ी ने 'भृगु योग परंपरा और ऊर्जा का मार्ग : शरीर, मन और वाणी को पुनर्जीवित करने के लिए' को संबोधित करते हुए कहा कि महर्षि भृगु अथर्वेद काल के ऋषि हैं और उन्होंने इस पर जीवंत अभिविन्यास भी दिया है। एवं अनाहत योग का जीवन्त प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया।

सत्र की शोभा मार्गदर्शन मंडल में डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलपति, एमजीयूजी, डॉ. प्रदीप कुमार राव, कुलसचिव, एमजीयूजी, प्रोफेसर के.आर.सी. रेड्डी, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक और आयुर्वेद संकाय, आईएमएस बीएचयू के वरिष्ठ प्रोफेसर और डॉ. गिरिधर वेदांतम, प्राचार्य एवं अंतर्राष्टीय सम्मेलन के सचिव, गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान (आयुर्वेद संकाय) ने रखी।

इस अवसर पर एमबीबीएस के प्राचार्य डॉ. अरविन्द कुशवाहा, कृषि विज्ञान संसथान के संकाय प्रमुख डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. सुनील कुमार सिंह, डीन, हेल्थ एवं अलाइड साइंसेज, डॉ. शशिकांत सिंह, प्राचार्य, फार्मेसी, एवं समस्त अध्यापक गण उपस्थित थे।

पहले वैज्ञानिक सत्र में, डॉ. विनम्र शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, जीजीआईएमएस, एमजीयूजी के साथ–साथ, इस पहले वैज्ञानिक सत्र के लिए प्रतिवेदक, बीएचयू के डॉ. सरोज आदित्य राजेश, ने दुनिया भर से आए सभी प्रतिनिधियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया।

प्रथम वैज्ञानिक सत्र के समन्वयक डॉ. विनम्र शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

आयुर्वेद योग नाथपंथ-2025 पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

द्वितीय दिवस : कुलाधिपति उद्बोधन

गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

दिनांकः 13 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज् (आयुर्वेद कॉलेज) के पंचकर्मा सभागार में आयुर्वेद –योग–नाथपंथ–2025 त्र अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस पर देश विदेश से आए गणमान्य प्रतिनीधियों को संबोधित करते हुए विश्व विद्यालय के कुलाधिपति और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत की सभ्यता और संस्कृति की चर्चा जब होती है तो ये बहुत प्रचीन है। यहां के ऋषियों ने इसमें अमूल्य योगदान दिया है। विश्व को चार संहिता लिपिबद्ध कर प्रदान करने वाले विद्वान भारत के ही महर्षि वेदव्यास थे। यह गुरु शिष्य परंपरा के द्वारा प्रदान किया था। जिस ज्ञान शृंखला को महर्षि वाल्मीकि ने आरंभ किया था उसे ही महर्षि ने वेदव्यास ने आगे बढ़ाया था। इनकी चर्चा इसलिए ये चार से पांच हजार वर्ष पहले इन्होंने ये कार्य किया था। जब हम मुक्ति की बात करते हैं तो श्रीमद् भागवत की कथा श्रवण किया जाता है मुक्ति या मोक्ष का तात्पर्य सफलता की आखिरी ऊंचाई को प्राप्त करना है। महाभारत प्रबंध कार्य ग्रंथ है। जिस ऋषि की नेतृत्व में ये सारा कार्य हो रहा था उन्होंने ने दोनों हाथ उठा कर कहा था कि धर्म का मार्ग ही श्रेष्ठ है। भारत ने धर्म को एक विराट स्वरूप में लिया है यह मात्र उपासना विधि नहीं जीवनशैली की समग्र दृष्टि है। कर्तव्य, सदाचार और नैतिक मूल्यों को ही धर्म माना है। हम दुराचारियों और पतित लोगों को धर्म के लिए संकट मानते हैं। इसका उद्देश्य धर्म अर्थ काम मोक्ष को प्राप्त करना है यह सभी स्वस्थ शरीर से ही प्राप्त कर सकते हैं क्यों कि शरीर एक साधन है। आयुर्वेद का मूल उद्देश्य शरीर को स्वस्थ रखना है। शरीर पंचमहाभूतों से बना है और महायोगी गोरक्षनाथ ने भी यही कहा कि पिंड में ब्रह्माण्ड समाया। पंचभूतों से जुड़ी सृष्टि को ही शरीर में देखना। यही आयुर्वेद का भी कथन है कि पंचमहाभौतिक स्वरूप वात, पित्त कफ को सम रखना। यदि इसमें विकृति आती है तो शरीर अस्वस्थ होता है। पंचकर्म चिकित्सा में इन्हीं विकृतियों का शमन करना है और यही हठयोग में बताए गए षट्कर्म के द्वारा किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु कृपा, स्वयं का प्रयास और औषधियों का भी अद्भुत योगदान है। लेकिन कालान्तर में भारतीय हीन भावना से ग्रस्त हो गए और यह मानस में प्रवेश कराया गया जो बाहरी ज्ञान है वो श्रेष्ठ है। ऐसे मानसिक विकारों से हमारी बहुत बौद्धिक क्षति हुई है। आज हम देखते हैं कि माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में हम पुनः भारत के उस विराट बौद्धिक ज्ञान परंपरा को, चिकित्सा परंपरा को जीवित कर रहे हैं। योग और आयुर्वेद ने दोनों ने यम, नियम और संयम को स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य माना है। योग का क्रियात्मक पक्ष नाथ योगियों के द्वारा दिया गया है। बहुत सारे आसन नाथ योगियों के द्वारा दिया गया है जिनके नाम नाथ योगियों के नाम पर है। शरीर के अन्दर छः नाड़ियों में से हम मात्र दो नाड़ियों सुषुम्ना और पिंगला को जानते हैं लेकिन नाथ योगियों ने बाकी चार को भी साधना के द्वारा गुरु परंपरा से जाना है। चेतन मन के साथ–साथ हमें अवचेतन मन को भी जानने का प्रयास करना

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

चाहिए यह यौगिक साधना के द्वारा हम जान सकते हैं। नाथ योगियों का ज्ञान, योग और आयुर्वेद तीनों का मानना है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के तत्व इस काया में है और इसे जानकर हम स्वास्थ्य के मार्ग पर बढ़ सकते हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी निश्चित ही एक भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति एक वैश्विक दृष्टि प्रदान करेगा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ जितेन्द्र ने किया। डॉ. आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने माननीय मुख्यमंत्री, मुख्य वक्ता, देश विदेश से आए गणमान्य प्रतिनीधियों, सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इजरायल प्रतिनिधि डॉ. गाई लेविन, एंट लेविन, श्रीलंका से डॉ. विरांथा, मायाराम उनियाल उडुपी से तन्मय गोस्वामी, यू. के. से डॉ. वी. एन. जोशी कार्यक्रम में माननीय कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम और डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी और डॉ. प्रिया और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

पुस्तकों का विमोचन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते श्रीमती अनत लेविन एवं डॉ. तन्मय गोस्वामी

आयुर्वेद योग नाथपंथ-2025 पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

समापन सत्र

गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान

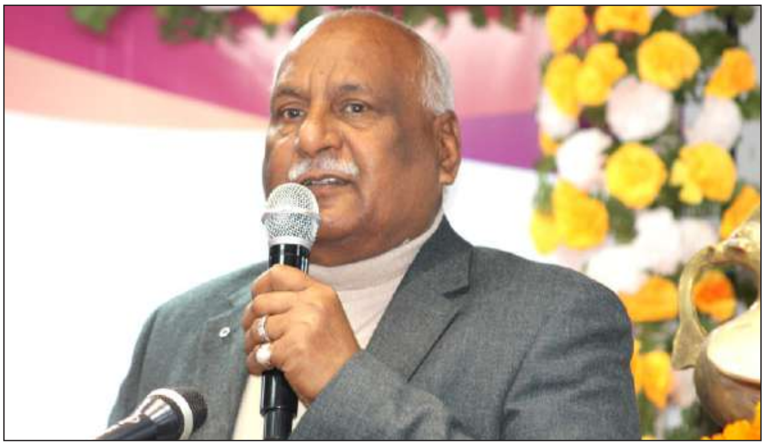

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन अवसर पर शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. तन्मय गोस्वामी एवं डॉ. ए.के. सिंह

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए डॉ. के.आर.सी. रेड्डी

सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए माननीय कुलपति डॉ. सुरिन्दर सिंह

दिनांकः 14 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज् (आयुर्वेद कॉलेज) गोरखपुर में त्रिदिवसीय ''आयुर्वेद-योग-नाथपंथ' अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के पंचाकर्म सभागार में समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीलंका से विशिष्ट प्रतिनिधि सदस्य मेंबर सेंट्रल काउंसिल ऑफ श्रीलंका आयुर्वेद डॉ. टी. वीररत्ना ने कहा कि मैं इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी से नव विचार प्राप्त किया। आयुर्वेद एक पवित्र चिकित्सकीय पद्धति है जो आत्मा तक को शुद्ध और प्रसन्न करता है। आयुर्वेद और एलोपैथ को एक मिलकर कर कार्य करना चाहिए यह समय की मांग है।

विशिष्ट अतिथि इंग्लैंड से विशिष्ट आयुर्वेद वैद्य डॉ. वी. एन. जोशी ने कहा कि नाथ संप्रदाय का संबंध भगवान रुद्र और गौ माता से है। नाथ संप्रदाय को प्रारंभ करने में आदि वैद्य शिव को ही जाता है। वो आयुर्वेद चिकित्सा के प्रवर्तक हैं।

विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति संस्कृति विश्वविद्यालय मथुरा डॉ. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि चिकित्सा जगत में यह संगोष्ठी मील का पत्थर साबित होगा। हमारा एक लक्ष्य होना चाहिए। स्वस्थ को स्वस्थ रखना और रोगी को स्वस्थ रखना जो महर्षि चरक ने कहा है।

आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि आयुष के पूरे देश में एक सौ सात आयुर्वेदिक कॉलेज हैं। देश-विदेश विभिन्न आयुर्वेदिक कॉलेजों से आए हम सभी यदि पांच गांव गोद लेते हैं तो आयुर्वेद चिकित्सा घर-घर पहुंचेगा। हमें हर्बल औषधियों के गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। प्रायः देखा जाता है कि सौंदर्य प्रसाधनों में प्रयोग किए जाने वाले सौंदर्य उत्पाद शरीर के लिए बहुत हानिकारक होते हैं लेकिन यदि सौन्दर्य प्रसाधनों में प्रयोग आने वाले पारद आदि धातुओं को यदि आयुर्वेदिक पद्धतियों से शोधन करके बनाते हैं तो यह शरीर के लिए हानिकारक नहीं होता है क्यों कि आयुर्वेदिक चिकित्सा को सफल बनाने के लिए यह बहुत ही अनिवार्य हो जाता है कि शोधित हर्बल उत्पादों का प्रयोग किया जाए। रसशास्त्र और भैषज्य कल्पना विभाग हमारे ऐसे विभाग हैं। जो हमारे बीएएमएस

विद्यार्थियों के लिए दवा उद्योग कंपनियों के मांग के अनुसार हैं।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि हम आप सभी देश विदेश से विशिष्ट प्रतिनिधियों को जोड़ें रखेंगे यह विश्वविद्यालय के लिए बौद्धिक विकास के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। वर्तमान में कंपनियों के मांग के देखते हुए हमें वैल्यू एडेड कोर्स को आरंभ करना चाहिए। यह मात्र विश्वविद्यालय के लिए ही नहीं विद्यार्थियों के भविष्य के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण होगा। माननीय कुलपति ने बीएचयू प्रोफेसर डॉ. के.आर. सी. रेड्डी और आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य, प्राध्यापकों और बीएमएस विद्यार्थियों के प्रति संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए साधुवाद प्रदान किया। सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति सम्मान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज के डॉ. अश्विथी नारायण और मेडिकल कॉलेज की डॉ. प्रियंका को प्राप्त हुआ।

मंगलाचरण डॉ. सुमेश कार्यक्रम का संचालन डॉ. मोहित ने किया। डॉ. आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य गिरिधर वेदांतम ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि माननीय प्रतिनीधियों सभी चिकित्सकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में इजरायल प्रतिनिधि मिसेज लेविन, डॉ. लुई डॉ. तन्मय गोस्वामी, माननीय कुलपति प्रो. डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम, डॉ. कुशवाहा, डॉ. नवीन, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी और डॉ. प्रिया और भारत के अनेक राज्यों और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

महिला छात्रावास भूमि पूजन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

महिला छात्रावास भूमि पूजन में पूजन विधि पूर्ण करते माननीय कुलपति डॉ. सुरिन्दर सिंह एवं प्रथम शिला का निर्माण करते माननीय कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव

दिनांक: 15 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल बनेगा। विवि के विस्तार के कारण गर्ल्स हॉस्टल की दरकार हो गई थी। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन फरने के बाद कुलपति ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है।

इसी क्रम में यहां एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हॉस्टल का निर्माण किया जा रहा है। इस हॉस्टल के बन जाने से अधिकाधिक छात्राएं सुविधाजनक तरीके से आवासित होकर अपने अध्ययन कार्य को सुचारू ढंग से आगे बढ़ा पाएंगी। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का ऑडिटोरियम बनकर तैयार है। इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है।

भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी. एन. सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. ए.के. सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा, आशीष सिंह, योगेन्द्र कुमार उपस्थित रहें।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

जल संयन्त्र का शैक्षणिक भ्रमण

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

रामगढ़ताल रामपुर गोरखपुर में स्थित जल संयन्त्र का शैक्षणिक भ्रमण के दौरान संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के विद्यार्थी

दिनांकः 16 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बी.एस.सी. बॉयोटेक्नोलॉजी के 60 छात्र–छात्राओं ने सहायक आचार्य डॉ. पवन कन्नौजिया और डॉ. अवैद्यनाथ सिंह के नेतृत्व में रामगढ़ताल रामपुर गोरखपुर में स्थित जल संयन्त्र का शैक्षणिक भ्रमण किया गया। जल संयन्त्र के प्रभारी अनुराग श्रीवास्तव और प्रबंधक हनुमंत उपाध्याय ने सिवरेज वाटर ट्रीटमेंट प्लांट संयंत्र का भ्रमण कराते हुए विद्यार्थियों को बताया कि प्रतिदिन घरेलू, औद्योगिक और अन्य स्रोतों से निकलने वाले गंदे पानी (सीवेज) को साफ करके उसे पुनः उपयोग योग्य बनाना संयत्र का प्रमुख उद्देश्य है। यह संयंत्र जल प्रदूषण को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और जल संसाधनों की रक्षा करता है। संयत्र में सिवरेज जल को उपचार प्रक्रिया में विभिन्न तकनीकी चरणों से परीक्षण किया जाता है, ताकि जल को पुनः उपयोग के लायक बनाया जा सके। प्रोजेक्ट मैनेजर हनुमंत उपाध्याय जी ने बताया कि तोशिबा कार्पोरेशन के संरक्षण में जल निगम के जल संयंत्र को चलाया जा रहा है। गोरखपुर क्षेत्र में दो सीवेज उपचार संयन्त्र का निर्माण किया गया है जिसमें एक सूर्यकुंड में स्थित है।

उन्होंने बताया कि सीवेज जल उपचार के लिए क्लोरीनीकरण अथवा अन्य कई केमिकल्स का उपयोग भौतिक, जैविक, रसायन और किचड़ से जल का उपचार कर जल को सभी दूषित पदार्थो और सूक्ष्म जीव से रहित करके उपयोगी जल में परिवर्तित किया जाता हैं।

विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए सहायक आचार्य डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया ने कहा कि प्रतिदिन वेस्ट सिवरेज से उपयोगी जल का प्रसंस्करण एक जटिल प्रक्रिया और चुनौती है। मानव जीवन में हम सभी को पीने और उपयोगी जल का संचय करने का संकल्प लेना चाहिए। जिससे कम से कम उपयोगी जल प्रदूषित हो। सिवरेज जल उपचार की प्रक्रिया में प्रारंभिक प्रसंस्करण में सिवरेज जल से बड़े कचरे और ठोस पदार्थों को हटा दिया जाता है। इसमें ग्रिट चेंबर और स्क्रीनिंग प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है, जहां बड़े कचरे, जैसे कि प्लास्टिक, रेत, लकड़ी आदि को हटाया जाता है। इस चरण में प्रदूषण का 60. 70: तक निस्तारण हो जाता है। जैविक उपचार तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जहां बैक्टीरिया और अन्य सूक्ष्मजीवों का उपयोग करके पानी से जैविक प्रदूषकों को हटाया जाता है। इसमें सक्रिय कीचड़ प्रक्रिया सबसे सामान्य तकनीक है। इसमें पानी में सूक्ष्मजीवों को मिलाकर प्रदूषकों को रोका जाता है।

सहायक आचार्य डॉ. अवैद्यनाथ सिंह ने कहा कि संयंत्र के भ्रमण से बॉयोटेक्नोलॉजी के छात्र छात्राओं के लिए बहु उपयोगी है। इसमें वैज्ञानिक दृष्टि से प्रदूषित जल को उपयोगी जल में बदलने की प्रक्रिया का अध्ययन महत्वपूर्ण है। विज्ञान के आधार पर संयंत्रों में विशेष प्रकार की तकनीकें जैसे रिवर्स ऑस्मोसिस आर. ओ. ओजोनाइजेशन और सक्रिय कार्बन का उपयोग भी किया जाता है। इससे पानी की गुणवत्ता में और सुधार होता है, और जल को न केवल सिंचाई के लिए, बल्कि पीने योग्य भी बनाया जा सकता है। संयंत्र से पर्यावरण संरक्षण के दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है जिससे जल और भूमि दोनों की रक्षा करता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सिवरेज जल उपचार संयंत्र न केवल जल प्रदूषण को कम करने में मदद करता है, बल्कि यह जल संसाधनों का सही तरीके से उपयोग सुनिश्चित करता है। यह संयंत्र सामूहिक स्वास्थ्य और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और इनकी स्थापना से जल संकट को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

भ्रमण के समय संयंत्र के सिविल इंजीनियर भानु प्रताप सिंह, सुपरवाइजर अख्तर, लैब टेक्नीशियन पूजा, मंगल सिंह, पी. एल.सी. ओंकार जी ने विद्यार्थियों को वेस्ट सिवरेज पानी को पुनः स्वच्छ बनाने की प्रक्रिया को साझा किया।

शैक्षणिक भ्रमण में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के सहायक आचार्य डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ. अवैद्यनाथ सिंह सहित आशुतोष मणि त्रिपाठी, आख्या दुबे, अभिषेक यादव, आकृति सिंह, अनुष्का द्विवेदी, अर्पिता सिंह, अस्मिता सिंह, द्राक्षा बानो, दीपिका त्रिपाठी, नंदनी गुप्ता, प्रीति शर्मा, पूर्णिमा, ऋतु, रिया, उजाला सिंह, शुभम सिंह, सत्यम सिंह सहित कुल 60 छात्र छात्राओं ने शैक्षणिक भ्रमण में सम्मिलित हुए।

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

पंचदश दिवसीय स्वास्थ्य शिविर

गुरु गोरक्षनाथ इंस्ट्टीयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

शिविर में लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श देते चिकित्सक

दिनांकः 18 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज् (आयुर्वेद कॉलेज) में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना के अष्टावक्र इकाई के स्वयंसेवकों और आयुर्वेद चिकित्सकों द्वारा विगत तीन दिनों से गोरखनाथ मंदिर परिसर में खिचड़ी मेला क्षेत्र में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस चिकित्सा शिविर का आयोजन एक सप्ताह तक किया जाएगा। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी आचार्य साध्वी नन्दन पाण्डेय ने बताया कि यह चिकित्सा शिविर जो 16 जनवरी प्रारम्भ किया गया है 31 जनवरी 2025 तक लगाया जाएगा।

शिविर में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण, आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के द्वारा चिकित्सकीय परामर्श प्रदान और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। जिसमें गोरखपुर सहित विभिन्न जनपदों के नागरिक खिचड़ी मेला का आनन्द लेने के साथ स्वस्थ रहने के उपाय और निःशुल्क आयुर्वेदिक परामर्श भी प्राप्त कर रहे हैं।

आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने कहा कि प्रतिदिन शिविर में विभिन्न रोगों से सम्बन्धित परामर्श हेतु रोग विशेषज्ञ समय दे रहे हैं जिसमें अगद तंत्र विभाग की डॉ. रश्मि पुष्पन, क्रिया शरीर विभाग के डॉ. नवोदय राजू, रचना शरीर विभाग के डॉ. ब्रह्मदेव, मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. रिनझिन अन्य डॉ. जितेन्द्र, डॉ. जितेन्द्र, डॉ. यास्मीन, डॉ. देवी नायर और बीएमएस विद्यार्थी एनएसएस स्वयंसेवक भी अपना योगदान दे रहे हैं।

अतिथि व्याख्यान

फैकल्टी ऑफ़ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

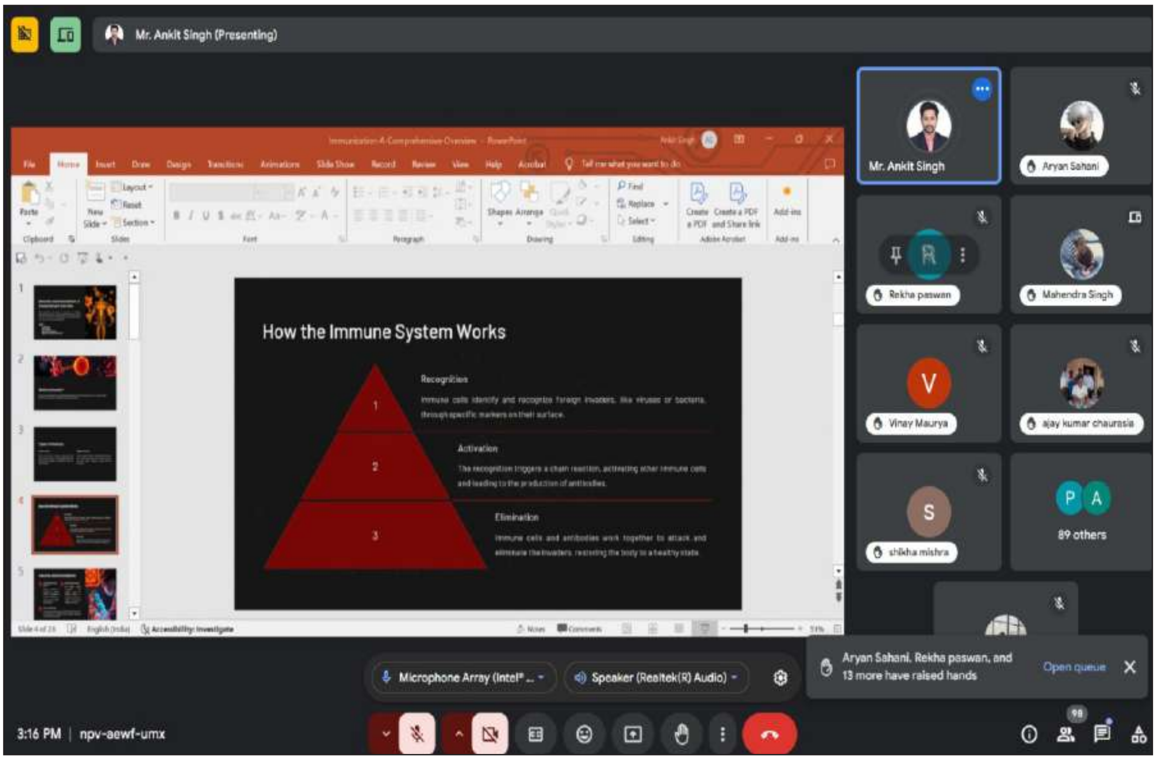

दिनांकः 18 जनवरी, 2025 को फैकल्टी ऑफ़ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल में नेशनल इम्यूनाइजेशन डे के अवसर पर एक अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया।

इस व्याख्यान में डॉ अंकित सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ़ पैरामेडिकल, गलगोटिया यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नॉएडा ऑनलाइन जुड़े रहे।

डॉ. अंकित ने इम्यूनाइजेशन डे के उपलक्ष्य में बताया की इम्युनिटी किस किस तरह से हमारे लिए जरुरी है व हम कैसे अपनी इम्युनिटी को बढ़ा सकते है, इसी क्रम में उन्होंने बच्चो को लगने वाले वैक्सीन के बारे में व होने वाली बीमारियों से बचाव के बारे में भी बताया। डॉ. सिंह का व्याख्यान सभी विद्यार्थियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहे।

इस व्याख्यान में पैरामेडिकल के सभी विद्यार्थियों सहित सभी शिक्षक व विभाग के विभागाद्यक्ष डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव भी उपस्थित रहे।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

वन नेशन वन हेल्थ : अतिथि व्याख्यान

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

वन नेशन वन हेल्थ विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी. एस. तोमर

दिनांकः 18 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अंतर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज् आयुर्वेद कालेज में 'वन नेशन वन हेल्थ' सिस्टम विषय पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जी. एस. तोमर ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एक राष्ट्र, एक स्वास्थ्य प्रणाली की संकल्पना की थी। जिसे हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी ने व्यवहार में लाने का वीणा उठाया है। यह प्रणाली एक एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रणाली है जो पूरे देश में एक समान मानकों और सेवाओं को प्रतिस्थापित करेगी। आरोग्य भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव एवं संघ के प्रचारक डॉ. अशोक वार्ष्णेय की पहल पर आरोग्य भारती ने बीस सदस्यीय समिति के माध्यम से इसका मसौदा नीति आयोग को भेजा है। आज देश को इसकी सख्त जरूरत है। इसमें सभी चिकित्सा पद्धतियों की खूबियों के समन्वय पर जोर है। सभी चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्रतिद्वंदिता छोड़कर परस्पर समन्वय के साथ चिकित्सा कार्य करना होगा गोरखनाथ विश्वविद्यालय के एलोपैथ और आयुर्वेद चिकित्सा के विद्यार्थी भाग्यशाली हैं कि एक कैम्पस में साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। इस प्रणाली का लक्ष्य सभी नागरिकों को सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है, ताकि स्वास्थ्य सेवाओं में क्षेत्रीय, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को दूर किया जा सके। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अरविन्द कुशवाह ने कहा कि चिकित्सक का मुख्य उद्देश्य रोगी को स्वस्थ करना है वो डॉक्टर पर भरोसा करके आता है। चिकित्सक को भी अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार बनना होगा। किसी एक पद्धति को श्रेष्ठ दूसरे को कम आंकने के बजाय परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करना होगा।

आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने कहा कि जिस चिकित्सा पद्धति से जिस रोग का इलाज हो सकता है चिकित्सक को निःस्संकोच अपनी और अपनी पद्धति की मर्यादा समझते हुए उस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक के पास भेजना चाहिए या मदद लेनी चाहिए। चिकित्सा कार्य में हमें परस्पर मिलजुल कर कार्य करना होगा। डॉ. वेदांतम ने मुख्य वक्ता डॉ. तोमर सभी चिकित्सकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम में आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम, मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. कुशवाहा, डॉ. शशिकांत, डॉ. नवीन, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ .साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी और डॉ. प्रिया एवं फार्मेसी, एलोपैथ और आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहें।

स्वास्थ्य शिविर

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर परामर्श देते डॉ. जी. एस. तोमर

दिनांकः 20 जनवरी, 2025 को गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जी.एस. तोमर ने शताधिक मरीजों को निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया ।

डॉ. जी. एस. तोमर ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आज दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है । आयुर्वेद वर्णित आदर्श जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत–प्रतिशत संभव है। योग, प्राणायाम और ध्यान के साथ नियमित चिकित्सीय परामर्श से रोगी निरोग रहकर स्वस्थ जीवन जी सकते है।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा आयोजित निःशुल्क शिविर में उन्होंने कहा कि आज के समय में अस्थमा, स्पाइन, गठिया और अन्य समस्याएं अपथ्य सेवन एवं अनियमित दिनचर्या से उत्पन्न हो रही हैं। आसपास की जड़ी बूटियां से और खान–पान में सुधार करके हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

मतदाता दिवस : शपथ ग्रहण समारोह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

मतदाता दिवस का शपथ ग्रहण करते महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के विद्यार्थी

दिनांकः 25 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में मतदाता दिवस का शपथ ग्रहण कर विद्यार्थियों ने मताधिकारों के अधिकारों का संकल्प लिया।

गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग के सभागार में विश्वविद्यालय के मतदाता जागरूकता अभियान के नोडल अधिकारी डॉ. संदीप श्रीवास्तव ने कहा कि सशक्त लोकतंत्र के निर्माण में हर वोट जरूरी है। लोकतंत्र में मतदाता को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अछुण्य बनाए रखने के लिए निर्भीक होकर धर्म,वर्ग, जाति, समुदाय भाषा या अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना निर्वाचन मेंअपने मत का प्रयोग करना चाहिए।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में शपथ ग्रहण कराते हुए नचिकेता इकाई के कार्यक्रम अधिकारी अनिल कुमार ने कहा कि 18वर्ष के उम्र के मतदाताओं को मताधिकार से जोड़ने के लिए निर्वाचन आयोग निरंतर प्रयास कर रहा है। आज के दिन सभी भारतीय नागरिकों को मतदान के प्रति कृत संकल्पित होना चाहिए भारत के प्रत्येक व्यक्ति का वोट ही देश का भावी भविष्य की नींव रखता है। आर्यभट्ट इकाई की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रश्मि झा ने स्वयं सेवकों को मतदाता दिवस की शपथ करवाया।

नर्सिंग कॉलेज में माता अनसुईया इकाई की कार्यक्रम अधिकारी सुमन यादव, गार्गी इकाई की कविता साहनी और मैत्रीय इकाई की कार्यक्रम अधिकारी गरिमा पाण्डेय अपने स्वयं सेवकों के साथ सहयोग किया।

Iपथ ग्रहण समारोह में विश्वविद्यालय के सभी प्राचार्य, अधिष्ठाता विभागाध्यक्ष शिक्षक गण, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक और राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट्स ने सम्मिलित होकर मतदाता दिवस में सहभागिता किया।

76वां गणतंत्र दिवस समारोह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

ध्वजारोहण करते हुए माननीय कुलपति डॉ. सुरिन्दर सिंह एवं लेफ्टिनेंट कर्नल अभिषेक मान सिंह

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए माननीय कुलपति डॉ. सुरिन्दर सिंह एवं लेफ्टिनेंट कर्नल अभिषेक मान सिंह

दिनांक: 26 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर बालापार में पंचकर्म केन्द्र के भव्य प्रांगण में 76वां गणतंत्र दिवस सांस्कृतिक प्रस्तुति और डेयर डेविल्स शौर्य प्रदर्शन के साथ मनाया गया। माननीय कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह एवं विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कर्नल अभिषेक मान सिंह ने ध्वजारोहण कर विद्यार्थियों और शिक्षकों को 76वें गणतंत्र दिवस की बधाई दी।

कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि गणतंत्र दिवस का थीम स्वर्णिम भारत विरासत और विकास है जो देश की प्रगति यात्रा को दर्शाती है। इस समृद्धि की यात्रा में बहुत सारी चुनौतियां आईं हमने पार भी किया। बीते बीस वर्ष भारत के इतिहास में सबसे तेजी से विकास यात्रा के वर्ष रहे हैं। इसमें युवाओं का अहम योगदान रहा है। निश्चित ही हमारे विद्यार्थी और युवा विकसित भारत का सपना साकार करेंगे। गणतंत्र भारतवर्ष की उभरती आकांक्षाओं का है। गणतंत्र मूल्यों का अर्थ है लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता और बहुलता, विचार, अभिव्यक्ति विश्वास एवं मान्यता की स्वतंत्रता का

मूल्य हमें न केवल रचनात्मक बनाता है अपितु हमारे राष्ट्र की सर्वतोमुखी प्रगति में नागरिकों के योगदान की भूमिका को भी सुनिश्चित करता है। इस समृद्ध गणतंत्र की यात्रा में कई चुनौतियाँ आती हैं जो हमारे देश की एकता, अखंडता और विकास को प्रभावित करती हैं।

विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कर्नल अभिषेक मान सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश की अखंडता एवं लोकतंत्र की अजेयता को समर्पित भारत के सृजन और संकल्प की प्रेरणा गणतंत्र दिवस दे रहा है। हमारा युवा किसी से कम नहीं है। आप जो भी करें राष्ट्रहित का ध्यान रखकर करें सब अच्छा होगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय नीत नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। आप सबको बधाई भी देता हूं कि यहां की एक एनसीसी कैडेट्स का चयन राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए भी हुआ है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में देशभक्ति गीत और नृत्य ने सभी को देश भक्ति के रंग में रंग दिया। वहीं राष्ट्रीय कैडेट कोर 102 यू. पी. बटालियन विश्वविद्यालय की कंपनी ने लेफ्टिनेंट डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में गार्ड ऑफ ऑनर और डेयर डेविल्स शौर्य प्रदर्शन किया। परेड और डेयर डेविल्स दल का नेतृत्व सीनियर अंडर ऑफिसर सागर जायसवाल, अंडर आफिसर अंशिका सिंह, अंडर आफिसर मोती लाल, सार्जेंट खुशी गुप्ता, सार्जेंट आदित्य विश्वकर्मा, कैडेट कृष्णा त्रिपाठी ने किया। पहली बार डेयर डेविल्स के बाइकर्स ग्रुप के कैडेट्स ने अद्भुत संतुलन अदम्य शौर्य साहस से तिरंगे के साथ प्रदर्शन किया।

रोमांचित सभी विद्यार्थियों और दर्शकों ने भारत माता के जयकारे लगाकर डेयर डेविल्स दल का उत्साहवर्धन किया। कैडेट्स द्वारा बाइक पर पिरामिड बना बाइक राइडिंग सभी के लिए आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा।

एनसीसी कैडेट्स सीनियर अण्डर अफसर सागर जायसवाल, मोतीलाल, अंशिका सिंह, सार्जेंट आदित्य, कार्पोरल अभिषेक कैडेट्स अनुभव को माननीय कुलपति प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। आयोजन में मंच संचालन उत्कर्ष सिंह, अभिषेक ने किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश दुबे ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। आयोजन में एनसीसी और एनएसएस के सभी इकाइयों का योगदान रहा।

कार्यक्रम में आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम, डॉ. डी.एस. अजीथा, प्रो. सुनील कुमार सिंह, प्रो. शशिकांत सिंह, डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, तरुण शाह सहित सभी शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

समारोह के दौरान प्रस्तुति देते विभिन्न संकायों के विद्यार्थी एवं उपस्थित माननीय कुलपति, मुख्य अतिथि, प्राचार्य, प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थी

अतिथि व्याख्यान

कृषि संकाय

विद्यार्थियों को "एकीकृत कृषि प्रणाली" विषय पर सम्बोधित करते हुए डॉ. सच्चिदानंद सिंह

दिनांकः 30 जनवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया।

व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. सच्चिदानंद सिंह ने "एकीकृत कृषि प्रणाली" के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना समय की मांग है और इससे किसानों को पूरे वर्ष नियमित और अधिक आय प्राप्त होता है।

उन्होंने इस प्रणाली को वर्तमान परिवेश के लिए जरूरी बतलाया। एकीकृत कृषि प्रणाली के अनेकोनेक लाभ हैं, यह पर्यावरण अनुकूल है और इससे मृदा को स्वस्थ बनाए रखते हुए अत्याधिक उत्पादन किया जा सकता है। प्रचलित कृषि प्रणाली में किसान एक मुख्य फसल पर आत्मनिर्भर रहता है परन्तु एकीकृत कृषि प्रणाली से किसानों को मुख्य फसल के अतिरिक्त आय के अन्य स्रोत सृजित करने का अवसर मिलता है। यह टिकाऊ होने के साथ पर्यावरण के अनुकूल है।

इस व्याख्यान का आयोजन अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दुबे के कुशल निर्देशन में डॉ. विकास कुमार यादव व डॉ. सरस्वती प्रेम कुमारी के सहयोग से संपन्न हुआ।

व्याख्यान के समय कृषि संकाय के प्राध्यापक डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक और डॉ. नवनीत सिंह के साथ कृषि संकाय के विद्यार्थी उपस्थित रहें।

जनवरी माह की मुख्य बैठकें

04 जनवरी 2025 — योगीराज बाबा गंभीरनाथ अतिथि गृह के कार्यालय कक्ष में आयोजित विश्वविद्यालय भवनों के हाउसकीपिंग की बैठक का कार्यवृत्त।

कार्यसूची–1

विश्वविद्यालय भवनों के हाउसकीपिंग पर विचार।

04 जनवरी 2025 — योगीराज बाबा गंभीरनाथ अतिथि गृह के कार्यालय कक्ष में आयोजित NAAC, IQAC की बैठक/प्रस्तुति के कार्यवृत्त।

कार्यसूची–1

नैक के प्रस्तुतीकरण पर विचार

निर्णय

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संबंध में नैक संचालन समिति के सदस्यों के बीच माननीय कुलपति, डॉ. जी.एन. सिंह एवं डॉ. डी.पी. सिंह की उपस्थिति में बैठक आयोजित की गई।

डॉ. जी.एन. सिंह ने डॉ. डी.पी. सिंह का सभी सदस्यों से परिचय कराया तथा सभी सदस्यों द्वारा अपना परिचय दिया गया।

डॉ. डी.पी. सिंह ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर संक्षिप्त चर्चा की। उन्होंने चर्चा की कि 'अपना पाठ्यक्रम तैयार करना' शिक्षार्थी केंद्रित होना चाहिए।

इसके पश्चात डॉ. सुनील कुमार ने आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ पर अपना प्रस्तुतीकरण प्रारंभ किया तथा 7 मानदंडों के बारे में संक्षिप्त चर्चा की। उन्होंने अपने प्रस्तुतीकरण की शुरुआत महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के शैक्षणिक प्रोफाइल से की। इसमें उन्होंने शोध क्षेत्रों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता बताई। समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत चिकित्सा को अधिक महत्व देने की आवश्यकता है, इसके लिए योग प्राकृतिक चिकित्सा जैसे नए पाठ्यक्रम शामिल किए जा सकते हैं। वैश्विक नागरिक विकसित करने की दृष्टि से, मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम जो औद्योगिक उन्मुख हैं, पाठ्यक्रम में जोड़े जा सकते हैं। प्रस्तुति के दौरान डॉ. डी. पी. सिंह ने सतत विकास लक्ष्यों के लिए डब्ल्यूएचओ और यूनेस्को के साथ सहयोग करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

माननीय वी.सी. महोदय ने जर्नल क्लब हाउस और फ्लिप क्लास रूम शुरू करने का सुझाव दिया। छात्रों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के साथ छात्रों की माइंड मैपिंग के लिए परामर्श प्रकोष्ठ शुरू करने की आवश्यकता है।

डॉ. जी.एन. सिंह ने परिसर में छात्र विविधता की आवश्यकता पर चर्चा की। इसके लिए प्रवेश के लिए अखिल भारतीय विज्ञापन दिया जाएगा और थाईलैंड, नेपाल, भूटान, मॉरीशस, श्रीलंका और जापान जैसे अन्य देशों के छात्रों को वरीयता दी जाएगी।

प्रस्तुति का समापन यह कहते हुए किया गया कि समग्र विश्वविद्यालय विकास के लिए 2075 तक का विजन बनाने एवं उस पर काम करने की आवश्यकता है।

12-14 जनवरी 2025 — 'आयुर्वेद–योग–नाथपंथ' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर 04.01.2025 को आयोजित माननीय कुलपति महोदय के साथ बैठक का कार्यवृत्त।

निर्णय

डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बैठक के लिए सभी का स्वागत किया और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए की जाने वाली व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी दी। वीसी सर ने समितियों द्वारा अब तक किए गए प्रयासों की सराहना की है और सभी को इसे सफल बनाने के लिए पूरी ताकत के साथ ईमानदारी से काम करने का निर्देश दिया है। पंजीयन समिति ने प्रतिनिधियों और अतिथियों को वितरित किए जाने वाले पंजीकरणों की संख्या और किट के बारे में प्रस्तुत

किया है। वैज्ञानिक समिति ने पूर्ण और समानांतर सत्रों के बारे में चर्चा की है और संगोष्ठी से संबंधित विषय पर एक विशेष व्याख्यान के लिए माननीय चांसलर सर को आमंत्रित करने का भी अनुरोध किया है। आवास समिति ने हमारे परिसर में उपलब्ध कमरों और बिस्तरों पर चर्चा की और मेहमानों और प्रतिनिधियों के आवास के लिए वैकल्पिक व्यवस्था के लिए अनुरोध किया। स्टेज कमेटी ने कोटेशन के साथ सजावट मॉडल प्रदर्शित किए और वीसी सर ने उनमें से सर्वश्रेष्ठ का चयन किया और अनुमोदित किया। खाद्य समिति ने मेनू और विक्रेताओं के प्रस्तावों का प्रस्ताव दिया है। उन्हें मंगलवार को रजिस्ट्रार सर के साथ बैठक में अंतिम रूप देने के लिए विक्रेताओं के साथ विवरण के साथ आने का आदेश दिया गया है। वीसी सर ने सभी समितियों को दैनिक गतिविधियों की योजना बनाने और उन्हें सावधानीपूर्वक लागू करने और मार्गदर्शन के लिए उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट करने के लिए कहा है। बैठक का समापन प्रधानाचार्य के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

२२ जनवरी २०२५ | माननीय कुलपति महोदय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक का कार्यवृत्त।

निर्णय

माननीय कुलपति 21 जनवरी, 2025 को आयोजित बैठक में माननीय कुलाधिपति द्वारा दिए गए निर्देशों को सभी को प्रेषित करें। अवकाश नीति रमा विश्वविद्यालय के मानदंडों के अनुसार तैयार की जानी चाहिए। यह निर्णय लिया गया है कि वेतन पैकेज राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं परिषद की आवश्यकता के अनुसार ग्रेड पे आधार पर होना चाहिए। पीटीएम सभी विभागों के लिए अनिवार्य है। धीमी गति से सीखने वालों का ख्याल रखें और उन्हें खुद को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करें। एलोपैथी अस्पताल के संचालन के लिए प्रिंसिपल मेडिकल कॉलेज और आयुर्वेद कॉलेज के लिए आयुर्वेद प्रिंसिपल जिम्मेदार होंगे। डॉ. डी. एस. अजेथा, डीन फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल अस्पताल के नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ का प्रबंधन करेंगे। एलोपैथी डॉक्टरों का रोस्टर तैयार किया जाना चाहिए और तदनुसार डॉक्टरों को प्रतिनियुक्त किया जाना चाहिए।

फरवरी, 2025 की प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विभागीय आयोजन

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर

1–7 फरवरी, 2025	एनाटॉमी मॉडल मेकिंग कम्पटीशन
7–8 फरवरी, 2025	अतिथि व्याख्यान (भ्रुण विज्ञान)
15 फरवरी, 2025	इंटरनल एक्जामिनेशन
20–22 फरवरी, 2025	प्रैक्टिकल / वाइवा

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

10–12 फरवरी, 2025	द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों की द्वितीय आंतरिक परीक्षा
13 फरवरी, 2025	आंतरिक प्रयोगात्मक परीक्षा

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

3–9 फरवरी, 2025	'सिमुलेशन और ओएससीई' पर क्षेत्रीय कार्यशाला।
04 फरवरी, 2025	विश्व कैंसर दिवस (स्वास्थ्य शिक्षा द्वारा गोरक्षनाथ अस्पताल में मनाया जाएगा)

फॉर्मेसी संकाय

17–22 फरवरी, 2025	डी फार्म के विद्यार्थियों की द्वितीय आंतरिक परीक्षा।
20–22 फरवरी, 2025	बी फार्म के विद्यार्थियों की प्रथम आंतरिक परीक्षा।

कृषि संकाय

15 फरवरी, 2025	विशिष्ट अतिथि व्याख्यान
24 फरवरी, 2025	शैक्षणिक भ्रमण

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

10 फरवरी, 2025	प्रथम अंतरिक मूल्यांकन

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

03–07 फरवरी, 2025	नागार्जुना बैच पीए–2
24–28 फरवरी, 2025	वागभट्ट बैच पीए–9

समाचार दर्पण

सीएम ने गोरखनाथ विश्वविद्यालय को दी संविधान की मूल प्रति

गोरखनाथ मंदिर में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यायल के कुलपति डा. सुरिंदर सिंह व कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव को संविधान की मूल प्रति सौंपते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ● सौ. गोरखनाथ मंदिर

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के लिए भारतीय संविधान की मूल प्रति भेंट स्वरूप दी। गोरखनाथ मंदिर के आवासीय परिसर के हाल में उन्होंने यह प्रति गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सुरिन्दर सिंह और कुलसचिव डा. प्रदीप राव को सौंपी। मुख्यमंत्री इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं।

कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखा जाएगा, जहां उसे सभी लोग देख सकेंगे। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी विश्वस्तरीय पुस्तकें मौजूद हैं। विश्वविद्यालय एलोपैथी, नर्सिंग और आयुर्वेद की उत्कृष्ट शिक्षा देने के साथ ही विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र के सरोकारों से भी जोड़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय में पिछले साल से एमबीबीएस की 100 सीटों पर भी पढ़ाई हो रही है। बीते वर्ष के आखिरी महीने में विश्वविद्यालय के मेडिकल कालेज ने एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर से साझेदारी के आधार पर लाइव आइसीयू सेवाएं प्रदान करने का समझौता किया है। विश्वविद्यालय का उद्घाटन 28 अगस्त, 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में किया था। संविधान की मूल प्रति प्राप्त करने के समय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह, रामजन्म सिंह, डा. शैलेंद्र प्रताप सिंह सहित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद आदि मौजूद रहे।

सीएम योगी ने महायोगी गोरखनाथ विवि को भेंट की संविधान की मूल प्रति

विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के लिए कुलपति और कुलसचिव को सौंपी प्रति

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 2 जनवरी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्या लय की लाइब्रेरी के लिए भारतीय संविधान की मूल प्रति भेंट की। गोरखनाथ मंदिर के आवासीय परिसर के हाल में उन्होंने अपने हाथों से यह प्रति महायोगी गोरखनाथ विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव को सौंपी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखा जाएगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पास हजारों विश्वस्तरीय पुस्तकों से युक्त अत्यंत समृद्ध लाइब्रेरी है। गोरखनाथ विश्वविद्यालय एलोपैथी, नर्सिंग और आयुर्वेद की उत्कृष्ट शिक्षा देने के साथ ही विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र के सरोकारों से भी जोड़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्या लय ने पिछले साल लोकसभा चुनाव से पहले 18 वर्ष के हो चुके युवाओं को मतदाता बनाने का विशेष अभियान चलाया था। इसके तहत विश्वविद्या लय के सभी छात्र-छात्राओं ने मतदाता के रूप में स्वयं को पंजीकृत कराया और चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग भी किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद से संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्या लय में इस सत्र से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की भी पढ़ाई हो रही है। नेशनल मेडिकल कमीशन ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्या यल को एमबीबीएस की सौ सीटों की मान्यता दी है। पिछले साल के अंतिम महीने यानी दिसम्बर 2024 में गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज ने एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर से साझेदारी के आधार पर लाइव आइसीयू सेवाएं प्रदान करने का समझौता किया है। उल्लेखनीय है कि 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कई अन्य स्थानीय राजनेताओं की मौजूदगी में गोरखनाथ विश्वविद्या लय का उद्घाटन किया था। तबसे यह विश्वविद्यालय निरंतर अभिनव प्रयोगों और राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए वैश्विक मानकों पर नित्य नई उपलब्धियां अर्जित कर रहा है। गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों भारतीय संविधान की मूल प्रति प्राप्त करने के समय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो.उदय प्रताप सिंह, सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य राम जन्म सिंह, दिग्विजयनाथ डिग्री कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ.शैलेंद्र प्रताप सिंह सहित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी ने महायोगी गोरखनाथ विवि को भेंट की संविधान की मूल प्रति

विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के लिए कुलपति और कुलसचिव को सौंपी प्रति

संवाददाता

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के लिए भारतीय संविधान की मूल प्रति भेंट की। गोरखनाथ मंदिर के आवासीय परिसर के हाल में उन्होंने अपने हाथों से यह प्रति महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव को सौंपी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखा जाएगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पास हजारों विश्वस्तरीय पुस्तकों से युक्त अत्यंत समृद्ध लाइब्रेरी है। गोरखनाथ विश्वविद्यालय एलोपैथी, नर्सिंग और आयुर्वेद की उत्कृष्ट शिक्षा देने के साथ ही विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र के सरोकारों से भी जोड़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय ने पिछले साल लोकसभा चुनाव से पहले 18 वर्ष के हो चुके युवाओं को मतदाता बनाने का विशेष अभियान चलाया था। इसके तहत विश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने मतदाता के रूप में स्वयं को पंजीकृत कराया और चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग भी किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद से संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में इस सत्र से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की भी पढ़ाई हो रही है। नेशनल मेडिकल कमीशन ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस की सौ सीटों की मान्यता दी है। पिछले साल के अंतिम महीने यानी दिसम्बर 2024 में गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज ने एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर से साझेदारी के आधार पर लाइव आइसीयू सेवाएं प्रदान करने का समझौता किया है। उल्लेखनीय है कि 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कई अन्य स्थानीय राजनेताओं की मौजूदगी में गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। तबसे यह विश्वविद्यालय निरंतर अभिनव प्रयोगों और राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए वैश्विक मानकों पर नित्य नई उपलब्धियां अर्जित कर रहा है। गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों भारतीय संविधान की मूल प्रति प्राप्त करने के समय महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य राम जन्म सिंह, दिग्विजयनाथ डिग्री कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ.शैलेंद्र प्रताप सिंह सहित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

योगी ने गोरखनाथ विवि को भेंट की संविधान की मूल प्रति

गोरखपुर (एसएनबी)। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को गोरखनाथ विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी को भारतीय संविधान की मूल प्रति भेंट की। गोरखनाथ मंदिर के आवासीय परिसर के हाल में उन्होंने अपने हाथों से यह प्रति गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.सुरिन्दर सिंह और कुलसचिव डॉ.प्रदीप राव को सौंपी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। कुलसचिव डॉ.प्रदीप राव ने बताया कि भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखा जाएगा। गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पास हजारों विश्वस्तरीय पुस्तकों से युक्त अत्यंत समृद्ध लाइब्रेरी है। गोरखनाथ विश्वविद्यालय एलोपैथी, नर्सिंग और आयुर्वेद की उत्कृष्ट शिक्षा देने के साथ ही विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र के सरोकारों से भी जोड़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय ने पिछले साल लोकसभा चुनाव से पहले 18 वर्ष के हो चुके युवाओं को मतदाता बनाने का विशेष अभियान चलाया था। इसके तहत विश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने मतदाता के रूप में स्वयं को पंजीकृत कराया और चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग भी किया।

गोरखनाथ विवि के कुलपति डा.सुरेंदर सिंह को भारतीय संविधान की मूल प्रति सौंपते सीएम योगी।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद से संचालित गुरु गोरखनाथ विवि में पिछले साल से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की भी पढ़ाई हो रही है। पिछले साल ही मेडिकल कौंसिल आफ इंडिया ने गोरखनाथ विवि को एमबीबीएस की सौ सीटें की मान्यता दी है। पिछले साल के अंतिम महीने यानी दिसम्बर 2024 में गोरखनाथ विवि के मेडिकल कालेज ने एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर से साझेदारी के आधार पर लाइव आइसीयू सेवाएं प्रदान करने का समझौता किया है। 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कई अन्य स्थानीय राजनेताओं की मौजूदगी में गोरखनाथ विवि का उद्घाटन किया था। तबसे यह विश्वविद्यालय निरंतर अभिनव प्रयोगों और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए वैश्विक मानकों पर नित्य नई उपलब्धियां अर्जित कर रहा है। गुरुवार को सीएम योगी आदित्यनाथ के हाथों भारतीय संविधान की मूल प्रति प्राप्त करने के समय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो.उदय प्रताप सिंह, सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र सहित अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी ने महायोगी गोरखनाथ विवि को भेंट की संविधान की मूल प्रति

विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के लिए कुलपति और कुलसचिव को सौंपी प्रति

संवाददाता

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी के लिए भारतीय संविधान की मूल प्रति भेंट की। गोरखनाथ मंदिर के आवासीय परिसर के हाल में उन्होंने अपने हाथों से यह प्रति महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव को सौंपी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि भारतीय संविधान की इस मूल प्रति को विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में रखा जाएगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पास हजारों विश्वस्तरीय पुस्तकों से युक्त अत्यंत समृद्ध लाइब्रेरी है। गोरखनाथ विश्वविद्यालय एलोपैथी, नर्सिंग और आयुर्वेद की उत्कृष्ट शिक्षा देने के साथ ही विद्यार्थियों को समाज और राष्ट्र के सरोकारों से भी जोड़ने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय ने पिछले साल लोकसभा चुनाव से पहले 18 वर्ष के हो चुके युवाओं को मतदाता बनाने का विशेष अभियान चलाया था। इसके तहत विश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने मतदाता के रूप में स्वयं को पंजीकृत कराया और चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग भी किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद से संचालित महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में इस सत्र से एमबीबीएस पाठ्यक्रम की भी पढ़ाई हो रही है। नेशनल मेडिकल कमीशन ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस की सौ सीटों की मान्यता दी है। पिछले साल के अंतिम महीने यानी दिसम्बर 2024 में गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज ने एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर से साझेदारी के आधार पर लाइव आइसीयू सेवाएं प्रदान करने का समझौता किया है। उल्लेखनीय है कि 28 अगस्त 2021 को तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और कई अन्य स्थानीय राजनेताओं की मौजूदगी में गोरखनाथ विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया था। तबसे यह विश्वविद्यालय निरंतर अभिनव प्रयोगों और राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए वैश्विक मानकों पर नित्य नई उपलब्धियां अर्जित कर रहा है। गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों भारतीय संविधान की मूल प्रति प्राप्त करने के समय महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य राम जन्म सिंह, दिग्विजयनाथ डिग्री कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ.शैलेंद्र प्रताप सिंह सहित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

विशाखा दिशा निर्देश से कई महिलाएं आज भी अनजान

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में मिशन शक्ति फेज-5 के अंतर्गत शुक्रवार को सेक्सुअल हैरेसमेंट प्रिवेंशनः अकार्डिंग टू सुप्रीम कोर्ट विशाखा गाइडलाइन' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डा. प्रेरणा अदिति ने कहा कि कामकाजी महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर होने वाले अभद्र व्यवहार, यौन अपराध, धमकाना, अश्लील टिप्पणी, गंदे इशारे, उत्पीड़न और प्रताड़ना को सेक्सुअल हैरेसमेंट कहा जाता है।

डा. प्रेरणा ने बताया कि कामकाजी महिलाओं को यौन अपराध, उत्पीड़न और प्रताड़ना से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने साल 2013 में विशाखा दिशा निर्देश को जारी किया था। हालांकि आज भी कई महिलाएं इस गाइडलाइन से अनजान हैं। विशाखा गाइडलाइन के तहत महिलाएं तुरंत शिकायत दर्ज करवा सकती हैं। इस दौरान डा. सुनील कुमार, डा. अनुपमा ओझा, डा. अमित दुबे, डा. पवन कुमार कन्नौजिया, डा. अवेद्यनाथ, डा. किरण, डा. कीर्ति आदि मौजूद रहे।

विशाखा दिशा निर्देश से कई महिलाएं आज भी अनजान : डॉ० प्रेरणा

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 3 जनवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में मिशन शक्ति फेज-5 के अंतर्गत शुक्रवार को सेक्सुअल हैरेसमेंट प्रिवेंशनः अकॉर्डिंग टू सुप्रीम कोर्ट विशाखा गाइडलाइन' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता संबद्ध विज्ञान संकाय में सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा कि कामकाजी महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर होने वाले अभद्र व्यवहार, यौन अपराध, धमकाना, अश्लील टिप्पणी, गंदे इशारे, उत्पीड़न और प्रताड़ना को सेक्सुअल हैरेसमेंट कहा जाता है। डॉ. प्रेरणा ने बताया कि कामकाजी महिलाओं को यौन अपराध, उत्पीड़न और प्रताड़ना से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने साल 2013 में विशाखा दिशानिर्देश को जारी किया था। हालांकि आज भी कई महिलाएं इस गाइडलाइन से अनजान हैं। विशाखा गाइडलाइन के तहत महिलाएं तुरंत शिकायत दर्ज करवा सकती हैं। इस गाइडलाइन को विशाखा और अन्य बनाम राजस्थान और भारत सरकार मामले के तौर पर भी जाना जाता है। राजस्थान के जयपुर में भंवरी देवी राज्य सरकार की महिला विकास कार्यक्रम के तहत कार्य करती थीं जो इस पूरी गाइडलाइन की केंद्र बिंदु है। 1992 में उनके साथ हुए दुष्कर्म के खिलाफ न्याय दिलाने के लिए कुछ गैर सरकारी संस्थाओं ने साथ मिलकर कर 1997 में विशाखा नाम से सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की। इस याचिका के तहत सुप्रीम कोर्ट ने यौन उत्पीड़न

को परिभाषित करते हुए दिशा-निर्देश जारी किया। डॉ. प्रेरणा ने कहा कि साल 2012 में वर्कप्लेस बिल लाया गया जिसमें लिंग समानता, जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को लेकर बड़े कानून बनाए गए। साल 2013 में सेक्सुअल हैरेसमेंट आफ वूमेन एट वर्कप्लेस एक्ट 2013 कानून पारित हुआ जिसे प्रिवेंशन, प्रोविजन और रिड्रेसल एक्ट भी कहा जाता है। इस गाइडलाइन के अनुसार 10 या 10 से अधिक कर्मचारी वाली कंपनी में इंटरनल कंपलेक्स कमेटी बनाना अनिवार्य है एवं कमेटी की अध्यक्षता महिला करेंगी तथा आधे से ज्यादा सदस्य महिला होंगी जिसमें से एक सदस्य यौन शोषण एनजीओ में कार्यरत महिला होंगी। व्याख्यान के दौरान डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दुबे, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवेद्यनाथ, डॉ. किरण, डॉ. कीर्ति, रश्मि झा, सृष्टि यदुवंशी, प्रज्ञा पांडेय, आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय आदि मौजूद रहे।

ज्यादातर कामकाजी महिलाएं विशाखा कमेटी के दिशा निर्देशों से हैं अनजान

गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति फेज-5 के अंतर्गत शुक्रवार को सेक्सुअल हैरेसमेंट प्रिवेंशनः अकॉर्डिंग टू सुप्रीम कोर्ट विशाखा गाइडलाइन विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता संबद्ध विज्ञान संकाय में सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा कि कामकाजी महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर होने वाले अभद्र व्यवहार, यौन अपराध, धमकाना, अश्लील टिप्पणी, गंदे इशारे, उत्पीड़न और प्रताड़ना को सेक्सुअल हैरेसमेंट कहा जाता है।

डॉ. प्रेरणा ने बताया कि कामकाजी महिलाओं को यौन अपराध, उत्पीड़न और प्रताड़ना से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने साल 2013 में विशाखा दिशानिर्देश को जारी किया था। हालांकि आज भी कई महिलाएं इस गाइडलाइन से अनजान हैं। विशाखा गाइडलाइन के तहत महिलाएं तुरंत शिकायत दर्ज करवा सकती हैं। इस गाइडलाइन को विशाखा और अन्य बनाम राजस्थान और भारत सरकार मामले के तौर पर भी जाना जाता है।

राजस्थान के जयपुर में भंवरी देवी राज्य सरकार की महिला विकास कार्यक्रम के तहत कार्य करती थीं जो इस पूरी गाइडलाइन की केंद्र बिंदु है। 1992 में उनके साथ हुए दुष्कर्म के खिलाफ न्याय दिलाने के लिए कुछ गैर सरकारी संस्थाओं ने साथ मिलकर कर 1997 में विशाखा नाम से सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की।

स्त्री अधिकार को लेकर बने हैं कई कानून

डॉ. प्रेरणा ने कहा कि साल 2012 में वर्कप्लेस बिल लाया गया जिसमें लिंग समानता, जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को लेकर बड़े कानून बनाए गए। साल 2013 में सेक्सुअल हैरेसमेंट आफ वूमेन एट वर्कप्लेस एक्ट 2013 कानून पारित हुआ जिसे प्रिवेंशन, प्रोविजन और रिड्रेसल एक्ट भी कहा जाता है। इस गाइडलाइन के अनुसार 10 या 10 से अधिक कर्मचारी वाली कंपनी में इंटरनल कंपलेक्स कमेटी बनाना अनिवार्य है। व्याख्यान के दौरान डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दुबे, डॉ. पवन कुमार कनौजिया, डॉ. अवेदनाथ, डॉ. किरण, डॉ. कीर्ति, रश्मि झा, सृष्टि यदुवंशी, प्रज्ञा पांडेय, आशुतोष मौजूद रहे।

विशाखा दिशा- निर्देश से कई महिलाएं आज भी हैं अनजान : डॉ. प्रेरणा

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति फेज-5 के अंतर्गत शुक्रवार को सेक्सुअल हैरेसमेंट प्रिवेंशन: अकॉर्डिंग टू सुप्रीम कोर्ट विशाखा गाइडलाइनक्ष विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता संबद्ध विज्ञान संकाय में सहायक आचार्य डॉ. प्रेरणा अदिति ने कहा कि कामकाजी महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर होने वाले अभद्र व्यवहार, यौन अपराध, धमकाना, अश्लील टिप्पणी, गंदे इशारे, उत्पीड़न और प्रताड़ना को सेक्सुअल हैरेसमेंट कहा जाता है।

उन्होंने बताया कि कामकाजी महिलाओं को यौन अपराध, उत्पीड़न और प्रताड़ना से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने साल 2013 में विशाखा दिशा निर्देश को जारी किया था। हालांकि आज भी कई महिलाएं इस गाइडलाइन से अनजान हैं।

उन्होंने बताया कि विशाखा गाइडलाइन के तहत महिलाएं तुरंत शिकायत दर्ज करवा सकती हैं। इस गाइडलाइन को विशाखा और अन्य बनाम राजस्थान और भारत सरकार मामले के तौर पर भी जाना जाता है।

राजस्थान के जयपुर में भंवरी देवी राज्य सरकार की महिला विकास कार्यक्रम के तहत कार्य करती थीं जो इस पूरी गाइडलाइन की केंद्र बिंदु है।

वर्ष 1992 में उनके साथ हुए दुष्कर्म के खिलाफ न्याय दिलाने के लिए कुछ गैर सरकारी संस्थाओं ने साथ मिलकर कर 1997 में विशाखा नाम से सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की। इस याचिका के तहत सुप्रीम कोर्ट ने यौन उत्पीड़न को परिभाषित करते हुए दिशा-निर्देश जारी किया।

डॉ. प्रेरणा ने कहा कि साल 2012 में वर्कप्लेस बिल लाया गया जिसमें लिंग समानता, जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को लेकर बड़े कानून बनाए गए।

साल 2013 में सेक्सुअल हैरेसमेंट आफ वूमेन एट वर्कप्लेस एक्ट 2013 कानून पारित हुआ जिसे प्रिवेंशन, प्रोविजन और रिड्रेसल एक्ट भी कहा जाता है।

कार्यालय जिला पंचायत ,देवरिया

पत्रांक सं०- 803/जि०पं० /देवरिया दिनांक 03.01.2025

ई-निविदा सूचना (Re-Tender)

समस्त जिला पंचायतो व राज्य सरकार के सिंचाई विभाग / लोक निर्माण विभाग में रजिस्ट्रीकृत ठेकेदार जो वर्ष 2024-25 के लिये पंजीकृत है, को सूचित किया जाता है कि मा० अध्यक्ष महोदय की स्वीकृति के क्रम में शासकीय अनुदान से परियोजनाओं की ई-निविदा दिनांक- 16.12.2024 को अपरान्ह 12:00 बजे तक ई-टेण्डरिंग पोर्टल बेबसाइट http://etender.up.nic.in पर आमन्त्रित की गयी थी जिसमें कुछ परियोजनाओं पर एकल निविदा तथा कुछ परियोजनाओं पर कोई भी निविदा न प्राप्त होने के कारण पुनः दिनांक 04.01.2025 को अपरान्ह 3:00 बजे से दिनांक- 10.01.2025

समाचार दर्पण

सशस्त्र बलों में विशिष्ट पहचान स्थापित कर रहीं महिलाएं : प्राचार्य

■ महायोगी गोरखनाथ विवि में मिशन शक्ति फेज-5 के तहत 'सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका' विषयक व्याख्यान

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति फेज-5 के तहत 'सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका' विषय पर व्याख्यान में मुख्य वक्ता श्री गोरखनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य कर्नल डा. अरविंद सिंह कुशवाहा ने कहा कि आज के दौर में महिलाएं सशस्त्र बलों में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर रही हैं।

प्राचार्य डा. कुशवाहा ने कहा कि भारतीय सेना में महिलाओं की भर्ती, भारत सरकार की सकारात्मक पहल रही है। महिलाओं में रचनात्मक सृजन और नवाचार, निर्णय लेने और परिणाम के प्रति समर्पण भाव अर्पण किया है। वर्तमान आंकड़ों में भारतीय थलसेना, वायुसेना और नौसेना में कुल नौ हजार चौरासी महिला कार्मिक सेवारत हैं, जो अपने अदम्य साहस और कर्तव्य निष्ठा से रक्षा क्षेत्र में इतिहास लिख रही है। एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि रक्षा क्षेत्र में महिलाओं के लिए अनंत स्वर्णिम द्वार खुले हुए हैं। आज, महिलाएं भारतीय सैन्य बलों में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं और उनकी भूमिका न केवल युद्धक गतिविधियों तक सीमित है, बल्कि वे रणनीतिक निर्णय लेने में भी शामिल हैं। कार्यक्रम का संचालन एनसीसी अंडर आफिसर अंशिका सिंह ने किया। इस अवसर पर रूप से फार्मेसी संकाय के प्राचार्य डा. शशिकांत सिंह, सहायक आचार्य डा. अभिषेक सिंह, जूही तिवारी, अंडर आफिसर अंशिका सिंह, आशुतोष मणि त्रिपाठी, अस्मिता सिंह, अभिषेक चौरसिया, खुशी यादव, शालिनी चौहान, संजना शर्मा, अमृता कन्नौजिया, अनुभव पाण्डेय, नीलेश यादव, अभिषेक मिश्रा, शिखर पाण्डेय, उजाला सिंह, पार्वती साहनी, अनुराधा विश्वकर्मा सहित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के सभी शिक्षक और छात्र मौजूद रहे।

आयुर्वेद, योग व नाथपंथ पर संगोष्ठी कल से

■ संगोष्ठी के दूसरे दिन होगा सीएम योगी का विशेष व्याख्यान

■ आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समझने का मिलेगा अवसर

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए पूर्वी यूपी में पहली बार अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयोजित हो रही इस तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को और समापन 14 को होगा।

संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि आयुर्वेद-योग-नाथपंथ विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को विश्वविद्यालय के पंचकर्म ऑडिटोरियम में पूर्वाह्न 11:30 बजे से होगा।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डॉ. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डॉ. वीएन जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी होंगे।

तीन दिवसीय संगोष्ठी में आयुर्वेद योग और नाथ पंथ पर होगा मंथन

संगोष्ठी के दूसरे दिन होगा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। आयुर्वेद, योग और नाथ पंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयोजित संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी और समापन 14 जनवरी को होगा। संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि 'आयुर्वेद-योग-नाथपंथ' विषयक अंतरराष्ट्रीय

संगोष्ठी में इस्राइल और श्रीलंका के विशेषज्ञ भी होंगे शामिल

संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पंचकर्म ऑडिटोरियम में पूर्वाह्न 11:30 बजे से होगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह करेंगे।

मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डॉ. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे।

ये लोग भी होंगे शामिल

बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल के निदेशक एवं कैंसर सर्जन डॉ. संजय माहेश्वरी, इंटरनेशनल राइस रिसर्च सेंटर (इरी) के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, एम्स भोपाल और एम्स गोरखपुर के कार्यकारी निदेशक डॉ. अजय सिंह, यूएसए में 'आपना' संस्था के अध्यक्ष डॉ. शेखर ए., विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर, ऐमिल के निदेशक डॉ. संचित शर्मा, गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. हिमांशु दीक्षित, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. रामकुमार जायसवाल व अन्य की विशेष सहभागिता रहेगी।

संगोष्ठी का समापन समारोह 14 जनवरी को अपराह्न दो बजे से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डॉ. वीएन जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी होंगे।

13 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का संबोधन होगा। वह संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथ पंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे। पांच वैज्ञानिक सत्र भी आयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों में देश और दुनिया के विद्वान आयुर्वेद, योग और नाथ पंथ के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा करते हुए आरोग्यता के विविध आयामों पर मंथन करेंगे।

फार्मेसी के क्षेत्र में एआई पर होगा साझा शोध कार्य

» महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और एमपीआईटी के बीच बैठक में बनी सहमति

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय के औषधि विज्ञान संकाय और महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर एआई के बीच गुरुवार को हुई एक बैठक में एआई एंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च इन फार्मेसी पर साझा शोध कार्य करने का प्रस्ताव हुआ है।

इस सहभागिता से महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय के औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर्स को एक नया प्लेटफॉर्म मिला है जिससे उनके शोधकार्य को भविष्य में एक विशेष महत्व मिलेगा। इस सहभागिता की शुरूआत में महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय में औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर पीयूष आनन्द, दिलीप मिश्रा, श्रेया मद्धेशिया और बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के अंकित पाण्डेय, करुणाकर प्रसाद द्विवेदी, अंकिता मालवीय और श्वेता यादव एवं औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ शशिकांत सिंह के साथ महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में हुई इस विशेष बैठक में सम्मिलित हुए। इस बैठक की अध्यक्षता महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के डॉयरेक्टर डॉ. सुधीर अग्रवाल ने की। बैठक में महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की डॉ. तृप्ति त्रिपाठी ने एआई एंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च पर एक प्रेजेंटेशन देते हुए इसके विभिन्न प्रारूप व अवसरों पर प्रकाश डाला।

फार्मेसी के क्षेत्र में एआई पर होगा साझा शोध कार्य

महायोगी गोरखनाथ विवि और एमपीआईटी के बीच बैठक में बनी सहमति

संवाददाता

गोरखपुर.। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय और महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमपीआईटी) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर एआई के बीच गुरुवार को हुई एक बैठक में एआई एंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च इन फार्मेसी पर साझा शोध कार्य करने का प्रस्ताव हुआ है। इस सहभागिता से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर्स को एक नया प्लेटफॉर्म मिला है जिससे उनके शोधकार्य को भविष्य में एक विशेष महत्व मिलेगा। इस सहभागिता की शुरुआत में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर पीयूष आनन्द, दिलीप मिश्रा, श्रेया मद्धेशिया और बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के अंकित पाण्डेय, करुणाकर प्रसाद द्विवेदी, अंकिता मालवीय और श्वेता यादव एवं औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ शशिकांत सिंह के साथ महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में हुई इस विशेष बैठक में सम्मिलित हुए। इस बैठक की अध्यक्षता महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के डॉयरेक्टर डॉ. सुधीर अग्रवाल ने की।

बैठक में महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की डॉ. तृप्ति त्रिपाठी ने एआई एंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च पर एक प्रेजेंटेशन देते हुए इसके विभिन्न प्रारूप व अवसरों पर प्रकाश डाला। बैठक के अंत में आभार ज्ञापन औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने किया।

फार्मेसी के क्षेत्र में एआई पर होगा साझा शोध कार्य

■ गोरखनाथ विवि और एमपीआईटी के बीच बैठक में बनी सहमति

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय और महाराणा प्रताप इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमपीआईटी) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर एआई के बीच गुरुवार को बैठक हुई। इस दौरान एआई एंड मशीन लर्निंग बेस्ड रिसर्च इन फार्मेसी पर साझा शोध कार्य करने का प्रस्ताव हुआ है।

सहभागिता से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर्स को एक नया प्लेटफॉर्म मिला है, जिससे उनके शोधकार्य को भविष्य में एक विशेष महत्व मिलेगा।

इस सहभागिता की शुरुआत में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में औषधि विज्ञान संकाय में पीएचडी कर रहे रिसर्च स्कॉलर पीयूष आनन्द, दिलीप मिश्रा, श्रेया मद्धेशिया और बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के अंकित पाण्डेय, करुणाकर प्रसाद द्विवेदी, अंकिता मालवीय और श्वेता यादव एवं औषधि विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह विशेष बैठक में शामिल हुए।

सशस्त्र बलों में अपनी विशिष्ट पहचान बना रहीं हैं महिलाएं

■ मिशन शक्ति फेज-5 के तहत 'सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका' विषय पर व्याख्यान

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य कर्नल (सेवानिवृत्त) डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा ने कहा कि आज के दौरान महिलाएं सशस्त्र बलों में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर रही हैं।

डॉ. कुशवाहा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति फेज-5 के तहत 'सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्तमान आंकड़ों में भारतीय थलसेना, वायुसेना और नौसेना में कुल नौ हजार चौरासी महिला कार्मिक सेवारत हैं। जो अपने अदम्य साहस और कर्तव्य निष्ठा से रक्षा क्षेत्र में स्वर्णिम इतिहास लिख रही है। इस अवसर पर एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि रक्षा क्षेत्र में महिलाओं के लिए अनंत स्वर्णिम द्वार खुले हुए हैं। संचालन एनसीसी अंडर आफिसर अंशिका सिंह ने किया। मौके पर फार्मेसी संकाय के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, सहायक आचार्य डॉ. अभिषेक सिंह, जूही तिवारी, अंडर आफिसर अंशिका सिंह, आशुतोष मणि त्रिपाठी, अस्मिता सिंह अभिषेक चौरसिया, खुशी यादव, शालिनी चौहान, संजना शर्मा, अमृता कन्नौजिया, अनुभव पांडेय, नीलेश यादव, अभिषेक मिश्रा उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

Gorakhpur to host int'l conference on Ayurveda

TIMES NEWS NETWORK

Gorakhpur: Mahayogi Gorakhnath University in Gorakhpur will host a three-day international conference on Ayurveda, Yoga, and the Nath tradition from Jan 12 to 14. Organised by Guru Gorakhnath Institute of Medical Sciences (Ayurveda College), the event will attract delegates from various countries. Chief minister Yogi Adityanath will deliver a special lecture on Jan 13, focusing on the contributions of Ayurveda, Yoga, and Nath tradition to humanity.

The inaugural session on Jan 12 at 11:30 am in the Panchakarma Auditorium will be chaired by Dr G N Singh, advisor to CM Yogi. Israeli Ayurveda expert Guy Levin will be the chief guest. AYUSH University VC Prof A K Singh and Sri Lankan Ayurveda specialists Prof Piriyani Peris and Dr Mayaram Uniyal will be present on the occasion.

To be organised by Guru Gorakhnath Institute of Medical Sciences (Ayurveda College) from Jan 12 to 14

The closing ceremony on Jan 14 will be led by vice-chancellor Prof Surinder Singh. Notable guests will include Sri Lankan expert Dr Virarthna, Israeli expert Aunt Levin, Dr V N Joshi from the England Ayurveda Association, and Dr Tanmay Goswami from Goswal Foundation, Udupi. Five scientific sessions will explore the interconnections between Ayurveda, Yoga, and Nath tradition.

गोरखपुर में होगी आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

» महायोगी गोरखनाथ विवि में होगा तीन दिवसीय आयोजन, कई देशों के प्रतिनिधि मंडल करेंगे प्रतिभाग

» संगोष्ठी के दूसरे दिन होगा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान,

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए गोरखपुर में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की तरफ से अयोजित हो रही इस तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 को और समापन 14 जनवरी को होगा।

खास बात यह भी है कि

कई देशों के प्रतिनिधि मण्डल की सहभागिता वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि आयुर्वेद-योग-नाथपंथ विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का पंचकर्म ऑडिटोरियम में पूर्वाह्न 11:30 बजे से होगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डॉ. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे।

संगोष्ठी का समापन समारोह 14 जनवरी को अपराह्न 2 बजे से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डॉ. वीएन जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी होंगे।

डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि दिन तीन की इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश और दुनिया से आए डेलीगेट्स, आयुर्वेद कॉलेज के विद्यार्थियों को दूसरे दिन 13 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में हाआयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदानह्ण विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे।

उन्होंने बताया कि संगोष्ठी में कुल पांच वैज्ञानिक सत्र भी अयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों में देश और दुनिया के विद्वान आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा करते हुए आरोग्यता के विविध अयामों पर विशद मंथन करेंगे।

अलग-अलग वैज्ञानिक सत्रों में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों के अलावा बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल के निदेशक एवं प्रख्यात कैंसर सर्जन डॉ संजय महेश्वरी, इंटरनेशनल राइस रिसर्च सेंटर (ईरी) के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, एम्स भोपाल के निदेशक और एम्स गोरखपुर के कार्यकारी निदेशक डॉ. अजय सिंह, यूएसए में हाआपनाह्ण संस्था के अध्यक्ष डॉ. शेखर ए., विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर, बीएचयू वाराणसी के प्रो. बीएम सिंह, एम्स गोरखपुर के डॉ. चेतन साहनी, आईआईटी दिल्ली के प्रो. केके दीपक, बीएचयू के डॉ. अमित कुमार नायक, आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज मैंगलौर के डॉ. प्रह्लाद डीएस, बीएचयू वाराणसी के प्रो. केके पांडेय, ऐमिल के निदेशक डॉ. संचित शर्मा, बीएचयू वाराणसी की प्रो. नम्रता जोशी, मंदसौर विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश के एमए नायडू और इसी विश्वविद्यालय के प्रो. सुनील कुमार पांडेय, गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. हिमांशु दीक्षित, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. रामकुमार जायसवाल, गुरु गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा आदि की विशेष सहभागिता रहेगी।

गोरखपुर में होगी आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

◦ महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में होगा तीन दिवसीय आयोजन, कई देशों के डेलीगेट्स करेंगे प्रतिभाग

◦ संगोष्ठी के दूसरे दिन होगा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान

◦ आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने का मिलेगा अवसर, आरोग्यता के विविध आयामों पर होगा मंथन

गोरखपुर (विधान केसरी)। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए गोरखपुर में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज ;आयुर्वेद कॉलेजद्ध की तरफसे आयोजित हो रही इस तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को और समापन 14 जनवरी को होगा। खास बात यह भी कि कई देशों के डेलीगेटस की सहभागिता वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि आयुर्वेद-योग-नाथपंथ विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का पंचकर्म ऑडिटोरियम में पूर्वाह्न 11:30 बजे से होगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डॉ. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे। संगोष्ठी का समापन समारोह 14 जनवरी को अपराह्न 2 बजे से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डॉ. वीएन जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी होंगे। डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि दिन तीन की इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश और दुनिया से आए डेलीगेट्स, आयुर्वेद कॉलेज के विद्यार्थियों को दूसरे दिन 13 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे। संगोष्ठी में कुल पांच वैज्ञानिक सत्र भी आयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों में देश और दुनिया के विद्वान आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा करते हुए आरोग्यता के विविध आयामों पर विशद मंथन करेंगे।

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी कल से

गोरखपुर: आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए गोरखपुर में 12 जनवरी से 14 जनवरी तक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी होगी।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल सइंसेज (आयुर्वेद कालेज) की तरफ से आयोजित हो रही इस तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी कई देशों के डेलीगेट्स भी प्रतिभाग करेंगे। संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि 'आयुर्वेद-योग-नाथपंथ' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पंचकर्म आडिटोरियम में सुबह 11:30 बजे से होगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुष विश्वविद्यालय के

कुलपति प्रो. एके सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डा. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे।

संगोष्ठी का समापन समारोह 14 जनवरी को दोपहर दो बजे से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डा. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डा. वीएन जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डा. तन्मय गोस्वामी होंगे।

डा. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि देश और दुनिया से आए डेलीगेट्स, आयुर्वेद कालेज के विद्यार्थियों को 13 जनवरी को सुबह 11 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे। संगोष्ठी में कुल पांच वैज्ञानिक सत्र भी आयोजित किए जाएंगे।

इन सत्रों में देश और दुनिया के विद्वान आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा करते हुए आरोग्यता के विविध आयामों पर विशद मंथन करेंगे।

• महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में होगा तीन दिवसीय भव्य आयोजन

• कई देशों के डेलीगेट्स करेंगे प्रतिभाग, दूसरे दिन मुख्यमंत्री योगी करेंगे संबोधित

एम्स गोरखपुर के कार्यकारी निदेशक का भी होगा व्याख्यान

अलग-अलग वैज्ञानिक सत्रों में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों के अलावा बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल के निदेशक एवं प्रख्यात कैंसर सर्जन डा. संजय माहेश्वरी, इंटरनेशनल राइस रिसर्च सेंटर (ईरी) के साउथ एशिया निदेशक डा. सुधांशु सिंह, एम्स भोपाल व गोरखपुर के कार्यकारी निदेशक प्रो. अजय सिंह, यूएसए में 'आपना' संस्था के अध्यक्ष डा. शेखर ए, विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डा. जीएस तोमर, बीएचयू वाराणसी के प्रो. बीएम सिंह, एम्स गोरखपुर के डा. चेतन साहनी, आईआईटी दिल्ली के प्रो. केके दीपक, बीएचयू के डा. अमित कुमार नायक, आयुर्वेद मेडिकल कालेज मैंगलोर के डा. प्रह्लाद डीएस, बीएचयू वाराणसी के प्रो. केके पांडेय, ऐमिल के निदेशक डा. संचित शर्मा, बीएचयू वाराणसी की प्रो. नम्रता जोशी, मंदसौर विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश के एमए नायडू और इसी विश्वविद्यालय के प्रो. सुनील कुमार पांडेय, गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डा. हिमांशु दीक्षित, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डा. रामकुमार जायसवाल, गुरु गोरखनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डा. अरविंद सिंह कुशवाहा आदि की विशेष सहभागिता रहेगी।(विज्ञप्ति)

गोरखपुर में होगी आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में होगा तीन दिवसीय आयोजन, कई देशों के डेलीगेट्स करेंगे प्रतिभाग, संगोष्ठी के दूसरे दिन होगा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान, आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने का मिलेगा अवसर, आरोग्यता के विविध आयामों पर होगा मंथन

गोरखपुर। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए गोरखपुर में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयोजित हो रहे इस तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को और समापन 14 जनवरी को होगा। खास बात यह भी कि कई देशों के डेलीगेट्स की सहभागिता वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि 'आयुर्वेद-योग-नाथपंथ' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 12 जनवरी को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का पंचकर्म ऑडिटोरियम में पूर्वाह्न 11:30 बजे से होगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ, गई लेविन और विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, श्रीलंका के मशहूर आयुर्वेद चिकित्सक प्रो. पिरयानी पेरिस और श्रीलंका के ही डॉ. मायाराम उनियाल उपस्थित रहेंगे। संगोष्ठी का समापन समारोह 14 जनवरी को अपराह्न 2 बजे से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह की अध्यक्षता में होगा। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीलंका के ख्यातिलब्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विरार्थना और विशिष्ट अतिथि इजराइल की आयुर्वेद विशेषज्ञ आंट लेविन, इंग्लैंड आयुर्वेद एसोसिएशन के डॉ. वीएन जोशी व गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी होंगे। डॉ. गिरिधर वेदांतम ने बताया कि दिन तीन की इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश और दुनिया से आए डेलीगेट्स, आयुर्वेद कॉलेज के विद्यार्थियों को दूसरे दिन 13 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे। संगोष्ठी में कुल पांच वैज्ञानिक सत्र भी आयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों में देश और दुनिया के विद्वान आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक संबंधों पर चर्चा करते हुए आरोग्यता के विविध आयामों पर विशद मंथन करेंगे। अलग-अलग वैज्ञानिक सत्रों में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों के अलावा बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल के निदेशक एवं प्रख्यात कैंसर सर्जन डॉ संजय माहेश्वरी, इंटरनेशनल राइस रिसर्च सेंटर (ईरी) के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, एम्स भोपाल के निदेशक और एम्स गोरखपुर के कार्यकारी निदेशक डॉ. अजय सिंह, यूएसए में 'आपना' संस्था के अध्यक्ष डॉ. शेखर ए., विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर, बीएचयू वाराणसी के प्रो. बीएम सिंह, एम्स गोरखपुर के डॉ. चेतन साहनी, आईआईटी दिल्ली के प्रो. केके दीपक, बीएचयू के डॉ. अमित कुमार नायक, आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज मैंगलोर के डॉ. प्रह्लाद डीएस, बीएचयू वाराणसी के प्रो. केके पांडेय, ऐमिल के निदेशक डॉ. संचित शर्मा, बीएचयू वाराणसी की प्रो. नम्रता जोशी, मंदसौर विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश के एमए नायडू और इसी विश्वविद्यालय के प्रो. सुनील कुमार पांडेय, गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. हिमांशु दीक्षित, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. रामकुमार जायसवाल, गुरु गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा आदि की विशेष सहभागिता रहेगी।

समाचार दर्पण

मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं सूक्ष्म जीव

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में शनिवार को कृषि में सूक्ष्मजीव विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. संजय कुमार गुप्ता उपस्थित रहे। डॉ. गुप्ता ने कहा कि सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसमें सूक्ष्म जीवों की विशेष उपयोगिता रहेगी। बताया कि रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक का अत्याधिक उपयोग मृदा का क्षरण करने के साथ उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवों पर दुष्प्रभाव डाल रहा है। इससे फसलों की पैदावार में गिरावट देखी जा रही है।

मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं सूक्ष्म जीव : संजय गुप्ता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में शनिवार को 'कृषि में सूक्ष्मजीव' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थितदिल्ली विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. संजय कुमार गुप्ता ने विषय पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. गुप्ता ने कहा कि सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसमें सूक्ष्म जीवों की विशेष उपयोगिता रहेगी। उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक का अत्याधिक उपयोग मृदा का क्षरण करने के साथ उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवों पर दुष्प्रभाव डाल रहा है। इससे फसलों की पैदावार में गिरावट देखी जा रही है। उन्होंने बताया कि कृषि में इस्तेमाल होने वाले सूक्ष्मजीव जैसे राइज़ोबैक्टीरिया, माइकोराइज़ा, ट्राइकोडर्मा, बैसिलस बैक्टीरिया, एज़ोस्पिरिलम, स्यूडोमोनास महत्वपूर्ण हैं। ये मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं, पौधों को पोषक तत्व देते हैं, मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों को तोड़ते हैं, मिट्टी में जैविक संतुलन बनाए रखते हैं, पौधों को रोगों से लड़ने में सहायता प्रदान करते है।

'मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं सूक्ष्म जीव'

महायोगी गोरखनाथ विवि के कृषि संकाय में व्याख्यान का आयोजन

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में शनिवार को 'कृषि में सूक्ष्मजीव' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसमें सूक्ष्म जीवों की विशेष उपयोगिता रहेगी।

डॉ. गुप्ता ने बताया कि रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक का अत्यधिक उपयोग मृदा का क्षरण करने के साथ उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवों पर दुष्प्रभाव डाल रहा है। इससे फसल की पैदावार में गिरावट देखी जा रही है। उन्होंने बताया कि कृषि में इस्तेमाल होने वाले सूक्ष्मजीव जैसे राइज़ोबैक्टीरिया, माइकोराइज़ा, ट्राइकोडर्मा, बैसिलस बैक्टीरिया, एज़ोस्पिरिलम, स्यूडोमोनास महत्वपूर्ण हैं। ब्यूरो

मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं सूक्ष्म जीव: डॉ. संजय

गोरखपुर। (स्पष्ट आवाज)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में शनिवार को 'कृषि में सूक्ष्मजीव' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थितदिल्ली विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. संजय कुमार गुप्ता ने विषय पर विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. गुप्ता ने कहा कि सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसमें सूक्ष्म जीवों की विशेष उपयोगिता रहेगी। उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक का अत्याधिक उपयोग मृदा का क्षरण करने के साथ उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवों पर दुष्प्रभाव डाल रहा है। इससे फसलों की पैदावार में गिरावट देखी जा रही है। उन्होंने बताया कि कृषि में इस्तेमाल होने वाले सूक्ष्मजीव जैसे राइज़ोबैक्टीरिया, माइकोराइज़ा, ट्राइकोडर्मा, बैसिलस बैक्टीरिया, एज़ोस्पिरिलम, स्यूडोमोनास महत्वपूर्ण हैं। ये मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं, पौधों को पोषक तत्व देते हैं, मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों को तोड़ते हैं, मिट्टी में जैविक संतुलन बनाए रखते हैं, पौधों को रोगों से लड़ने में सहायता प्रदान करते हैं तथा पौधों की वृद्धि और बीज उत्पादन में मदद करते हैं।

आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान : लेविन

» महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

» अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के वैज्ञानिक सत्रों में हुई योग और आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ एवं आयुर्वेद प्रगति संस्था के निदेशक वैद्य गुई लेविन ने कहा कि मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान है और नाथपंथ इन दोनों के प्रसार और विस्तार में सतत अग्रणी भूमिका का निर्वहन करता रहा है।

पंचकर्म और काय चिकित्सा के विशेषज्ञ वैद्य लेविन ने मानवता की स्वास्थ्य रक्षा के लिए आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि आयुर्वेद न केवल अत्यंत प्राचीन बल्कि पूरी तरह हानिरहित चिकित्सा पद्धति है। प्राचीनकाल में यह जीवनशैली का हिस्सा था, बीच के कालखंड में कुछ विस्मृत करने की कोशिश हुई लेकिन वैश्विक महामारी कोरोना के आने के बाद पूरी दुनिया ने दोबारा इसके महत्व को अंगीकार किया है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रोविंशियल आयुर्वेद हास्पिटल श्रीलंका की पूर्व निदेशक डॉ. अनुल इरूलु कुम्बरी ने कहा कि प्राचीन सांस्कृतिक और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को लेकर श्रीलंका और भारत दोनों देशों की अपनी साझा विरासत है।

दूसरे विशिष्ट अतिथि श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डॉ.. मायाराम उनियाल ने कहा कि वैद्य शब्द गुरु गोरखनाथ ने दिया है। नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक भगवान शिव ही परम ज्ञान के ज्ञाता हैं। वे रसशास्त्र के ज्ञाता और ज्ञान प्रदाता हैं। इस अवसर पर उन्होंने अपनी दो पुस्तकों को महायोगी गुरु गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह को भेंट की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि नाथपंथ ने योग और आयुर्वेद को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित करते हुए आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मानव जीवन की आरोग्यता में मील का पत्थर साबित होगी। इस विरासत को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सपना इस महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में साकार होता दिख रहा है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रसायनशास्त्र और भैषज्य कल्पना विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ. के. राम चंद रेड्डी ने सम्मेलन के विषय और इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा की और आयुर्वेद के महत्व को रेखांकित किया।

अतिथियों के सम्मान के बाद स्वागत संबोधन आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में चार सौ अधिक प्रतिनिधियों की सहभागिता है। संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र में कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ प्रदीप राव, आयुर्वेद कालेज के डॉ नवीन, डॉ दीपू मनोहर, डॉ विनम शर्मा, डॉ साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ देवी और डॉ प्रिया और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

दूसरे दिन होगा मुख्यमंत्री का विशेष व्याख्यान

कई देशों के डेलीगेट्स की सहभागिता वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन सोमवार को मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे।

Solution to global health challenges is possible through Ayurveda - Dr. G.S. Tomar

JE CORRESPONDENT

Prayagraj: Addressing the International Conference on Ayurveda, Yoga and Nathpanth at Guru Gorakhnath Institute of Medical Sciences, MGU, Gorakhpur under the Chief Patronage of Honorable Chief Minister, UP, Shri Yogi Adityanath Ji Chancellor of the University on the topic "Present healthcare Challenges and Ayurveda", Prof. (Dr.) G.S. Tomar, Founder President of Vishwa Ayurveda Mission and National Executive Member of Arogya Bharati said that the popularity and demand of Ayurvedic immunomodulator medicines has tremendously increased unprecedentedly during the Corona period. While there has been significant decrease in the demand for antibiotics. It has turned the drug market towards a new direction. This situation is not limited to the walls of our country only but is spread across the entire globe. In view of the increasing popularity of Ayurvedic products, the responsibility of the doctors associated with Ayurveda as well as the medicine manufacturing companies has become challenging. In such a situation, we will have to first pay attention to the quality of medicines so that the increasing public aspirations can be properly addressed. Dr. Tomar also clarified that

the suffering humanity of the world is looking towards Ayurveda with hope not only for infectious diseases like corona but also for effective and complete treatment of lifestyle diseases like diabetes, hypertension, arthritis, asthma and cancer etc. which are increasing nowadays. To establish Ayurveda on the global level, we will have to certify time-tested Ayurvedic medicines on current scientific parameters so that our medicinal products can be accepted globally. Apart from this, products made from herbs like Ashwagandha, Giloy, Tulsi, Cinnamon, Amla, Turmeric etc. will have to be promoted at the government level and at the same time, their quality will also have to be kept under strict supervision so that these products do not harm the increasing dimensions of popularity. In incurable diseases like cancer, Ayurveda is not only capable of adding a few days, months or years to the life of the patient, but it also has the unique ability to reduce the fatal side effects of chemotherapy and radiotherapy along with satisfactory improvement in the quality of life. Similarly, Ayurveda not only controls the increased blood sugar in diabetic patients, but it also saves the patient's heart, kidneys, retina, nervous system and other very important organs from damage. In the current global scenario, serious challenges like anti-microbial resistance, increasing threat of environmental pollution-related diseases, fatal side effects of chemical and synthetic western medicines and increasing number of lifestyle-related diseases are a matter of concern for the medical world. Being a pro-natured, holistic, individualized and environment-friendly system, Ayurveda has become a center of attraction at the global level today. I believe that Ayurveda can play an important role in solving all these problems. The session was chaired by Dr Venkat Joshi of United Kingdom.

समाचार दर्पण

मुंबई -सोमवार, 13 जनवरी, 2025

देश/विदेश

वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान आयुर्वेद से संभव - डॉ जी एस तोमर

गोरखपुर। योगी आदित्यनाथ जी कुलाधिपति के मुख्य संरक्षकत्व में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान गोरखपुर में आयुर्वेद, योग एवं नाथपंथ पर प्रायोजित अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के प्रथम वैज्ञानिक सत्र को सम्बोधित करते हुए 'वर्तमान स्वास्थ्य देखभाल की चुनौतियाँ एवं आयुर्वेद' विषय पर अपने उद्बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं आरोग्य भारती के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने कहा कि कोरोना कालखण्ड में आयुर्वेद की लोकप्रियता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। आयुर्वेद उत्पादों की माँग यकायक विश्व बाज़ार में कई गुना हो गई है। एक ओर एण्टीबायोटिक औषधियों की माँग में कमी दर्ज की गई है वहीं दूसरी ओर व्याधिक्षमत्व या इम्युनिटी वर्धक औषधियों की माँग में बेतहाशा वृद्धि ने दवा बाज़ार को नई दिशा की ओर मोड़ दिया है। यह स्थिति केवल हमारे देश की चारदीवारी तक ही सीमित न रहकर सम्पूर्ण भूमण्डल तक व्याप्त है। आयुर्वेदीय उत्पादों की बढ़ती लोकप्रियता के दृष्टिगत आयुर्वेद विधा से जुड़े चिकित्सकों के साथ साथ औषधि निर्माण शालाओं का दायित्व भी चुनौतीपूर्ण हो गया है। ऐसी स्थिति में

हमें सर्वप्रथम औषधियों की गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा जिससे बढ़ती हुई जन आकांक्षाओं का सम्यक समाधान हो सके। डॉ तोमर ने यह भी स्पष्ट किया कि न केवल कोरोना जैसे संक्रामक रोगों के लिए अपितु आजकल बढ़ रहे मधुमेह, उच्चरक्तचाप, गठिया, दमा एवं कैंसर आदि जीवनशैली जन्य रोगों के प्रभावी एवं समूल उपचार के लिए भी विश्व की पीड़ित मानवता आयुर्वेद की तरफ़ आशान्वित दृष्टि से देख रही है। वैश्विक धरातल पर आयुर्वेद को स्थापित करने के लिए हमें समय सिद्ध आयुर्वेदीय औषधियों को वैज्ञानिक मापदण्डों पर प्रमाणित करना होगा ताकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारे औषधि उत्पाद जन ग्राह्य हो सकें। इसके अलावा अश्वगंधा, गिलोय, तुलसी, दालचीनी, आँवला, हल्दी आदि औषधियों से निर्मित उत्पादों को शासन स्तर पर बढ़ावा देना होगा तथा साथ ही साथ इनकी गुणवत्ता पर भी कड़ी दृष्टि रखनी होगी ताकि ये उत्पाद लोकप्रियता के बढ़ते हुए आयामों को क्षति न पहुँचा सकें। कैंसर जैसी लाइलाज बीमारियों में आयुर्वेद न केवल रोगी के जीवन में कुछ दिन, माह या वर्ष जोड़ने में सक्षम है अपितु इससे जीवन की गुणवत्ता में संतोषजनक सुधार के साथ साथ कीमोथेरेपी एवं रेडियोथेरेपी के घातक दुष्प्रभावों को कम करने की भी अद्वितीय क्षमता है। इसी प्रकार डायबिटीज़ के रोगियों में आयुर्वेद से न केवल बढ़ी हुई रक्त शर्करा का नियंत्रण होता है अपितु इससे रोगी के हृदय, गुर्दे, रेटिना, नाड़ी तंत्र आदि अति महत्वपूर्ण अंगों को क्षति से बचाया जा सकता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में एण्टी माइक्रोबियल रजिस्टेन्स, पर्यावरण प्रदूषण जन्य रोगों का बढ़ता हुआ खतरा, रासायनिक एवं संश्लेषित पाश्चात्य औषधियों के घातक दुष्प्रभाव एवं विकृत जीवनशैली जन्य रोगों की बढ़ती हुई संख्या जैसी गम्भीर चुनौतियाँ चिकित्सा जगत की चिंता का विषय हैं। आयुर्वेद एक प्रोनेचर, होलिस्टिक, इन्डीवीजुअलाइज्ड एवं इनवायरन्मेंट फ्रेन्डली विधा होने के कारण आज वैश्विक धरातल पर आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। मेरा विश्वास है कि इन सभी समस्याओं के समाधान में आयुर्वेद महती भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान : गुई लेविन

गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। इसका विषय आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंध है। पहले दिन मुख्य अतिथि इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ एवं आयुर्वेद प्रगति संस्था के निदेशक वैद्य गुई लेविन ने कहा कि मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान हैं। नाथपंथ इन दोनों के प्रसार और विस्तार में सतत अग्रणी भूमिका का निर्वहन करता रहा है। डॉ. लेविन ने कहा कि गोरखनाथ की भूमि दिव्यता में येरुशलम जैसा प्रतीत होता है। अपनी वृत्ति को छोड़कर भारत में आकर योग और अध्यात्म को सीखकर मेरा जन्म धन्य हुआ। उसी का प्रचार प्रसार इजरायल में कर रहा हूं।

प्रोविंशियल आयुर्वेद हास्पिटल श्रीलंका की पूर्व निदेशक डॉ. अनुला इल्लु कुम्बरी ने कहा कि प्राचीन सांस्कृतिक और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को लेकर श्रीलंका और भारत दोनों देशों की अपनी साझा विरासत है। श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डॉ. मायाराम उनियाल ने कहा कि वैद्य शब्द गुरु गोरखनाथ ने दिया है। नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक भगवान शिव ही पारद ज्ञान के ज्ञाता हैं। वे रसशास्त्र के ज्ञाता और ज्ञान प्रदाता हैं। इस अवसर पर उन्होंने अपनी दो पुस्तकों को महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह को भेंट की।

भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि नाथपंथ ने योग और आयुर्वेद को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित करते हुए आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मानव जीवन की आरोग्यता में मील का पत्थर साबित होगी। स्वागत संबोधन आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में चार सौ अधिक प्रतिनिधियों की सहभागिता है। संगोष्ठी के पहले दिन उद्घाटन सत्र में कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, बीएचयू के रसायनशास्त्र के वरिष्ठ आचार्य डॉ. के. राम चंद्र रेड्डी, आयुर्वेद कॉलेज के डॉ. नवीन, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी और डॉ. प्रिया और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

पूरी दुनिया दे रही आयुर्वेद के प्रयोग पर जोर : डॉ. शेखर : एसोसिएशन ऑफ आयुर्वेदा प्रोफेशनल्स ऑफ नॉर्थ अमेरिका के अध्यक्ष डॉ. शेखर अन्नामबाटला ने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित प्रमुख स्वास्थ्य पहलुओं पर चर्चा की। बताया कि रोगों के निदान में आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा पद्धति, दोनों की अपनी विशेषताएं हैं।

डॉ. जयंत कुमार भदौरिया भृगु योग परंपरा का सविस्तार परिचय कराया। एम्स गोरखपुर के डॉ. चेतन शाहनी ने पुरुष बांझपन के कारणों पर चर्चा की। बीएचयू में शिशु रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. बीएम सिंह ने शिशुओं की प्रतिरक्षा को बढ़ाने में स्वर्णप्राशन की भूमिका पर प्रकाश डाला।

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मौजूद विशेषज्ञ।

आज होगा मुख्यमंत्री का विशेष व्याख्यान

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन सोमवार (13 जनवरी) को मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे।

विश्व बाजार में बढ़ी आयुर्वेद उत्पादों की मांग : डॉ. तोमर

संगोष्ठी के प्रथम वैज्ञानिक सत्र में 'वर्तमान स्वास्थ्य देखभाल की चुनौतियां एवं आयुर्वेद' विषय पर विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) जीएस तोमर ने ऑनलाइन अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि कोरोना कालखण्ड में आयुर्वेद की लोकप्रियता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। एक ओर एण्टीबायोटिक औषधियों की मांग में कमी दर्ज की गई है, वहीं दूसरी ओर व्याधिक्षमत्व या इम्युनिटी वर्धक औषधियों की मांग में बेतहाशा वृद्धि ने दवा बाजार को नई दिशा की ओर मोड़ दिया है।

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि। विज्ञप्ति

नाथपंथ ने योग और आयुर्वेद को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि नाथपंथ ने योग और आयुर्वेद को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बीएचयू के रसायनशास्त्र और भैषज्य कल्पना विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ. के. राम चंद्र रेड्डी ने सम्मेलन के विषय पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र में कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, आयुर्वेद कॉलेज के डॉ. नवीन और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयुर्वेद, योग और नाथ पंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। इस्राइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ और आयुर्वेद प्रगति संस्था के निदेशक वैद्य गुई लेविन ने कहा कि मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान हैं। नाथपंथ इन दोनों के प्रसार और विस्तार में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। नाथ पंथ से जुड़े योगियों ने योग और आयुर्वेद को न केवल स्वयं अपनाया बल्कि आमजन को भी इसके लिए प्रेरित किया।

वैद्य लेविन रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारंभ सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित लोग। विज्ञप्ति

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए वैद्य लेविन ने कहा कि आयुर्वेद न केवल अत्यंत प्राचीन बल्कि पूरी तरह हानिरहित चिकित्सा पद्धति है। प्राचीनकाल में यह जीवनशैली का हिस्सा था। डॉ. जयंत कुमार भदौरिया ने कहा कि भृगु योग परंपरा वैदिक काल के महान सप्तर्षियों में से एक भृगु ऋषि के नाम पर आधारित है। इसके अलावा एम्स गोरखपुर के शरीर रचना विभाग के डॉ. चेतन ने पुरुष बांझपन में योग और होलिस्टिक उपचार की भूमिका पर प्रकाश डाला। वहीं, बीएचयू में शिशु रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. बीएम सिंह ने शिशुओं की प्रतिरक्षा को बढ़ाने में स्वर्णप्राशन की भूमिका पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि प्रोविंशियल आयुर्वेद हॉस्पिटल श्रीलंका की पूर्व निदेशक डॉ. अनुला इल्लु कुम्बरी ने कहा कि प्राचीन सांस्कृतिक और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को लेकर दोनों देश की अपनी साझा विरासत है। वहीं विशिष्ट अतिथि श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डॉ. मायाराम उनियाल ने कहा कि वैद्य शब्द गुरु गोरखनाथ ने दिया है।

आज होगा सीएम योगी का विशेष व्याख्यान

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन सोमवार को मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा।

'बाजार में आयुर्वेद उत्पादों की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि'

संगोष्ठी के प्रथम वैज्ञानिक सत्र में 'वर्तमान स्वास्थ्य देखभाल की चुनौतियां एवं आयुर्वेद' विषय पर जानकारी देते हुए विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष प्रो. जीएस तोमर ने कहा कि कोरोना काल में आयुर्वेद की लोकप्रियता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। एसोसिएशन ऑफ आयुर्वेदा प्रोफेशनल्स ऑफ नॉर्थ अमेरिका के अध्यक्ष डॉ. शेखर अन्नमबाटला ने प्रमुख स्वास्थ्य पहलुओं पर चर्चा की।

मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान- लेविन

कार्यालय प्रतिनिधि

गोरखपुर,१२ जनवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। इस अवसर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ एवं आयुर्वेद प्रगति संस्था के निदेशक वैद्य गुई लेविन ने कहा कि मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान हैं और नाथपंथ इन दोनों के प्रसार और विस्तार में सतत अग्रणी भूमिका का निर्वहन करता रहा है।

पंचकर्म और काय चिकित्सा के विशेषज्ञ वैद्य लेविन ने मानवता की स्वास्थ्य रक्षा के लिए आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि आयुर्वेद न केवल अत्यंत प्राचीन बल्कि पूरी तरह हानिरहित चिकित्सा पद्धति है। प्राचीनकाल में यह जीवनशैली का हिस्सा था, बीच के कालखंड में कुछ विस्मृत करने की कोशिश हुई लेकिन वैश्विक महामारी कोरोना के आने के बाद पूरी दुनिया ने दोबारा इसके महत्व को अंगीकार किया है। उन्होंने योग की चर्चा करते हुए कहा कि यह मानव को निरोग रखने का पूर्णतः निशुल्क उपहार है। यदि कोई भी व्यक्ति योग करते हुए आयुर्वेद सम्मत जीवन अपनाए तो उसे किसी व्याधि होने की आशंका न्यूनतम हो जाती है। श्री लेविन ने कहा कि नाथपंथ से जुड़े योगियों और सिद्धों ने योग और आयुर्वेद को हमेशा ही न केवल स्वयं अपनाया बल्कि आमजन को भी इसके लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गोरखनाथ की भूमि दिव्यता में येरुशलम जैसा प्रतीत होता है। यहां आयुर्वेद के लोग अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी कर रहे हैं इसका दिव्यता अद्भुत है। अपनी

❖ महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

वृत्ति को छोड़कर भारत में आकर योग और अध्यात्म को सीखकर मेरा जन्म धन्य हुआ। उसी का प्रचार प्रसार इजरायल में कर रहा हूं। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रोविंशियल आयुर्वेद हास्पिटल श्रीलंका की पूर्व निदेशक डॉ. अनुला इलु कुम्बरी ने कहा कि प्राचीन सांस्कृतिक और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को लेकर श्रीलंका और भारत दोनों देशों की अपनी साझा विरासत है। दूसरे विशिष्ट अतिथि श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डॉ. मायाराम उनियाल ने कहा कि वैद्य शब्द गुरु गोरखनाथ ने दिया है। नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक भगवान शिव ही पारद ज्ञान के ज्ञाता हैं। वे रसशास्त्र के ज्ञाता और ज्ञान प्रदाता हैं। इस अवसर पर उन्होंने अपनी दो पुस्तकों को महायोगी गुरु गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह को भेंट की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि नाथपंथ ने योग और आयुर्वेद को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज होगा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान- कई देशों के डेलीगेट्स की सहभागिता वाली अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन सोमवार (13 जनवरी) को मुख्यमंत्री एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ का विशेष व्याख्यान होगा। सीएम योगी नाथपंथ की दुनिया की सर्वोच्च पीठ, गोरक्षपीठ के महंत होने के साथ योग के मर्मज्ञ भी हैं और आयुर्वेद के प्रति रुझान उन्हें नाथपंथ की विरासत में मिला है। संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर विशेष व्याख्यान देंगे।

आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार में नाथपंथ की अग्रणी भूमिका

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

- महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित सत्र को वैद्य गुई लेविन ने किया संबोधित
- आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों पर जुटे विशेषज्ञों ने की विस्तार से चर्चा

गोरखपुर: महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) की ओर से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों पर देश-विदेश से जुटे विशेषज्ञों ने विस्तार से चर्चा की।

मुख्य अतिथि इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ एवं आयुर्वेद प्रगति संस्था के निदेशक वैद्य गुई लेविन ने कहा कि मानव की आरोग्यता के लिए आयुर्वेद और योग वरदान हैं और नाथपंथ इन दोनों के प्रचार-प्रसार में सतत अग्रणी भूमिका का निर्वहन करता रहा है।

पंचकर्म और काय चिकित्सा के विशेषज्ञ वैद्य लेविन ने मनुष्य की स्वास्थ्य रक्षा के लिए आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि आयुर्वेद न केवल अत्यंत प्राचीन बल्कि पूरी तरह हानिरहित चिकित्सा पद्धति है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में इजरायल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ वैद्य गुई लेविन को स्मृति चिह्न प्रदान करते सीएम के सलाहकार डा. जीएन सिंह • सौ. विश्वविद्यालय

प्राचीनकाल में यह जीवनशैली का हिस्सा थी।

बीच के कालखंड में कुछ विस्मृत करने की कोशिश हुई लेकिन वैश्विक महामारी कोरोना के आने के बाद पूरी दुनिया ने दोबारा इसके महत्व को अंगीकार किया है। लेविन ने कहा कि नाथपंथ से जुड़े योगियों और सिद्धों ने योग और आयुर्वेद को हमेशा न केवल स्वयं अपनाया बल्कि आमजन को भी इसके लिए प्रेरित किया। गोरखनाथ की भूमि दिव्यता में येरुशलम जैसा प्रतीत होती है। भारत में आकर योग और अध्यात्म को सीखकर मेरा जीवन धन्य हुआ।

विशिष्ट अतिथि प्रोविंशियल आयुर्वेद हास्पिटल श्रीलंका की पूर्व निदेशक डा. अनुला इल्लु कुम्बरी ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति श्रीलंका और भारत की साझा विरासत है। विशिष्ट अतिथि श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डा. मायाराम उनियाल ने कहा कि वैद्य शब्द गुरु गोरखनाथ ने दिया है।

इस अवसर पर उन्होंने अपनी दो पुस्तकों को महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सुरिंदर सिंह को भेंट की। अन्य सत्रों में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष डा. जीएस तोमर ने कहा कि विश्व बाजार में आयुर्वेद उत्पादों की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। एसोसिएशन आफ आयुर्वेद प्रोफेशनल्स आफ नार्थ अमेरिका के अध्यक्ष डा. शेखर अन्नमबाटला ने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित प्रमुख स्वास्थ्य पहलुओं पर चर्चा की। डा. जयंत कुमार भदौरिया, एम्स गोरखपुर के डा. चेतन साही व बीएचयू के डा. बीएम सिंह ने भी संबोधित किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री के सलाहकार डा. जीएन सिंह ने कहा कि नाथपंथ ने योग और आयुर्वेद को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ आपस में जुड़े, मान्यता भी एक : मुख्यमंत्री

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में योगी ने दिया व्याख्यान

जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग व नाथपंथ की मान्यता एक

महायोगी गोरखनाथ विवि के आयुर्वेद कॉलेज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया संबोधित

आयुर्वेद और योग को आगे बढ़ाने में नाथपंथ ने निभाई अग्रणी भूमिका

धर्मपरक जीवन से ही सिद्धि संभव:योगी

गोरखनाथ विवि में आयोजित संगोष्ठी में बोले सीएम

गोरखपुर, वसं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि धर्मपरक जीवन से ही अर्थ, कामनाओं की सिद्धि और फिर मोक्ष प्राप्ति संभव है। इस परिप्रेक्ष्य में धर्म साधना से जुड़े जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता एक समान है। ऋषि कहते हैं कि धर्म की साधना के लिए शरीर ही माध्यम ('शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'।) है। धर्म के सभी साधन स्वस्थ शरीर से ही संभव हो सकते हैं।

योगी सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विशेष व्याख्यान दे रहे थे। योगी इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। संगोष्ठी में 20 देशों के विशेषज्ञ शिरकत कर रहे हैं। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान विषय पर केंद्रित व्याख्यान में सीएम ने कहा कि आयुर्वेद की मान्यता है कि चराचर जगत पंचभूतों से बना है। इन्हीं पंचभूतों से हमारा शरीर भी बना है। गुरु गोरखनाथ ने भी कहा है कि पिंड में ही ब्रह्मांड समाया है। जो तत्व ब्रह्मांड में है, वही हमारे शरीर में भी हैं।

संगोष्ठी को संबोधित करते सीएम योगी।

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का ध्यान नियम-संयम पर

योगी ने कहा कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद, योग और नाथपंथ, तीनों नियम-संयम पर जोर देते हैं। आयुर्वेद में व्याधियों को दूर करने के लिए औषधियों और पंचकर्म की पद्धतियां हैं तो योग में भी हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग, लययोग और क्रियायोग की विशिष्ट विधियां हैं। नाथपंथ का हठयोगी योग को खट्कर्म से जोड़ता है। तीनों ने ही शरीर को पंचभौतिक माना है।

> प्राचीन ज्ञान को गौरव P06

मनीषी मानते हैं आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता एक : सीएम योगी

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन

- आयुर्वेद और योग को आगे बढ़ाने में नाथपंथ की अग्रणी भूमिका
- प्रसुति संबंधी बीमारियों के इलाज में आयुर्वेद कारगर : अनत लेविन
- हर व्यक्ति की विशिष्टता के अनुरूप होता है आयुर्वेद में इलाज : डॉ. तन्मय गोस्वामी
- आयुर्वेद में वनस्पतियों को कहा गया है प्राण : डॉ. वीएन जोशी

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन वैज्ञानिक सत्रों में विषय विशेषज्ञों की चर्चा में यह निष्कर्ष निकला कि आयुर्वेद और योग की अमूल्य धरोहर को आगे बढ़ाने में नाथपंथ ने अग्रणी भूमिका निभाई है। दूसरे दिन के प्रथम वैज्ञानिक सत्र में इजराइल में आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य को लेकर कार्य कर रहीं और फिरदास हीलिंग एंड काउंसिलिंग सेंटर इजराइल की डायरेक्टर अनत लेविन ने कहा कि महिलाओं की प्रसुति संबंधी बीमारियों में आयुर्वेद कारगर सिद्ध होता है। गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार में आयुर्वेद की औषधियां न केवल हानिरहित हैं बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाने वाली हैं। उन्होंने कहा कि यदि गर्भवती महिला आयुर्वेद और योग सम्मत जीवनशैली अपनाए तो उसके गर्भ में पलने वाला शिशु भी स्वस्थ रहेगा। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग के ग्रन्थों के अध्ययन से वह नाथपंथ से भी परिचित हुई हैं। नाथपंथ ने इन दोनों विधाओं को खुद में समाहित किया है। द्वितीय वैज्ञानिक सत्र में गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डॉ. तन्मय गोस्वामी ने आयुर्वेद की वैश्विक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हर व्यक्ति की विशिष्ट शारीरिक बनावट होती है। आयुर्वेद उसी के अनुरूप हर व्यक्ति के रोग निदान की विधि बताता है। यह आयुर्वेद ही है कि एक वैद्य मनुष्य की नाड़ी पकड़कर उसके संपूर्ण विकारों का पता लगा लेता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। इसके अनुरूप जीवनशैली अपनाकर मनुष्य निरोग रह सकता है। एक अन्य वैज्ञानिक सत्र में यूरोपियन आयुर्वेद एसोसिएशन यूके के अकादमिक सह निदेशक डॉ. वीएन जोशी ने आयुर्वेद की औषधीय वनस्पतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद में वनस्पतियों को प्राण कहा गया है। गिलोय, अश्वगंधा, हल्दी जैसी वनस्पतियों ने प्राचीनकाल से ही मानव स्वास्थ्य की रक्षा में अनिर्वचनीय योगदान दिया है। आयुर्वेद के दृष्टिकोण से हर वनस्पति किसी न किसी औषधि के लिए जरूरी द्रव्य प्रदान करती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि वनस्पतियों के द्रव्य गुण पर शोध और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व एक बार फिर आयुर्वेद को आरोग्यता का वरदान मान चुका है। आज के वैज्ञानिक सत्रों में मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, इजरायल से आए डॉ. गुई लेविन, श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डॉ. मायाराम उनियाल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ प्रदीप राव सहित विभिन्न देशों व कई प्रांतों से आए डेलीगेट्स, शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

धर्म साधना पर आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता एक : योगी

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले सीएम

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय मनीषा मानती है कि 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'। अर्थात धर्म की साधना के लिए शरीर ही माध्यम है। धर्म के सभी साधन स्वस्थ शरीर से ही संभव हो सकते हैं। धर्मपरक जीवन से ही अर्थ, कामनाओं की सिद्धि और फिर मोक्ष प्राप्ति संभव है। इस परिप्रेक्ष्य में धर्म साधना से जुड़े जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता एक समान है। गुरु गोरखनाथ ने चेतना के उच्च आयाम तक पहुंचाने का मार्ग दिखाया है। नाथ योगियों की साधना ... भी रही रहा है।

संगोष्ठी को संबोधित करते सीएम। स्वतः

भारत की ज्ञान धारा को प्राप्त हो रहा प्राचीन गौरव

मुख्यमंत्री ने कहा कि अपने प्राचीन ज्ञान के धरोहरों से हमने दूरी बनानी शुरू की तो एक समय ऐसा भी आ गया कि भारतीय हीनभावना का विषय बन गए। अपने दिव्यज्ञान के स्रोत से वंचित होते गए। हमारे प्राचीन आयुर्वेद की दवाओं को बाहरी लोगों ने पेटेंट करना शुरू कर दिया। आज यह सुखद है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत की प्राचीन ज्ञान धारा, आयुर्वेद और योग को फिर से प्राचीन गौरव प्राप्त हो रहा है। पूरी दुनिया एक बार फिर आयुर्वेद और योग के प्रति केंद्रित होकर भारत के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रही है।

सीएम योगी सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरखनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विशेष व्याख्यान दे रहे थे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर केंद्रित अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की मान्यता है कि चराचर जगत पंचभूतों से बना है। इन्हीं पंचभूतों से हमारा शरीर भी बना है। महायोगी गुरु गोरखनाथ ने भी कहा है कि पिंड में ही ब्रह्मांड समाया है। जो तत्व ब्रह्मांड में हैं, वही हमारे शरीर में भी हैं। सीएम ने कहा कि हिंदू कहलाने के लिए मंदिर जाना या धार्मिक ग्रंथों को पढ़ना आवश्यक नहीं है। हमारी सनातन परंपरा में धर्म को व्यापक दृष्टि से देखा और समझा गया है। ब्यूरो

>> संबंधित पेज 6 पर

गोरक्षपीठाधीश्वर आज गुरु गोरक्षनाथ को चढ़ाएंगे खिचड़ी

गोरखपुर। गोरक्षपीठाधीश्वर व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मकर संक्रांति पर मंगलवार को सुबह चार बजे गोरखनाथ मंदिर में गुरु गोरखनाथ को खिचड़ी अर्पित करेंगे। इसके बाद नेपाल राज परिवार से आई खिचड़ी बाबा को चढ़ाएंगे। इसके साथ ही एक महीने चलने वाले खिचड़ी मेले की भी शुरुआत हो जाएगी। ब्यूरो

जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग, नाथपंथ की मान्यता एक : योगी

इस्टीमेट मंगवा लीजिए, सरकार देगी इलाज का पैसा : सीएम

समाचार दर्पण

जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता एक : योगी

संदेश वाहक ब्यूरो

स्मारिका का लोकार्पण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय मनीषा मानती है कि 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'। अर्थात धर्म की साधना के लिए शरीर ही माध्यम है। धर्म के सभी साधन स्वस्थ शरीर से ही संभव हो सकते हैं। धर्मपरक जीवन से ही अर्थ, कामनाओं की सिद्धि और फिर मोक्ष प्राप्ति संभव है। इस परिप्रेक्ष्य में धर्म साधना से जुड़े जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता के समान है।

सीएम योगी सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विशेष व्याख्यान दे रहे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में 'आयुर्वेद, योग और नाथपंथ का मानवता के प्रति योगदान' विषय पर केंद्रित अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की मान्यता है कि चराचर जगत पंचभूतों से बना है। इन्हीं पंचभूतों से हमारा शरीर भी बना है। महायोगी गुरु गोरखनाथ ने भी कहा है कि पिंड में ही ब्रह्मांड समाया है। जो तत्व ब्रह्मांड में है वही हमारे शरीर में भी हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय मनीषा में हर व्यक्ति के जीवन का एक अभीष्ट होता है, धर्म के पथ पर चलते हुए मोक्ष की प्राप्ति करना प्रति करना। धर्म की साधना के लिए स्वस्थ शरीर की अपरिहार्यता हमारे ऋषियों, मुनियों ने बताई है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद, योग और नाथपंथ, तीनों नियम-संयम पर जोर देते हैं।

आयुर्वेद में जहां व्याधियों को दूर करने के लिए औषधियों और पंचकर्म की पद्धतियां हैं तो वहीं योग में भी हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग, लययोग और क्रियायोग की विशिष्ट विधियां हैं। योगी ने कहा कि नियम-संयम का जीवन में बड़ा महत्व है। योग ने उसी को जोड़ा है। अंत:करण की शुद्धि नियम-संयम से ही हो सकती है। नाथ योगियों ने क्रियात्मक योग के माध्यम से नियम संयम की विशिष्ट विधा दी है। कौन सी क्रिया का लाभ कब प्राप्त होगा, नाथ योगियों ने इसे विस्तार से समझाया है। उन्होंने कहा कि योग के कई आसनों के नाम नाथ योगियों के नाम पर हैं जैसे गोरखआसन, मत्स्येंद्र आसान, गोमुखआसन आदि।

उन्होंने चेतन मन के साथ ही अवचेतन और अचेतन मन को साधने की क्रिया भी सिखाई है। मानव मन, बिना साधना के जितना चेतन होता है वह संपूर्ण चेतना का बहुत छोटा भाग है। योग के माध्यम से साधना की चरम सीमा पर जाकर हम अवचेतन और अचेतन मन के रहस्यों को उद्घाटित कर सकते हैं। नाथ योगियों की साधना का उद्देश्य भी यही रहा है। स्वागत संबोधन महायोगी गोरखनाथ विवि के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और आभार ज्ञापन आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश अवस्थी, मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह, बीएचयू के वरिष्ठ आचार्य डॉ. के. रामचंद्र रेड्डी, इजराइल के आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञ वैद्य गुई लेविन, श्रीलंका से आए आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. टी. वीरत्ना, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित संगोष्ठी में देश और दुनिया से प्रतिभागी, शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

- महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संगोष्ठी की स्मारिका और दो पुस्तकों का विमोचन

मंच पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका और डॉ. के. रामचंद्र रेड्डी व डॉ. शांतिभूषण हादुर द्वारा लिखित दो पुस्तकों का विमोचन किया। मंच पर आगमन से पूर्व उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माताओं डाबर, वैद्यनाथ, श्रीधुतपापेश्वर, ऐमिल, हिमालया और वैद्यरत्नम की तरफ से लगाए गए स्टालों का भी अवलोकन किया।

भारत की ज्ञान धारा को प्राप्त हो रहा प्राचीन गौरव

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अपने प्राचीन ज्ञान के धरोहरों से हमने दूरी बनानी प्रारंभ की तो एक समय ऐसा भी आ गया कि भारतीय हीन भावना का विषय बन गए। अपने दिव्यज्ञान के स्रोत से वंचित होते गए। हमारी प्राचीन आयुर्वेद की दवाओं को बाहरी लोगों ने पेटेंट करना शुरू कर दिया। पर, आज यह सुखद है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत की प्राचीन ज्ञान धारा, आयुर्वेद और योग को फिर से प्राचीन गौरव प्राप्त हो रहा है। पूरी दुनिया एक बार फिर आयुर्वेद और योग के प्रति केंद्रित होकर भारत के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रही है।

ज्ञान के लिए सभी दरवाजे खुले रखे

सीएम योगी ने कहा कि एक विश्वविद्यालय या शिक्षा संस्थान रचनात्मक कार्यों से वर्तमान पीढ़ी को नवीन ज्ञान से ओतप्रोत करता है। हमारे वैदिक संस्कृति का सूत्र भी यही है, 'आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।' अर्थात ज्ञान के लिए सभी दरवाजे खुले रखो। ऐसे में इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से ज्ञान के प्रति जड़ता तोड़ने और उसे नवीनता से परिपूर्ण करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

जीवन को लेकर आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की मान्यता एक: योगी

- महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले मुख्यमंत्री
- स्वस्थ शरीर से ही संभव हो सकते हैं धर्म के सभी साधन: योगी

संवाददाता

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय मनीषा मानती है कि शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। अर्थात धर्म की साधना के लिए शरीर ही माध्यम है। धर्म के सभी साधन स्वस्थ शरीर से ही संभव हो सकते हैं। धर्मपरक जीवन से ही अर्थ, कामनाओं की सिद्धि और फिर मोक्ष प्राप्ति संभव है। इस परिप्रेक्ष्य में धर्म साधना से जुड़े जीवन ...

गुरु गोरखनाथ ने भी कहा है कि पिंड में ही ब्रह्मांड समाया है। जो तत्व ब्रह्मांड में है वही हमारे शरीर में भी हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय मनीषा में हर व्यक्ति के जीवन का एक अभीष्ट होता है, धर्म ...

राजयोग, ज्ञानयोग, लययोग और क्रियायोग की विशिष्ट विधियां हैं। इसी क्रम में शरीर की आरोग्यता के लिए नाथपंथ का हठयोगी योग को षट्कर्म से जोड़ता है। आयुर्वेद, योग और नाथपंथ की पद्धतियां, तीनों ही बात, ...

धर्म पथ से सफलता के चरम पर पहुंचना ही मोक्ष

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सीएम योगी का विशेष व्याख्यान

आयुर्वेद और योग को आगे बढ़ाने में नाथपंथ की अग्रणी भूमिका

परेशान न हों, सरकार देगी इलाज का पैसा

आयुर्वेद और योग को आगे बढ़ाने में नाथपंथ की अग्रणी भूमिका

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन वैज्ञानिक सत्रों में विषय विशेषज्ञों की चर्चा में यह निष्कर्ष निकला कि आयुर्वेद और योग की अमूल्य धरोहर को आगे बढ़ाने में नाथपंथ ने अग्रणी भूमिका निभाई है।

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद-योग-नाथपंथ पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सम्बोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

दूसरे दिन के प्रथम वैज्ञानिक सत्र में इजराइल में आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य को लेकर कार्य कर रहीं और क्रिस्टल हीलिंग एंड काउंसिलिंग सेंटर इजराइल की डायरेक्टर अनत लेविन ने कहा कि महिलाओं की प्रसूति संबंधी बीमारियों में आयुर्वेद कारगर सिद्ध होता है। गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार में आयुर्वेद की औषधियां न केवल हानिरहित हैं बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाने वाली हैं। उन्होंने कहा कि यदि गर्भवती महिला आयुर्वेद और योग सम्मत जीवनशैली अपनाए तो उसके गर्भ में पलने वाला शिशु भी स्वस्थ रहेगा। द्वितीय वैज्ञानिक सत्र में गोस्वाल फाउंडेशन उडुपी के डा. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि हर व्यक्ति की विशिष्ट शारीरिक बनावट होती है। आयुर्वेद उसी के अनुरूप हर व्यक्ति के रोग निदान की विधि बताता है। यह आयुर्वेद ही है कि एक वैद्य मनुष्य की नाड़ी पकड़कर उसके संपूर्ण विकारों का पता लगा लेता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। एक अन्य वैज्ञानिक सत्र में यूरोपियन आयुर्वेद एसोसिएशन यूके के अकादमिक सह निदेशक डा. वीएन जोशी ने आयुर्वेद की औषधीय वनस्पतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद में वनस्पतियों को प्राण कहा गया है। गिलोय, अश्वगंधा, हल्दी जैसी वनस्पतियों ने प्राचीनकाल से ही मानव स्वास्थ्य की रक्षा में अनिर्वचनीय योगदान दिया है। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के कन्वेनर एवं बीएचयू के रसशास्त्र और भैषज्य कल्पना विभाग के वरिष्ठ आचार्य डा. के राम चंद्र रेड्डी ने कहा कि यह संगोष्ठी मानव जीवन की आरोग्यता को लेकर नव चेतना का जागरण करेगी।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग दोनों ही मानवता के लिए अमूल्य निधि हैं। इस निधि का संरक्षण नाथपंथ सदियों से कर रहा है।

आयुर्वेद और योग को बढ़ाने में नाथपंथ से मिली मदद : डा. अनुला : प्रोविंशियल आयुर्वेद हास्पिटल श्रीलंका की पूर्व निदेशक डा. अनुला कुमारी ने कहा कि नाथपंथ की सर्वोच्च पीठ के सानिध्य में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित कर हो रही अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित होना मेरे लिए महत्वपूर्ण अवसर है। योग और आयुर्वेद को लेकर भारत व श्रीलंका प्राचीनकाल से ही अग्रसर रहे हैं। इन दोनों विधाओं को नाथपंथ से आगे बढ़ने में मदद मिली है। इस संगोष्ठी के परिणाम निश्चित ही दूरगामी होंगे। वहीं एसोसिएशन आफ आयुर्वेदिक प्रोफेशनल्स आफ नार्थ अमेरिका के अध्यक्ष डा. शेखर ए ने कहा कि रोगों के निदान में आयुर्वेद और योग की भूमिका को आज पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है। इन विधाओं को नाथपंथ के योगियों ने हमेशा प्रसारित किया है। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने कहा कि नाथपंथ को कभी भी आयुर्वेद और योग से अलग नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आज दुनिया का रुझान आयुर्वेद और योग के प्रति बढ़ रहा है। आज के वैज्ञानिक सत्रों में मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह, इजरायल से आए डा. गुई लेविन, श्रीलंका से आए वनौषधि वाचस्पति डा. मायाराम उनियाल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डा. प्रदीप राव सहित विभिन्न देशों व कई प्रांतों से आए डेलीगेट्स, शिक्षक और छात्र उपस्थित रहे।

- प्रसूति संबंधी बीमारियों के इलाज में आयुर्वेद कारगर : अनत लेविन
- हर व्यक्ति की विशिष्टता के अनुरूप होता है आयुर्वेद में इलाज: डा. तन्मय गोस्वामी
- आयुर्वेद में वनस्पतियों को कहा गया है प्राण : डा. वीएन जोशी

आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंध पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मार्गदर्शक की भूमिका में दिखे सीएम

देश के प्राचीन ज्ञान को अब मिल रहा गौरव : योगी

महायोगी विवि

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। • हिन्दुस्तान

- मुख्यमंत्री योगी ने कहा-ज्ञान के लिए सभी दरवाजे खुले रखो
- महायोगी गोविवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन

नाथ योगियों ने अंतःकरण की शुद्धि पर दिया है जोर

दुनिया स्वीकार कर रही योग-आयुर्वेद की भूमिका

ये लोग रहे मौजूद

प्रसूति संबंधी बीमारियों के इलाज में आयुर्वेद कारगर

आरोग्यता को नवचेतना जागृत करेगी संगोष्ठी

आयुर्वेद-योग को बढ़ाने में नाथपंथ से मिली मदद

आयुर्वेद और योग के प्रति बढ़ा दुनिया का रुझान

समाचार दर्पण

आयुर्वेद और एलोपैथ को अब साथ लेकर चलने की जरूरत

महायोगी गोरखनाथ विवि में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। वर्तमान वैश्विक स्वास्थ्य परिदृश्य में आयुर्वेद की महत्ता को दुनिया ने एक बार फिर स्वीकार किया है। वैश्विक दवा बाजार में आयुर्वेद की औषधियों की मांग निरंतर बढ़ रही है। इसके साथ ही दुनिया के लोग निरोगी काया के लिए योग के प्रति प्रेरित हो रहे हैं। आज आवश्यकता है कि आयुर्वेद और एलोपैथ को मिलाकर स्वास्थ्य रक्षा का अभियान आगे बढ़ाया जाए।

ये बातें आयुर्वेद के मर्मज्ञ डॉ. टी. वीर रत्न ने मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) की तरफ से आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि कहीं।

वे आयुर्वेद, योग और नाथ पंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय इस संगोष्ठी के समापन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। डॉ. टी. वीर रत्न ने आयुर्वेद को विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा कि आयुर्वेद एक पवित्र चिकित्सकीय पद्धति है जो शरीर ही नहीं, आत्मा तक को शुद्ध और प्रसन्न करता है।

विशिष्ट अतिथि इंग्लैंड से आए आयुर्वेद के वैद्य डॉ. वीएन जोशी ने कहा कि आयुर्वेद और योग दोनों को नाथ पंथ ने आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि नाथ पंथ का संबंध भगवान रुद्र और गो-माता से है। नाथ पंथ के प्रवर्तक आदियोगी शिव ने ही योग और आयुर्वेद को अनुप्राणित किया है।

कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता। स्रोत- महायोगी गोरखनाथ विवि

विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति संस्कृति विश्वविद्यालय मथुरा डॉ. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि चिकित्सा जगत में आयुर्वेद, योग और नाथ पंथ को समाहित कर हुई यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मील का पत्थर साबित होगी। इस अवसर पर आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति डॉ. एके सिंह ने कहा कि पूरे देश में 107 आयुर्वेदिक कालेज हैं। देश-विदेश के विभिन्न आयुर्वेद कालेजों से आए वैद्य यदि पांच-पांच गांव गोद लेते हैं तो आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति घर घर पहुंच जाएगी।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि गोष्ठी ने मानव स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में आयुर्वेदिक दवा कंपनियों की मांग को देखते हुए हमें वैल्यू एडेड कोर्स शुरू करने चाहिए।

संगोष्ठी के अंत में सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति सम्मान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के डॉ. अश्विथी नारायण और मेडिकल कॉलेज की डॉ. प्रियंका को प्राप्त हुआ।

आभार ज्ञापन आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम, संचालन डॉ. मोहित व मंगलाचरण डॉ. सुमेश ने किया।

इस अवसर पर इस्राइल से आए गुई लेविन, अनत लेविन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. नवीन, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नंदन पांडेय, डॉ. देवी, डॉ. प्रिया आदि मौजूद रहीं।

आयुर्वेद व एलोपैथ को साथ लेकर चलने की जरूरत

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) की ओर से आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का मंगलवार को समापन हुआ। देश-विदेश से आए विशेषज्ञों ने आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला। समापन सत्र में मुख्य अतिथि आयुर्वेद के मर्मज्ञ डा. टी वीररत्न ने कहा कि वर्तमान वैश्विक स्वास्थ्य परिदृश्य में आयुर्वेद की महत्ता को दुनिया ने एक बार फिर स्वीकार किया है। आज आवश्यकता है कि आयुर्वेद और एलोपैथ को मिलाकर स्वास्थ्य रक्षा का अभियान आगे बढ़ाया जाए।

डा. वीररत्न ने आयुर्वेद को विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा कि आयुर्वेद एक पवित्र चिकित्सकीय पद्धति है जो शरीर ही नहीं, आत्मा तक को शुद्ध और प्रसन्न करती है। आयुर्वेद और योग के अनुसार जीवनशैली अपनाने वाले लोग कम बीमार पड़ते हैं। यदि बीमार पड़ भी गए आयुर्वेद की दवाओं से शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेते हैं।

विशिष्ट अतिथि इंग्लैंड से आए वैद्य वीएन जोशी ने कहा कि आयुर्वेद और योग दोनों को नाथपंथ ने आगे बढ़ाया है। नाथपंथ का संबंध भगवान रुद्र और गो माता से है। नाथपंथ के प्रवर्तक आदियोगी शिव ने ही योग और आयुर्वेद को अनुप्राणित किया है। विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति संस्कृति विश्वविद्यालय मथुरा डा. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि चिकित्सा जगत में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित कर हुई यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मील का पत्थर साबित होगी। महर्षि चरक के अनुसार, हमारा एक लक्ष्य होना चाहिए, स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ रखना और रोगी को रोगमुक्त करना। आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एके सिंह ने कहा कि आयुष के पूरे देश में एक सौ सात आयुर्वेदिक कालेज हैं। देश-विदेश के विभिन्न आयुर्वेद कालेजों से आए हम सभी वैद्य यदि पांच-पांच गांव गोद लेते हैं तो आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति घर-घर पहुंच जाएगी।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते डा. टी वीररत्न • सौ. विश्वविद्यालय

अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी ने मानव स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जो निष्कर्ष निकाला है, वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में आयुर्वेद दवा कंपनियों की मांग के देखते हुए हमें वैल्यू एडेड कोर्स शुरू करने चाहिए। सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति सम्मान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के डा. अश्विथी नारायण और मेडिकल कालेज की डा. प्रियंका को प्रदान किया गया। आभार ज्ञापन आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने किया। संचालन डा. मोहित व मंगलाचरण डा. सुमेश ने किया। इस अवसर पर इजराइल से आए गुई लेविन, अनत लेविन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव, डा. अरविंद कुशवाहा, डा. नवीन, डा. दीपू मनोहर, डा. विनम्र शर्मा, डा. साध्वी नंदन पांडेय, डा. देवी, डा. प्रिया उपस्थित रहीं।

आयुर्वेद व एलोपैथ को साथ लेकर चलने की आवश्यकता : डा. वीररत्न

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) की ओर से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन मंगलवार को हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आयुर्वेद के मर्मज्ञ डा. टी वीररत्न ने कहा कि वर्तमान वैश्विक स्वास्थ्य परिचय में आयुर्वेद की महत्ता को दुनिया ने एक बार फिर स्वीकार किया है। आज आवश्यकता है कि आयुर्वेद और एलोपैथ को मिलाकर स्वास्थ्य रक्षा का अभियान आगे बढ़ाया जाए।

■ महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

डा. वीररत्न ने आयुर्वेद को विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा कि आयुर्वेद एक पवित्र चिकित्सकीय पद्धति है जो शरीर ही नहीं, आत्मा तक को शुद्ध और प्रसन्न करता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग के अनुसार जीवनशैली अपनाने वाले लोग कम बीमार पड़ते हैं और यदि बीमार पड़ भी गए आयुर्वेद की दवाओं से शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेते हैं। यही कारण है कि वैश्विक दवा बाजार में आयुर्वेद की औषधियों की मांग निरंतर बढ़ रही है। समापन समारोह के विशिष्ट अतिथि इंग्लैंड से आए आयुर्वेद के वैद्य डा. वीएन जोशी ने कहा कि आयुर्वेद और योग दोनों को नाथपंथ ने आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि नाथपंथ का संबंध भगवान रुद्र और गौमाता से है। नाथपंथ के प्रवर्तक आदियोगी शिव ने ही योग और आयुर्वेद को अनुप्राणित किया है।

विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति संस्कृति विश्वविद्यालय मथुरा डा. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि चिकित्सा जगत में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित कर हुई यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने कहा कि महर्षि चरक के अनुसार हमारा एक लक्ष्य होना चाहिए। आयुष विवि गोरखपुर के कुलपति डा. एके सिंह ने कहा कि आयुष के पूरे देश में 107 आयुर्वेदिक कालेज हैं। देश-विदेश के विभिन्न आयुर्वेद कालेजों से आए हम सभी वैद्य यदि पांच-पांच गांव गोद लेते हैं तो आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति घर-घर पहुंच जाएगी। उन्होंने कहा कि हमें हर्बल औषधियों की गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा।

समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विवि के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी ने मानव स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। संगोष्ठी के अंत में सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति सम्मान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के डा. अश्विथी नारायण और मेडिकल कालेज की डा. प्रियंका को प्राप्त हुआ। आभार ज्ञापन आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने किया। संचालन डा. मोहित एवं मंगलाचरण डा. सुमेश ने किया। इस अवसर पर इजरायल से आए गुई लेविन, अनत लेविन, महायोगी गोरखनाथ विवि के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव, डा. अरविंद कुशवाहा, डा. नवीन, डा. दीपू मनोहर, डा. विनम्र शर्मा, डा. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डा. देवी एवं डा. प्रिया सहित देश के अन्य राज्यों और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की मौजूदगी रही।

आयुर्वेद एक पवित्र चिकित्सकीय पद्धति : डॉ. वीररत्न

»महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन मंगलवार को हुआ।मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आयुर्वेद के मर्मज्ञ डॉ. टी. वीररत्न ने कहा कि वर्तमान वैश्विक स्वास्थ्य परिदृश्य में आयुर्वेद की महत्ता को दुनिया ने एक बार फिर स्वीकार किया है। आज आवश्यकता है कि आयुर्वेद और एलोपैथ को मिलाकर स्वास्थ्य रक्षा का अभियान आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने आयुर्वेद को विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा कि आयुर्वेद एक पवित्र

चिकित्सकीय पद्धति है जो शरीर ही नहीं, आत्मा तक को शुद्ध और प्रसन्न करता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग के अनुसार जीवनशैली अपनाने वाले लोग कम बीमार पड़ते हैं और यदि बीमार पड़ भी गए आयुर्वेद की दवाओं से शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेते हैं। यही कारण है कि वैश्विक दवा बाजार में आयुर्वेद की औषधियों की माग निरंतर बढ़ रही है। इसके साथ ही दुनिया के लोग निरोगी काया के लिए योग के प्रति प्रेरित हो रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में इंग्लैंड से आए आयुर्वेद के वैद्य डॉ. वीएन जोशी ने कहा कि आयुर्वेद और योग दोनों को नाथपंथ ने आगे बढ़ाया है। नाथपंथ का संबंध भगवान रुद्र और गौमाता से है। नाथपंथ के प्रवर्तक आदियोगी शिव ने ही योग और आयुर्वेद को अनुप्राणित किया है। विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति संस्कृति विश्वविद्यालय मथुरा डॉ. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि चिकित्सा जगत में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित कर हुई यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मील का पत्थर साबित होगी। महर्षि चरक के अनुसार हमारा एक लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में आयुर्वेद दवा कंपनियों की मांग के देखते हुए हमें वैल्यू एडेड कोर्स शुरू करने चाहिए। उन्होंने इस संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए बीएचयू के वरिष्ठ आचार्य डॉ. के. रामचंद्र रेड्डी, आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य, प्राध्यापकों, सभी डेलीगेट्स और बीएमएस विद्यार्थियों को साधुवाद प्रदान किया। संगोष्ठी के अंत मे सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति सम्मान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूटऑफ मेडिकल साइंसेज के डॉ. अश्विथी नारायण और मेडिकल कॉलेज की डॉ. प्रियंका को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर इजरायल से आए गुई लेविन, अनत लेविन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. नवीन, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी, डॉ. प्रिया सहित देश के अन्य राज्यों और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

आयुर्वेद एक पवित्र चिकित्सकीय पद्धति : डॉ. वीररत्न

»महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की तरफ से आयुर्वेद, योग और नाथपंथ के पारस्परिक अंतरसंबंधों को समझने के लिए आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन मंगलवार को हुआ।मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आयुर्वेद के मर्मज्ञ डॉ. टी. वीररत्न ने कहा कि वर्तमान वैश्विक स्वास्थ्य परिदृश्य में आयुर्वेद की महत्ता को दुनिया ने एक बार फिर स्वीकार किया है। आज आवश्यकता है कि आयुर्वेद और एलोपैथ को मिलाकर स्वास्थ्य रक्षा का अभियान आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने आयुर्वेद को विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा कि आयुर्वेद एक पवित्र

चिकित्सकीय पद्धति है जो शरीर ही नहीं, आत्मा तक को शुद्ध और प्रसन्न करता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग के अनुसार जीवनशैली अपनाने वाले लोग कम बीमार पड़ते हैं और यदि बीमार पड़ भी गए आयुर्वेद की दवाओं से शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेते हैं। यही कारण है कि वैश्विक दवा बाजार में आयुर्वेद की औषधियों की माग निरंतर बढ़ रही है। इसके साथ ही दुनिया के लोग निरोगी काया के लिए योग के प्रति प्रेरित हो रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में इंग्लैंड से आए आयुर्वेद के वैद्य डॉ. वीएन जोशी ने कहा कि आयुर्वेद और योग दोनों को नाथपंथ ने आगे बढ़ाया है। नाथपंथ का संबंध भगवान रुद्र और गौमाता से है। नाथपंथ के प्रवर्तक आदियोगी शिव ने ही योग और आयुर्वेद को अनुप्राणित किया है। विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति संस्कृति विश्वविद्यालय मथुरा डॉ. तन्मय गोस्वामी ने कहा कि चिकित्सा जगत में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ को समाहित कर हुई यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी मील का पत्थर साबित होगी। महर्षि चरक के अनुसार हमारा एक लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में आयुर्वेद दवा कंपनियों की मांग के देखते हुए हमें वैल्यू एडेड कोर्स शुरू करने चाहिए। उन्होंने इस संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए बीएचयू के वरिष्ठ आचार्य डॉ. के. रामचंद्र रेड्डी, आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य, प्राध्यापकों, सभी डेलीगेट्स और बीएमएस विद्यार्थियों को साधुवाद प्रदान किया। संगोष्ठी के अंत मे सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति सम्मान गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूटऑफ मेडिकल साइंसेज के डॉ. अश्विथी नारायण और मेडिकल कॉलेज की डॉ. प्रियंका को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर इजरायल से आए गुई लेविन, अनत लेविन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. नवीन, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी, डॉ. प्रिया सहित देश के अन्य राज्यों और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

स्वास्थ्य रक्षा अभियान में आयुर्वेद व एलोपैथ को साथ लेकर चलने की आवश्यकता : डॉ. वीररत्न

- 'महायोगी गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन'
- 'आयुर्वेद और योग दोनों को नाथपंथ ने आगे बढ़ाया : डॉ. जोशी'
- 'पांच-पांच गांव गोद लें सभी वैद्य : प्रो. एके सिंह'
- 'आयुर्वेद के क्षेत्र में वैल्यू एडेड कोर्स शुरू करने की जरूरत : प्रो. सुरिंदर सिंह'

संवाददाता गोरखपुर। [illegible]

[illegible]

गोरखनाथ विवि में आयुर्वेद, योग और नाथपंथ पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर बोले आयुर्वेद के विशेषज्ञ डॉ. टी. वीररत्न

आयुर्वेद और एलोपैथ को साथ लेकर चलना होगा

गोरखनाथ विवि

[illegible]

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंच पर बैठे विशेषज्ञ। • हिन्दुस्तान

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मौजूद विभिन्न देशों से आए विद्वान व अन्य। • हिन्दुस्तान

03 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्वानों ने रखे अपने विचार

- आयुर्वेद-योग को नाथपंथ ने आगे बढ़ाया : डॉ. वीएन
- डॉ. तन्मय ने कहा-मील का पत्थर साबित होगी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

पांच-पांच गांव गोद लें तो घर-घर पहुंचेगी आयुर्वेद पद्धति

[illegible]

संगोष्ठी से निकले निष्कर्ष स्वास्थ्य की रक्षा को महत्वपूर्ण

[illegible]

समाचार दर्पण

महायोगी गोरखनाथ विवि में बनेगा एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल

निर्माण कार्य के लिए कुलपति व कुलसचिव ने किया भूमि पूजन

भूमि पूजन करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह व अन्य। सौ.महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए एक हजार की क्षमता का हॉस्टल बनेगा। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

भूमि पूजन के बाद कुलपति ने कहा कि यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्वस्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है।

एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हॉस्टल का निर्माण हो जाने से छात्राओं को शहर में कमरा नहीं खोजना पड़ेगा।

भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा, आशीष सिंह, योगेंद्र कुमार आदि मौजूद रहे।

मगोवि में बनेगा एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हास्टल

गोरखपुरः महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हास्टल बनेगा। निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डा.प्रदीप कुमार राव ने किया। वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन करने के बाद कुलपति ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अपने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में बनने वाले गर्ल्स हास्टल के निर्माण कार्य के लिए भूमि पूजन करते कुलपति प्रो .सुरिंदर सिंह ● सौजन्य मगोवि

इसी क्रम में यहां एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हास्टल का निर्माण किया जा रहा है। इस हास्टल के बन जाने से अधिक से अधिक छात्राएं सुविधाजनक तरीके से अपने अध्ययन कार्य को सुचारू ढंग से आगे बढ़ा पाएंगी। उन्होंने कहा कि इस विवि में अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरियम बनकर तैयार है, इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है।

इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है। भूमि पूजन के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा.जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो.एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डा.सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल्स के निदेशक डा.संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डा.अरविंद कुशवाहा, आशीष सिंह तथा योगेंद्र कुमार आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

कुलपति व कुलसचिव ने किया भूमि पूजन

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हास्टल बनेगा। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन विवि के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने किया। वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन करने के बाद कुलपति प्रो. सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विवि ने अपने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। उन्होंने कहा कि विवि में अकादमिक इंफ्रास्ट्र के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर तैयार है, इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है। भूमि पूजन के अवसर पर डा.जीएन सिंह, आयुष विवि के कुलपति प्रो. एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डा.सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल्स के निदेशक डा. संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डा. अरविंद कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

■ महायोगी गोरखनाथ विवि में बनेगा एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हास्टल

महायोगी गोरखनाथ विवि में बनेगा एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल बनेगा। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन करने के बाद कुलपति ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अपने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। इसी क्रम में यहां एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हॉस्टल का निर्माण किया जा रहा है। इस हॉस्टल के बन जाने से अधिकाधिक छात्राएं सुविधाजनक तरीके से आवासित होकर अपने अध्ययन कार्य को सुचारू ढंग से आगे बढ़ा पाएंगी। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर तैयार है, इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है। भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा, आशीष सिंह, योगेन्द्र कुमार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में बनेगा एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल

विशेष संवाददाता

गोरखपुर, 15 जनवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल बनेगा। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन करने के बाद कुलपति ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अपने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। इसी क्रम में यहां एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हॉस्टल का निर्माण किया जा रहा है। इस हॉस्टल के बन जाने से अधिकाधिक छात्राएं सुविधाजनक तरीके से आवासित होकर अपने अध्ययन कार्य को सुचारू ढंग से आगे बढ़ा पाएंगी। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर तैयार है, इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है। भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा,आशीष सिंह, योगेन्द्र कुमार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

- निर्माण कार्य के लिए कुलपति व कुलसचिव ने किया भूमि पूजन
- अकादमिक प्रगति के साथ विश्वविद्यालय में विकसित हो रहा विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर

छात्राओं के लिए बनेगा 1000 क्षमता वाला हॉस्टल

» महायोगी गोरखनाथ विवि में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच निर्माण कार्य का किया गया भूमि पूजन

संवाददाता, गोरखपुर

अमृत विचार। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल बनेगा। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन करने के बाद कुलपति ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अपने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। इसी क्रम में यहां एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हॉस्टल का निर्माण किया जा रहा है। इस हॉस्टल के बन जाने से अधिकाधिक छात्राएं सुविधाजनक तरीके से आवासित होकर अपने अध्ययन कार्य को सुचारू ढंग से आगे बढ़ा पाएंगी। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर तैयार है, इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है। भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा, आशीष सिंह, योगेन्द्र कुमार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में बनेगा एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल

निर्माण कार्य के लिए कुलपति व कुलसचिव ने किया भूमि पूजन

सदैव वाहक न्यूज

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की सुविधा के लिए एक हजार की क्षमता का गर्ल्स हॉस्टल बनेगा। इसके निर्माण कार्य का भूमि पूजन बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

वैदिक मंत्रोच्चार बीच भूमि पूजन करने के बाद कुलपति ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने अपने कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में अकादमिक प्रगति के पथ पर तेजी से अग्रसर है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर भी विश्व स्तरीय स्वरूप में विकसित हो रहा है। इसी क्रम में यहां एक हजार छात्राओं की आवासीय क्षमता वाले हॉस्टल का निर्माण किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया भूमि पूजन।

इस हॉस्टल के बन जाने से अधिकाधिक छात्राएं सुविधाजनक तरीके से आवासित होकर अपने अध्ययन कार्य को सुचारू ढंग से आगे बढ़ा पाएंगी।

उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अकादमिक इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा 1475 सीट का आडिटोरिम बन कर तैयार है, इसका फिनिशिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही 9500 की क्षमता का स्टेडियम भी बन रहा है।

भूमि पूजन के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार एवं भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह, आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. एके सिंह, इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट के साउथ एशिया निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह, बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा, आशीष सिंह, योगेन्द्र कुमार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुक्ल आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर का आयोजन - डॉ जी एस तोमर

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जी .यस .तोमर ने शताधिक मरीजों को निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया।

डॉ जी एस तोमर ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आज दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद वर्णित आदर्श जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है। योग, प्राणायाम, और ध्यान के साथ नियमित चिकित्सीय परामर्श से रोगी निरोग रहकर स्वस्थ जीवन जी सकते है। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा आयोजित निशुल्क शिविर में उन्होंने कहा कि आज के समय में अस्थमा, स्पाइन, गठिया

और अन्य समस्याएं खान पान अनियमित दिनचर्या से उत्पन्न हो रही हैं। आसपास की जड़ी बूटियां से और खान-पान में सुधार करके हम अपना स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

एक देश एक स्वास्थ्य नीति से सस्ती, सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा जन जन तक पहुंचेगी- डॉ जी एस तोमर

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अंतर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज् आयुर्वेद कालेज में वन नेशन वन हेल्थ सिस्टम विषय पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ जी एस तोमर ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एक राष्ट्र-एक स्वास्थ्य प्रणाली की संकल्पना की थी। जिसे हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी ने व्यवहार में लाने का वीणा उठाया है। यह प्रणाली एक एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रणाली है जो पूरे देश में एक समान मानकों और सेवाओं को प्रतिस्थापित करेगी। आरोग्य भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव एवं संघ के प्रचारक डॉ. अशोक वार्ष्णेय की पहल पर आरोग्य भारती ने बीस सदस्यीय समिति के माध्यम से इसका मसौदा नीति आयोग को भेजा है। आज देश को इसकी सख्त जरूरत है। इसमें सभी चिकित्सा पद्धतियों की खूबियों के समन्वय पर जोर रहे हैं। इस प्रणाली का लक्ष्य सभी नागरिकों को सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है, ताकि स्वास्थ्य सेवाओं

है। सभी चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्रतिद्वंदिता छोड़कर परस्पर समन्वय के साथ चिकित्सा कार्य करना होगा गोरखनाथ विश्वविद्यालय के एलोपैथ और आयुर्वेद चिकित्सा के विद्यार्थी भाग्यशाली हैं कि एक कैम्पस में साथ मिलकर कार्य कर में क्षेत्रीय, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को दूर किया जा सके। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ अरविन्द कुशवाह ने कहा कि चिकित्सक का मुख्य उद्देश्य रोगी को स्वस्थ करना है वो डॉक्टर पर भरोसा करके आता है। चिकित्सक को भी अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार बनना होगा। किसी एक पद्धति को श्रेष्ठ दूसरे को कम आंकने के बजाय परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करना होगा।

आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डॉ गिरिधर वेदांतम ने कहा कि जिस चिकित्सा पद्धति से जिस रोग का इलाज हो सकता है चिकित्सक को निस्संकोच अपनी और अपनी पद्धति की मर्यादा समझते हुए उस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक के पास भेजना चाहिए या मदद लेनी चाहिए। चिकित्सा कार्य में हमें परस्पर मिलजुल कर कार्य करना होगा। डॉ वेदांतम ने मुख्य वक्ता डॉ तोमर, सभी चिकित्सकों ,शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया कार्यक्रम में आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा गिरिधर वेदांतम, मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ कुशवाहा , डॉ शशिकांत,डॉ नवीन, डॉ दीपू मनोहर, डॉ विनम्रा शर्मा, डॉ साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ देवी और डॉ प्रिया एवम फार्मेसी ,एलोपैथ,और आयुर्वेद मेडिकल कालेज के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नियमित और अधिक आय सुनिश्चित करती है एकीकृत कृषि प्रणाली - डॉ. सिंह

पूर्वा टाइम्स समाचार।

गोरखपुर, 30 जनवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कृषि संकाय में गुरुवार कोअतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. सच्चिदानंद सिंह मौजूद रहे।

डॉ. सिंह ने अपने व्याख्यान में 'एकीकृत कृषि प्रणाली' के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना समय की मांग है। इससे किसानों को पूरे वर्ष नियमित और अधिक आय प्राप्त होना सुनिश्चित है। उन्होंने कहा कि एकीकृत कृषि प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल है और इससे मृदा को स्वस्थ बनाए रखते हुए अत्याधिक उत्पादन किया जा सकता है। प्रचलित कृषि प्रणाली में किसान एक मुख्य फसल पर आत्मनिर्भर रहता है लेकिन एकीकृत कृषि प्रणाली से किसानों को मुख्य फसल के अतिरिक्त आय के अन्य स्रोत सृजित करने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने की। इस अवसर पर डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. सरस्वती प्रेम कुमारी, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. नवनीत सिंह और कृषि संकाय के विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

नियमित और अधिक आय सुनिश्चित करती है एकीकृत कृषि प्रणाली: डॉ. सिंह

गोरखपुर। (स्पष्ट आवाज)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कृषि संकाय में गुरुवार कोअतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. सच्चिदानंद सिंह मौजूद रहे।

डॉ. सिंह ने अपने व्याख्यान में 'एकीकृत कृषि प्रणाली' के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना समय की मांग है। इससे किसानों को पूरे वर्ष नियमित और अधिक आय प्राप्त होना सुनिश्चित है। उन्होंने कहा कि एकीकृत कृषि प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल है और इससे मृदा को स्वस्थ बनाए

रखते हुए अत्याधिक उत्पादन किया जा सकता है। प्रचलित कृषि प्रणाली में किसान एक मुख्य फसल पर आत्मनिर्भर रहता है लेकिन एकीकृत कृषि प्रणाली से किसानों को मुख्य फसल के अतिरिक्त आय के अन्य स्रोत सृजित करने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने की। इस अवसर पर डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. सरस्वती प्रेम कुमारी, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. नवनीत सिंह और कृषि संकाय के विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

नियमित और अधिक आय सुनिश्चित करती है एकीकृत कृषि प्रणाली : डॉ. सिंह

महायोगी गोरखनाथ विवि के कृषि संकाय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन

कौटिल्य का भारत

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कृषि संकाय में गुरुवार कोअतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. सच्चिदानंद सिंह मौजूद रहे। डॉ. सिंह ने अपने व्याख्यान में 'एकीकृत कृषि प्रणाली' के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना समय की मांग है। इससे किसानों को पूरे वर्ष नियमित और अधिक आय प्राप्त होना सुनिश्चित है। उन्होंने कहा कि एकीकृत कृषि प्रणाली पर्यावरण के

अनुकूल है और इससे मृदा को स्वस्थ बनाए रखते हुए अत्याधिक उत्पादन किया जा सकता है। प्रचलित कृषि प्रणाली में किसान एक मुख्य फसल पर आत्मनिर्भर रहता है लेकिन एकीकृत कृषि प्रणाली से किसानों को मुख्य फसल के अतिरिक्त आय के अन्य स्रोत सृजित करने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे ने की। इस अवसर पर डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. सरस्वती प्रेम कुमारी, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. नवनीत सिंह और कृषि संकाय के विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

निर्माणाधीन परिसर

01 निमार्णाधीन क्रीडांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

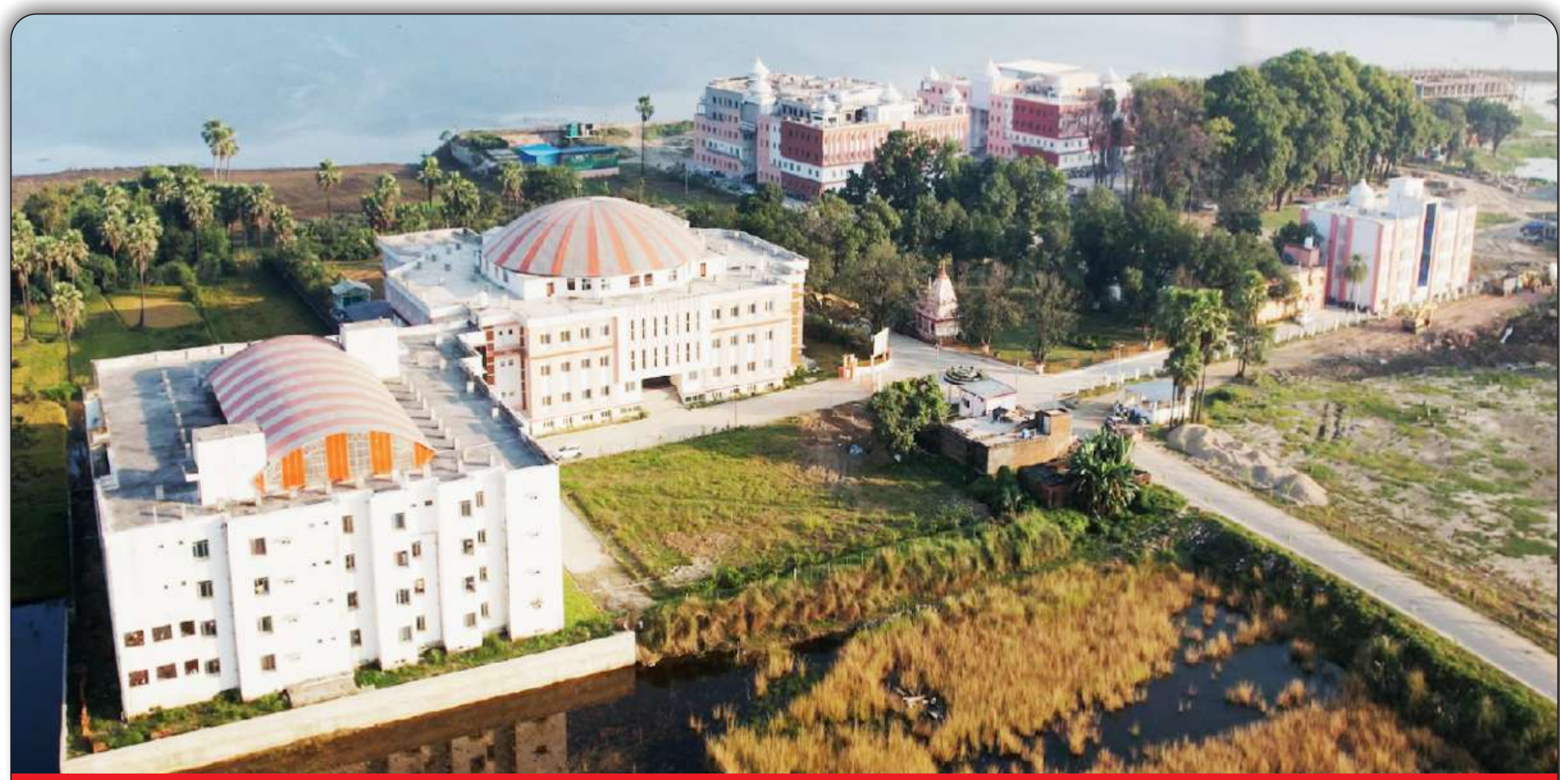

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

01 श्रीमती अनत लेविन

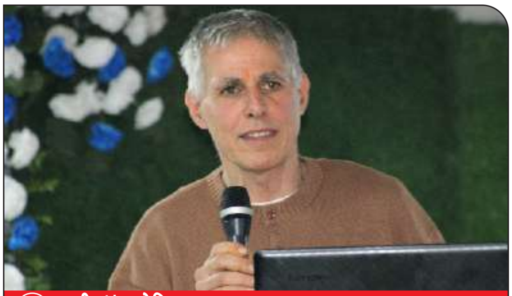
02 श्री गॉय लेविन

03 डॉ. वी.एन. जोशी

04 डॉ. मायाराम उनियाल

05 डॉ. संचित शर्मा

06 डॉ. तन्मय गोस्वामी

07 डॉ. टी.वी. रत्ना

08 प्रो. जी. एन. सिंह

09 प्रो. वी.एम सिंह

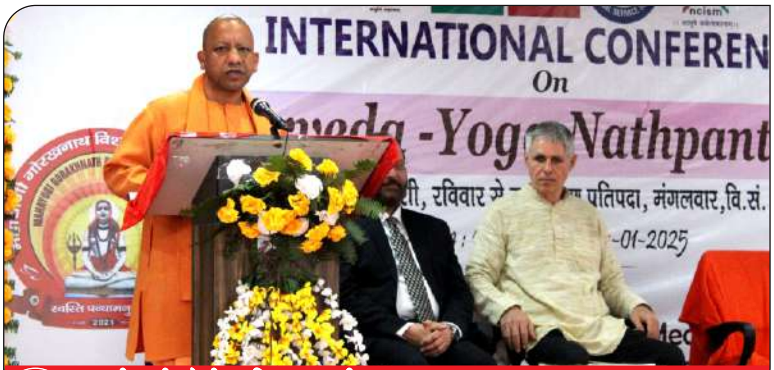
10 माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

11 पुस्तक विमोचन करते माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

12 पुस्तक विमोचन करते माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

13 पुस्तक विमोचन करते माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

14 डॉ. सुरिन्दर सिंह

15 डॉ. चेतन साहनी

16 प्रो. के. आर. सी. रेड्डी

17 डॉ. जंयत कुमार भदौरिया

18 डॉ. जी. एस. तोमर

19 डॉ. प्रह्लाद डी. सुब्बन्नवार

20 डॉ. ए. के. सिंह

21 कार्यपरिषद की बैठक

22 प्रो. के.के. पाण्डेय

23 संविधान की प्रति भेंट करते माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

24 प्रस्तुति देते एनसीसी कैडेट्स

25 महिला छात्रावास की नींव रखते माननीय कुलपति एवं कुलसचिव

26 गणतंत्र दिवस समारोह

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय